# ओम सदगुरू प्रसाद

Madhu Sehgal

## सतगुरु दादा लक्ष्मी भगवान की आकाशवाणी

- संत को शिकायत नहीं, असंत को शुकराने नहीं ।
- गुरु ने सत में टिकाया तो सतयुग में आ गये ।
- निष्काम कर्म हो जाता है, करना नहीं पड़ता है ।
- वैराग है तो त्यागभाव है त्यागभाव है तो आनंद है ।
- गुरु की महिमा से, गुरु की उस्तति से, स्थिति बनती है ।
- तन को मंदिर बनाये, मन कृष्ण मुरारी, काशी मथुरा क्या करेंगे ।
- जो तुम्हारा है, वही तुम्हारा है ।
- सत्य और सरलता जिज्ञासु का लक्षण है ।
- गुरु हो जाता है, करना नहीं पड़ता है, गुरु मतलब मन का दुश्मन ।
- ज्ञान मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, न कि माया ।

| नं. | वाणी | पेज नं. |
|---|---|---|
| १ | आनन्द | १ |
| २ | संकल्प और ख्याल | ३ |
| ३ | स्वभाव | ५ |
| ४ | ज्ञान के साधन | ७ |
| ५ | क्यों | ९ |
| ६ | निज-स्वरूप | ११ |
| ७ | मोत पर | १४ |
| ८ | अद्वेत मत पर | १७ |
| ९ | प्रेम की महिमा | १८ |
| १० | ZERO | १९ |
| ११ | सच्ची खबर | २० |
| १२ | युक्ति से मुक्ति | २१ |
| १३ | Knower | २२ |
| १४ | MIX कर्म | २९ |
| १५ | निश्चय | ३१ |
| १६ | परेशानी | ३७ |
| १७ | प्रेम | ४२ |
| १८ | TUNE पर | ४३ |
| १९ | तपस्या | ४५ |
| २० | HOW I FEEL | ४७ |
| २१ | एकरस | ४९ |
| २२ | वैराग | ५२ |
| २३ | शुक्राना | ५९ |
| २४ | अपने पर आशिक होना | ६१ |
| २५ | नम्रता | ६३ |
| २६ | पुरुषार्थ | ६५ |
| २७ | सत्गुर से प्रश्न-उत्तर | ६८ |
| २८ | पैगम्बर की तपस्या | ७२ |
| २९ | अपने आप को प्यार करना | ७५ |
| ३० | मरने मिटने पर | ७७ |
| ३१ | गुरु भक्ति | ७९ |

| | | |
|---|---|---|
| ३३ | प्रवृत्ति-निवृत्ति | [illegible] |
| ३४ | मूर्ति कैसे बने | ८३ |
| ३५ | अनन्य भक्ति | ८६ |
| ३६ | समता योग | ८८ |
| ३७ | अद्वैत मत | ९० |
| ३८ | आकाश अमृतवाणी | ९३ |
| ३९ | साक्षी भाव | ९९ |
| ४० | 98% Spritual - 2% Physical | १०१ |
| ४१ | इच्छा मात्रम् अविद्या | १०३ |
| ४२ | CAUSE & EFFECT | १०७ |
| ४३ | मौन | ११० |
| ४४ | हस्ती गुम करना | ११४ |
| ४५ | कर्म | ११६ |
| ४६ | त्याग | ११८ |
| ४७ | DRAWING | १२० |
| ४८ | मैं ( छोटी (i) ) | १२३ |
| ४९ | WIRELESS | १२७ |
| ५० | सत् का अभाव नहीं करो | १२९ |
| ५१ | ज्ञान में लीनता होवे | १३[illegible] |
| ५२ | निश्चय करो और कराओ | १३९ |
| ५३ | आत्म निश्चय वाला ज्ञानी है | १४२ |
| ५४ | क्रोध पे वाणी | १४५ |
| ५५ | अमृताम्बर वाणी | १४७ |
| ५६ | DIGESTION POWER | १४९ |
| ५७ | BORN GREAT | १५१ |
| ५८ | निर्वाण पद | १५७ |
| ५९ | स्थित प्रज्ञ के लक्षण - Balance में रहना | १६२ |
| ६० | मुक्ति | १६६ |
| ६१ | प्रारब्ध के चक्कर काटना | १७२ |
| ६२ | एकरस | १७८ |
| ६३ | आत्म - दृष्टि | [illegible] |
| | दादा भगवान का पत्र | [illegible] |
| | | [illegible] |

## ओम सतगुरू प्रसाद

### *'आनन्द'* [1]

शान्ति से विचार करोगे तो समझ में आएगा कि तुम्हारा सच्चा स्वरूप आनन्द ही है। यह जीव ईश्वर का अंश है। शीतलता जिस प्रकार पाणी का सहज स्वरूप है, उसी प्रकार तुम स्वंय आनन्द स्वरूप ही है। दुख सुख तुम्हारे वास्तविक स्वरूप नहीं है। पानी का स्वरूप तो शीतल है, अग्नि के सम्बन्ध के कारण पानी में गरमी भासती है, उसी प्रकार मन के सम्बन्ध से आत्म स्वरूप में सुख दुख भासता है। सुख दुख मन का धर्म है, आंत्मा सुखी भी नही, दुखी भी नहीं होता। आत्मा परमात्मा का अंश है। परमात्मा आनन्द स्वरूप है, आनन्द तुम्हारा सहज स्वरूप है। सुख दुख कई कारणों से आते हैं। सुख भी टिकता नहीं, दुख भी टिकता नहीं। सुख दुख दोनों भूल है। जीव स्वंय आनन्द स्वरूप है पर अज्ञान के कारण आनन्द ढुंढने बाहर जाता है। आनन्द किसी स्त्री में नहीं, पुरूष में नहीं, मोटर बंगले में नहीं, तुम्हारे अन्दर ही है - आनन्द बाहर नहीं है। संसार के पदार्थ आनन्द देते नहीं है, सुख दुख देते हैं। जो सुख देता है वो दुख भी देता है। जीव को सुख की भूख नहीं है, आनन्द की भूख है। उसे ऐसे आनन्द की इच्छा है जिससे उसकी शान्ति हमेशा कायम रहे। संसार के पदार्थों में यदि आनन्द है तो एक समान आनन्द दे। बंगला बहुत अच्छा है, परन्तु जिसे बुखार आता है, तो बहुत अच्छा बंगला उसे सुख देता है क्या? जब पेट में दर्द होता है तो बहुत अच्छा बंगला सुख देता है क्या? आनन्द संसार की किसी जड़ वस्तु में नहीं है। स्वइच्छित भोजन हो तो उसे आनन्द देता है, जिसे बुखार आया हो, तो इच्छित भोजन आनन्द क्यों नहीं देता? मन पसन्द भोजन हो और समाचार आया किसी के मरने का तो मन पसंद भोजन खाने को इच्छा क्यों नहीं होती? उस समय आनन्द कहाँ चला गया? थोड़ा विचार करो आनन्द उस भोजन में नहीं था, लेकिन उसमें उसने अपना आनंद डाला, जैसे कुत्ता हडी में मज़ा समझता है लेकिन वो अपना खून ही पीता है और समझता है मुझको हडी से मज़ा आ रहा है। संसार के किसी भी पदार्थ में,विषय में आनन्द नहीं है - विषय तो जड़ है। जड़ पदार्थ में जीव को जो कुछ भी आनन्द का आभास होता है, वह अन्दर रहनेवाले चेतन के कारण होता है। जो सुख इन्द्रियों और विषयों के संयोग से होता है वह आरम्भ में अम्रत जैसा होता है, परन्तु परिणाम में विष के समान है। आनन्द तो परमात्मा ही देते हैं; आनन्द तभी होता है

[illegible] साथ हमारा सम्बन्ध होता है। और ईश्वर का आनन्द खोजो, आनन्द अन्दर है, बाहर से नहीं आता है। संसार के पदार्थों का स्मिरण न हो तभी सच्चा आनन्द है। जभी ब्रह्म से सम्बंन्ध होता है तभी सच्चा आनन्द प्राप्त होता है। तुमको निंद्रा में आनन्द कौन देता है? बहुत बड़ा राजा भी सब बातों में सुखी है क्या? उसे रानी से आनन्द मिलता है। सब छोड़ कर जब वो सो जाता है तब उसे आनन्द मिलता है। रानी,राजाई,महल को जब वह भूल जाता है, तब उसे निंद्रा आती है, तब उसे आनन्द मिलता है। निंद्रा से एक पैसा भी मिलता नहीं, खाने को मिलता नहीं, मौज मस्ती मिलती नहीं, फिर भी तुमको निंद्रा में आनन्द क्यों आता है? निंद्रा में शांती कहाँ से मिलती है? मनुष्य को सब सुख मिले पर निंद्रा न आये तो वह पागल हो जाता है। बिस्तर पर पड़ने के बाद जिसको जगत याद आता है, उसको नींद नहीं आती है। कान को शब्द सुनाई दे तो नींद नहीं आती है। धीरे-धीरे जब वह सब भुला दे तो निंद्रा आती है। जब जगत को भुला देता है तब मन अन्तरमुख होता है। इन्द्रियां जब विषयों को छोड़ती है तभी चेतन परमात्मा के साथ सो जाती है। तुम्हारा आनन्द भी आनन्द ही है। सब कुछ छोड़ कर मनुष्य को सोने की इच्छा होती है। आनन्द भी संसार की जड़ वस्तुओं में नहीं है, आनन्द जगत में नहीं है। आनन्द जगत को भुलाने में है। जब तक मनुष्य को अन्य किसी से आनन्द मिलता है तब तक समझो दुख पीछे खड़ा है। तुम दूसरे से आनन्द लेने जाएँगे तो दुखी होंगे। निंद्रा में मन जैसा रहता है, ऐसा जाग्रत अवस्था में जहां जाओ वहां आनन्द ही है। दीपक में जब तक तेल है, तब तक वह जलता है, तेल खत्म हुआ तो दीपक शान्त। इसी प्रकार मन में संसार है तब तक मन भी चलता है, जलता है, परन्तु मन में संसार न रहे तो मन भी शान्त है।संसार को मन में से निकालना है, यही रूलानेवाला है।
परमात्मा के स्मिरण में तनमय होंगे तो मन से संसार बाहर हो जाएगा।तुम एक दम मन से संसार को निकालेंगे तो अधिक आनन्द आयेगा।पर मन से प्रभु स्मिरण करने का अभ्यास करो तो वह परमात्मा में तनमय होगा फिर मन से संसार निकल जाएगा। परमात्मा के चिन्तन से आनन्द मिलेगा। तुम परमात्मा के अंश हो, तुम जगत के नहीं, भगवान के हो। जीव ईश्वर का ही अंश है और उससे मिलने पर ही निजस्वरूप में आएगा जहाँ आनन्द ही आनन्द है।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

'संकल्प और ख्याल'

*[2]*

सब से पहले सुबह(2) शुरूआत हो ओम से तो ब्रहम शक्ति जागे हमेशा ओम ही चले ओम का ध्यान करना है। ओम स्वास(2) में आपे ही चलता है, चलाना नही पड़ता। स्वास उपर जाते है तो वो-ओ और स्वास जब नीचे आते है वो म है, बोलना नही पड़ता है, वो आपे ही चलता है। फिर धीरे-धीरे ओम भी खलास, ब्रहम ही हो जाएगा, ब्रहम ही ब्रहम, पूरण शांत हो जाएगा तो इतनी एकांत में बैठे, वो शांत होने का है। फिर एक भी ख्याल से करे खाली, कौन सी करे समाधी।

पहले जो NEGATIVE ख्याल आए कि मैं बीमार न हो जाए, मर न जाए, वो POSITIVE करो कि ऐसा न होगा। फिर THY WILL पर छोड़ो कि साई सोचे मैं क्यों सोचूं। THINKING IS NOT MY NATURE अशोक रहना मेरा धर्म है, फिर ख्यालों की NON STOP THOUGHT अपने आप कम हो जाती है। तू ख्याल का साखी दृष्टा बन जा, WHAT IS YOUR THOUGHT कहां से ख्याल आता है। मन हमेशा दूसरा देखता है, तो दूसरे का ही ख्याल आता है या अपने PAST का या FUTURE का तो बाहर का ही ख्याल आता है, उसे हरी अर्पित कर दो। THY WILL के DEEP THOUGHT में जाके मन को समझाओ, गुरू को लिख के दो या बताओ कि बार(2) (यह) ख्याल आता है, तो गुरू वचन देके जड़ से निकाले उस वासना को, ख्याल को जड़ से निकालना बहुत ज़रूरी है।

लगातार ओम की PRACTICE में बैठेंगे,तो माया अंदर नही आएगी, चाहे कितना भी शोर होवे। समझो एक हफता तुमने ओम का ध्यान किया, फिर उस बीच जो भी संकल्प आए बोलो मेरा की। कोई भी नाम रूप आए उस को खेंच के बाहर फेंको। मन तो कभी AMERICA कभी LONDON जाएगा, पर तुम बोलो ये भी क्यूं, यह इच्छा भी क्यूं, इस से क्या मिलेगा, एक ख्याल को नाकार करना है, एक SECOND भी सत्ता नहीं देना है। संकलप का ज़रा भी बटन ON किया तो कर्म बन जाएगा। संक्लप को DENY करना है, चाहे घुटन होवे, रोएं-पीटें, पर उसको सता नहीं देनी है। मन कहेगा बाहर चल, ये खा, वो कर, पर उसको सत्ता नहीं देंगे, इस की WILL पूरी नहीं करेंगे। FIGHT YOUR WILL

CONTD.2.

मनोरंजन ख्यालों में नही करने देंगे। मनवा तो चोदस फिरे यह तो सिमरन नाहीं। आप विसरजन होवे तो सिमरन कहिए सोई। अभी कोई THOUGHT रहे ही नही कोई किसी की बात लाए तो बोलो चुगल-चोरी मत करो। परचिंतन एक ही बात दूसरे से क्यों करते हैं, उसी से बात करके शंका मिटाओ, सब CLEAR करके माफी मांगके अद्वैत में बैठो। वो भली गाली दे, पर वो प्रेम से अपनी विक्षेपता विचिलता दूर करो, फिर प्रेम ही प्रेम है। ख्यालों को देखते रहेंगे तो नासूर हो जाएगा। कभी भी MISUNDERSTANDING को GROW नहीं करो, नहीं तो पोधे से पेड़ बन जाएगा! अपने ख्याल को देखो, वृति ओम में लगाओ,जो THOUGHT आए बोलो मेरे काम का नहीं है, उसको ऐसा GET-OUT करो, ऐसा जवाब दो,जो फिर सताए ही नहीं। ओम में वृति लगाओ, जो एक भी ख्याल न आए, आकाशवत खाली होवे।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

*'स्वभाव'*

*[3]*

अभी अपने स़्वभाव को देखो। अपने स्वभाव की हस्ती रखकर अपने स्वभाव से चलते हो। तुम स्वभाव के वश है या नहीं ? तुमको कोई कुछ भी कहे, तुम मुड़ेंगे नहीं तो झुड़ेंगे कैसे ? मैं RIGHT हूं ये कैसे समझते हैं ? मुड़ना ही मुड़ना है आत्मा में। तुम कहेंगे मैं क्या करूं, मेरा स्वभाव ऐसा है न, इसलिए मेरे स्वभाव से नहीं टकराओ। तुम फकीर हो या संत ? बात कैसे करते हो ? फकीर लोग बैठकर झगड़ा करते हैं। जैसे फकीर के यहां प्रसाद्ध बांटता है तो कोई बीच में आएगा तो उसको गुस्सा आएगा ये स्वभाव तुम्हारा निकम्मा है।

मैं ऐसा भी नहीं कहते कि स्वभाव को भाव से वस करो पर अपने को बहुत हलका रखो, ऐसा मुड़ जाओ, जो तुमको कोई बोले ऐसा नहीं ऐसा करो, तो भी बोलो ठीक है ठीक है। मैं और मेरा स्वभाव दो हो जाएं। ऐसा WEIGHTLESS हो जाएं जो कोई मेरे स्वभाव में शंका ही न रखे कि यह नहीं मुड़ेंगे। एक है RUBBER वो मुड़ जाएगा दूसरी है लकड़ी, वो नहीं मुड़ेगी। NYLON का मांझा सबसे FIT है। मेरे को कोई पुराना न देखे। पुराना स्वभाव, पुरानी आदतें जो हम मां बाप की तरफ से लेके आए हैं, वो स्वभाव मेरा कोई न देखे। पहले वाला स्वभाव एकदम उलटा हो जाए। सब तो हमारा स्वभाव देखते हैं। स्वभाव पुराना छोड़ते नहीं बाकी दुसरी बातें छोड़ते हैं, घरवालों का फर्ज़ धर्म छोड़ते हैं, पर पुराने स्वभाव को छोड़ो। अपने को मारना, अपनी हस्ती गंवाना नहीं छोड़ते हैं। कोई हमको आकर बोलता है कि भगवान ये लोग सत्-कर्म जल्दी छोड़ते हैं पर बद कर्म नहीं छोड़ते हैं बद कर्म छोड़ो।

**प्रेमी** :भगवान ये समझते थे कि स्वभाव को भाव से वस करो, पर आपने बोला हलके होकर रहो ?

**भगवान** : भाव से कितना वस करेंगे ? बात लम्बी हो जाएगी। ज्ञान ऐसा है कि एक कहे दूसरा माने। कोई कहता है RIGHT तरफ जाओ, हम कहेंगे हम नहीं जाएंगे। अभी समझो तुम्हारा स्वभाव तीखा है तो वो कैसे जाएगा कौन तुमको सुधारेगा। तभी मनुष्य अपने को जीतेगा जब ठंडा-२ बोलेगा,

Contd...2.

शांत करेगा अपने को। जिसका जो स्वभाव है जन्म से वो बिलकुल खराबहै। जभी वो दूसरे को सुनेगा, मुड़ेगा, तभी झुड़ेगा। अभी मैं इश्वरीय दुनिया में हूं, तू जीव की सृष्टि से नहीं छुटते हैं तो इश्वरीय सृष्टि में कैसे आऐंगे। हमेशा मुस्कराते रहो। जो अहंकार है कि मैं जानता हूं,अहंकार की वजह से मनुष्य में नम्रता नहीं है, ये बात संभालनी है कि यह EGO है जो हम लोग करते हैं। अपने को देखना है। हम अपने स्वभाव को हलका नहीं कर सकेंगे पर सब योगी जो हैं हमको सुई लगाएं।

प्रेमी : मन कहता है मैं होशियार हूं ?

भगवान : तुम देखो तुम्हारे से दूसरा होशियार है, फिर दूसरा फिर तीसरा, फिर चौथा तो अपने को होशियार कैसे समझें।

प्रेमी : मन झट से देख लेता है कि यह मेरे जैसा नहीं करेगा मेरे से कम है?

भगवान : कोई भी कम नहीं है, तुम कम है जो किसी को मानते नहीं है।

सब आत्मा है। तुम्हारी होशियारी की बुद्धि तुम्हें नीचे करेगी। मेरे को देखो मैं नहीं कह सकते हैं मैं ज्ञानी, मैं होशियार हूं। अभी तुमको ज्ञान स्वरूप सब सुना रहा है। इसलिए जब तक मेरा ज्ञानस्वरूप जागा नहीं तो मैं अपने को कुछ कैसे समझूं। कैसे कहें कि मैं होशियार हूं ? तुमको तो मेरे को देखकर हैरानी होनी चाहिए कि छोटे बच्चे भी गोद में आकर शांत होते हैं फिर उठने की नहीं करते . सब स्वभाव के गंद में हैं, बाहर से चमकी आंख से देखते हैं। मां के खून के बने हुए हैं, भगवान का खून नहीं लगा। मैं कहता है बड़ा नहीं मुड़े तो छोटा कहां से मुड़ेगा ? दूसरे को कम कैसे देखूं, सब मेरे मीठे प्यारे स्वरूप हैं। किसी को कम नहीं जानना, अगर अपना भला चाहते हो तो । साधसंगत से मिलकर अपने को जानो। मृग तृष्णा के जल में क्यों हैरान हो। कोई भी किस में अपना आप नहीं डालता हैं कि मैं क्या चाहता हूं। जो दूसरे को भी VIABRATION पहुंचे। तुम देह अध्यास में होगे तो दूसरे को क्या VIABRATION कैसे VIABRATION पहुंचेगे।

ओम

आम सतगुरू प्रसाद

*'ज्ञान के साधन'*

*[4]*

प्रेमी : गीता अध्याय २ का ६६ श्लोक - साधन रहित पुरूष को निश्चय नही है [निश्चय आत्मिक बुद्धि नहीं होती] ?

भगवान : साधन रहित माना आज मैं ने ज्ञान सुना फिर में ज्यों का त्यों माया में ENJOY करें और कोई साधना ना करें। साधना है निरइच्छा, अद्वैत, शांत, एकांतवासी। एकांत कोई मनुष्य पसंद ना करे तो उसे ज्ञान कभी नहीं होगा। अगर साधन नहीं करेंगे तो ऐसे ही ज्ञान के उसूल बोलते रहेंगे तो उधर ही खड़े होंगे। इस उस की बात में समय तुम गंवाते हैं, परचिंतन नहीं छोड़ा इतना ज्ञान सुनके तो ये क्या है ? मंदिर में लोग जाते हैं पर वहां परचिंतन करने जाते हैं।पाण कोई बात करे हम बोलें तेरा की ? तुम संकल्प ठीक रखो तो सब ठीक हो रहा है, ठीक ही होगा। तुम ही विकल्प करते हो ये ऐसा करता है, ये मेरी बात नहीं मानता है। तुम सब शिकायत से भरे पड़े हैं, पर हम किसकी शिकायत नहीं करते हैं। कोई कुछ भी करता है चाहे मेरा विकार देखे, मेरा की ? तुम बोलते हैं इसने ऐसा बोला। तू व्यवहार करेगा तो कोई कुछ बोलेगा। मेरा किसी के साथ व्यवहार नहीं है, तो कोई बात नहीं है, सबको ऐसा बोलो। तू अपना यज्ञ कर जनक जैसा बैठ, ज्योति जगेगी तो पतंगा आपे हो आयेंगे। मेरे लिये कोई पैदा ही नहीं हुआ है जो कोई कुछ करे। तुम सब पागल हैं।

प्रेमी : भगवान आज आपने ज्ञान के साधन अच्छी तरह खोले हैं ।

भगवान : ज्ञान के साधन हैं सर्व में पेखे भगवान, किसी से भी द्वैत नहीं द्वेष नहीं। परचिंतन नहीं किया घुटेला है। मेरे को अपने को साफ रखना है। उपदेश कैसे करते हैं, सफाई ही नहीं है। तुम मेरी बात समझो, मेरे लिये कोई क्यों बोलेगा ? कोई निन्दा करेगा, कम जास्ती बोलेगा, तो अच्छा है पाण मेरा पाप नाश होगा, नहीं तो पाप बढ़ेगा। कोई भी कुछ दे ही रहा है। देता है तो अच्छा है। तुम सारा दिन ऐसे रहते हैं तो ये मेरे लिये क्या बोलता है ? जैसे तू 100% ज्ञानी है। मेरे घर में कोई PASS नहीं है, CHALLENGE है। सच में ज्ञान उठायें तो सोना हो जाये। बाकी अधूरा ज्ञान LITTLE KNOWLEDGE ALWAYS DANGER ।

सत्संग करने वाले को सारा बंधन है तो तुम अपने कर्म लिखो। जब से ज्ञान लिया कौन सी रहनी सहनी दिखाई। अपने को ज्ञान दे रहे हैं,

CONTD.2

... उतरा होवे तो बताओ।
क़िसकी रहनी में ज्ञान उतरा है ? होशियारी है रहनी में, नहीं तो पढ़िया होवे गुनहगार.....। उसमें क्या हुआ, तुम चाहे अपनी सफाई दो। सब शास्त्र बोलते हैं पहले पॉच विषय (रस) छोड़ो पीछे बात करो। शब्द भी कौन सा बोलते हैं, तुम कैसे बेकार के ज्ञानी बने हैं। हमको दुनिया नहीं देखेगी कि उपदेश तो करते हैं चलते कैसा है ? रवाज़ी मनुष्य होके नहीं चलना है, ज्ञान में साधन जरूरी हैं। आत्मा हूं पर पॉच रस में कैसे रहता हूं? मायारहित कैसे होंगे ? फकीरी कैसे अख्तियार करेंगे? तुमको सब सच लगता है या मिथ्या लगता है ? क्या सच है ? किसको सब मिथ्या लगता है? ज्ञान तब होगा जब मेरी दृष्टि मिथ्या को मिथ्या करके देखे। बाकी मन किधर जायेगा ? सत् में आया तो बात ही खत्म। उल्टी बात नहीं करो तो दुनिया खत्म। धीरे२ थोड़ी होगा। तुम तो कभी भी जगत् की बात कर सकते हैं, तुमको ज्ञान नहीं आता है तो मैं द्वैत ना करूं, इच्छा ना करूं। शब्द कौन सा बोलें? तुम खुद तो TICKET से आये हो पर घरवालों को बिना TICKET के अंदर बिठाके लाये हो।

व्यंवहार में ज्ञान चाहिये। कौन सा ACTION करें ? गलत व्यंवहार का कितना TIME फल चलता है, जो कुछ किया है उसका फल
निकलेगा, ACTION का REACTION निकलता है, तुमको ही फल मिलेगा, TAX भरना पड़ेगा। कभी न चैन से सोये ..... । एक शब्द भी गलत बोला तो चैन से नहीं सो सकेगा । अपने को सुधारा तो सारा जगत् सुधर जायेगा, अपने को ही बनाने का है।

प्रेमी : कोई भी कर्म करके डर लगता है कर्म ना बने ?

भगवान : कर्म ना बने तो करेगा ही नहीं कर्म। जिससे कर्म बने वो कैसा करेगा ? नैमेतिक कर्म शरीर के धर्म है, वो सब होते हैं, बाकी जो लगना है मैं करता हूं वो छोड़ो।

प्रेमी : भगवान, पूरा मिथ्या नहीं लगता है ?

भगवान : सत् क्या है वो लेके आओ। कोई दृश्य सत् है तो वो लेके आओ। कौन सी चीज़ सत् है, कौन सा दृश्य सत् है। आज बाप है कल मर जायेगा तो मिथ्या हो गया। सत् होवे दृश्य तो लेकर आओ ।

ओम

प्रेमी : लिहाज़ क्यों होता है ?

भगवान : इच्छा के कारण - ये इच्छा ही लिहाज़ में लाती है । सूक्ष्म में इच्छा की बिल्ली पड़ी है । तुमको इतना पत्थर रखना पड़ेगा कि मैं आत्मा हूं तो डर लिहाज़ काहे का ? दुनिया रूठे पर मेरा भगवान न रूठे। आज समझो तुम किसी को NO करो तो वो जरूर रूठेगा पर तू तो जन्म मरण से छूटेगा ना । तुम अपना पुरूषार्थ करके जाग ।

प्रेमी :भगवान ने जगत क्यों बनाया ? और COVER में क्यों अटके हैं ?

भगवान:जगत तुम्हारे लिये है - मेरे लिये नहीं है। तुम ENJOY करता है जगत को, हम ENJOY करते हैं भगवान में । और COVER है परीक्षा के लिये । तुम संसार में फंसते हैं हम हंसते हैं । तू फंस मैं तुमको देख के हंसूं ।

प्रेमी : धीरज़ क्यों नहीं आता ?

भगवान : क्यों कि तुम WAIT AND SEE नहीं करते - धीरज में आपे ही खेल बन जाऐगा ।

प्रेमी : सपने क्यों आते हैं ?

भगवान : क्यों कि जो हम दिन को सत् करते हैं उधर का उधर नहीं करते हैं - जो बोल- चिन्तन अंदर रह जाता है ।

प्रेमी : सत्संग में रोज दो TIME नियम से जाते हैं पर उन्नति क्यों नहीं होती इतनी ?

भगवान : क्यों कि ज्ञान सुना पर रहणी न किया और PRACTICE न करे तो कोई डाक्टरी या वकालत पढ़े और PRACTICE न करे तो उसको KNOWLEDGE होगा ?

प्रेमी : मौन क्यों नहीं होती है ?

भगवान : भरम निकलेगा तो मौन सहज में होगी ! तुम अद्वैत में नहीं रहता है । खाली नही होता है, फिर मरता है । तुम्हारा किसी से मतलब नहीं है तो किसी का विकार क्यों देखता है ? आया अकेला जाएगा अकेला ।

प्रेमी : दुःख और मौत क्यों आते हैं ?

भगवान : क्यों कि कदम-कदम पर हम भगवान को नहीं देखते हैं ।

Contd..2

प्रेमी : मैं ब्रह्म स्वरूप होते हुए भी रसों में क्यों जाता हूं ?

भगवान : तुम्हारे अंदर जगत के रस पड़े हुए हैं, जो बार-बार तुमको अपनी तरफ खैंचते हैं । तू ब्रह्म स्वरूप है, पर प्रकृति को भी पूरी ताकत है जो अपने में खैंच लेती है । माया तो सूक्ष्म है ही पर ब्रह्म तो उससे भी अति सूक्ष्म है । अति सूक्ष्म को मन इन्द्रीयों से परे कर जान सकते हैं । तू मन के कहने में बार-बार आ जाता है और वो गिराने में देरी नहीं करता । तुमको किनारा क्यों नहीं पसंद है आराम के लिये ।

प्रमी : सब पापों की जड़ क्यों उगती है ?

भगवान : फल की इच्छा और अहंकार के कारण ।

प्रेमी : दुःखों और हालतों का सामना क्यों नहीं कर पाते ?

भगवान : क्यों कि तुम हिम्मत नहीं करते - किसी भी हालत दुःख से डरते हैं पर FACE करना है बोलो मेरे लिये कोई तकलीफ बनी ही नहीं है। बाहर की होशियारी को छोड़ अंदर की शक्ति को प्रगट करो। बाहर की शक्ति से हार जीत है, पर अंदर की शक्ति से जीत ही जीत है। जो अंदर की शक्ति को जगा के रखता है उसको अंदर से सच्ची निभर्यता आती है । जो अंदर की उन्नति में है उसको बाहर के दुःख लहर के समान हो जाऐंगे। तुम को सुख बुद्धि है तो दुख भी भासता है ।

प्रेमी : ज्ञान में आगे बढ़ने के लिये तन-मन-धन रूकावट क्यों डालते हैं?

भगवान : क्यों कि तुम आत्म उन्नति, आत्म विचार, आत्म जागृति में नहीं हैं। ब्रह्म ज्ञान को कोई प्यार करे तो आदि, व्यादि, उपादि तीनों रोग चले जाऐंगे।

प्रेमी : भगवान मान में खुशी और अपमान में रंज क्यों होता है ?

भगवान : क्यों कि तू कीर्ति चाहता है। कीर्ति किसकी होनी चाहिये? निराकार की या तू पांच तत्व के गंद के नालायक टोकरे की ?

प्रेमी : भीतर के भगवान का दर्शन क्यों नहीं होता ?

भगवान : क्यों कि तुमको आदत है VISIBLE देखने की । वो तो अति सूक्ष्म ते सूक्ष्म है। जभी अपने को मिटाऐगा - ज़र्रे-ज़र्रे अपने को मिटाऐगा - मैं ना, है ही भगवान । तो उसके दर्शन ज़रूर होगा । ये LESSON है मैं ना रहूं, रहे ही भगवान ।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

*'निज-स्वरूप'*

*[6]*

प्रेमी :निज स्वरूप चेतन स्वरूप कैसे है ?

भगवान : ज्ञान जो है ना वो प्रेम पैदा करता है। चेतन स्वरूप है जो प्राण आदिमी में है वो चेतन है बाकी जो है वो जड़ है। ना जड़ है आत्मा ना चेतन है, आत्मा तो साक्षी है, पर जो ज्ञान है वो प्रेम अन्दर पैदा करेगा। ज्ञान के सिवाय कोई समझो देह से प्यार करता है तो वो समझो मोह करेगा, प्यार नहीं करेगा। प्यार तभी होगा जभी हम REALISE करेंगे कि मोह वाले से क्या होगा? सबको प्यार क्यों न करें। मोह वाले से क्या मिलेगा ।

प्रेमी : भगवान निज स्वरूप क्या है ?

भगवान : निज स्वरूप है ब्रह्म का, परमात्मा का, उसमें माया MIX नहीं है। ये ईश्वर सृष्टि है ना, तो ईश्वर माया सहित है ना। माया भी है और जो ब्रह्म है वो अकेला है जो आत्मा है सो एक है। जो सबमें आत्मा देखे वो परमात्मा है।

प्रेमी : निज स्वरूप को जानने की चेष्टा कौन करता है ?

भगवान : वो तो है निज स्वरूप पर भूल से आ गया है देह में, फिर वो बोलता है कि मेरे को आनन्द कहाँ है, शांति कहाँ है, फिर निज स्वरूप को ही ढूढंता है। जो जीव भटक रहा है कई जन्मों से - कई जन्मों से भटकता था, अभी ये जन्म तुम्हारे लेखे। अभी इस जन्म में तुम्हारे को खोज है कि कौन सी चीज़ प्राप्त करें, जो हम एक रस रहें। एक रस आत्मा में रहते हैं, ब्रह्म में रहते हैं, सत् में रहते हैं। एक रस दुनिया में कोई नही रहता है। दुनिया में तीन गुण में सब बह जाते हैं। कभी सतो गुण, कभी तमो गुण, कभी रजो।कभी कैसा२, पर सत् को हम पकड़ेंगे तो कभी बह नही जायेंगे।

प्रेमी : जीव भाव ही खोजता है ?

भगवान : हाँ, जीव भाव। तौबा है, इतने जो भी दुख हैं, सब जीव भाव को लगते हैं। चाहे बीमारी है, चाहे मन का आलस है, चाहे राग-द्वेष है, चाहे द्वैत हैं, सब जीव भाव को पकड़ता है। जीव पता नही ऐसा है जो तू भी नहीं जान सकेगा। हमने जभी ज्ञान सुना तो स्थूल, कारण, सुक्ष्म का तीन

CONTD. 2.

शरीर है, तो स्थूल से हमारा नाता नहीं था, किससे भी। सुक्ष्म से मन का भी नाता छोड़ा, मेरा कोई है नहीं तो मैं मन किसमें रखूं पर .. CONSCIOUS में समझो इसको थकान हुई तो चिचलायेगा, तो हम जभी सत् में होगा तभी भूल पकड़ेगा। सत् में होगा तो UNCONSCIOUS को भी पकड़ेगा। नींद में सुनेंगे पर जभी हम FRESH हो जायेंगे तो चीचलाना छोड़ देगा। वो कई दिन से अभी छूट गया है। वो उस TIME मालूम पड़ता है कि अन्दर कौन चिचलाता है कि मैं थका हूं। हम जानते थे उस TIME.

**प्रेमी** : भगवान ये अच्छा लगा कि UNCONSCIOUS का चिचलाना छूट गया ?

**भगवान** :नही मालूम पड़ता था कि ये थकान काहे की है या कौन सी बात है जो ये अन्दर सुक्ष्म में सुक्ष्म ये चिंचलाना है। पर कई दिनों से कोई बात ही नही है। ऐसा SILENCE की नींद आती है जैसे मैं हूं ही नहीं। जैसे छोटा बच्चा सोता है ऐसे में भी सोते हैं। पर जभी इसको कुछ होता है तो वो ही ( जीव भाव ) कीकाराता है, ना कि मैं की कीकराता हूं। मैं अलग हूं ये समझना, जो सत् मैं हूं सो अलग हूं, उसको जानने वाला मैं हूं। शरीर को, मन को, UNCONSIOUS को मैं जानने वाला मैं हूं। पर जो वो जानने वाला सो जायेगा तो फिर कौन जानेगा, फिर भूल कौन पकड़ेगा? सत् में होगा तो बोलेगा - अभी मेरा मन कहाँ गया? मेरी छुट्टी के सिवाय क्यों गया? सब सत् से होगा। पर जे सत् में मैं नहीं हूं तो असत् मेरे को भुलाके कुएँ में डाल देगा। एक है सत्, दूसरा है असत्। जे सत् में मैं नहीं हूं तो असत् क्या करेगा। जैसे कोई भी हमारा PATIENT है, HOSPITAL जाता है, जल्दी ठीक होता है तो DOCTOR बोलता है कि इतना जल्दी कैसे ठीक हो गया। तो बोलता है - इसका मन जो है वो भगवान में है, तो ये देह से न्यारा है, देह में अटकते नहीं है तो बीमारी हट जाती है। इससे ( देह से ) जो CONNECTION नहीं रखेंगे तो जल्दी IMPROVEMENT हो जायेगी। जे सारा दिन पिंजरे में फँस जायेगा जैसे पक्षी पिंजरे में फँस गया है तो वो दुख करता आता है, ये हम बीमारी की बात करते हैं, पर राग-द्वेष हम अपनी WILL से छोड़ेंगे। आत्मा को, सत् को जानेगा तभी राग-द्वेष जायेगा, मोह ममता जायेगा कि किससे मोह करें, किससे नफरत करें, किससे प्यार करें, सब तो मैं हूं, सबके हृदय में मैं गाता हूं, मैं रहता हूं तो मैं किसमें मन रखूं।

CONTD.

ABC में मन रखके परेशान थोड़ी होगा। पर जे हम सत् में मन रखेगा तो सत् से हमको प्यार मिलेगा। सत् वाले को प्यार मिलेगा, असत् वाले को राग-द्वेष मिलेगा तो दुखी होके मरेगा। तीन शरीर का तू दृष्टा है, स्थूल, सुक्ष्म, कारण पर जे तू इसको नहीं ANALYSE करता है कि मैं अन्दर वाले को भी, शरीर को भी जानूं, मन को भी जानूं, मैं जाननेवाला हूं, तो मैं जानूं ना इसको।

प्रेमी : मैं जानने-वाला हूं तो निज स्वरूप को ही जानना है।

भगवान : मैं ने बोला जो जानता है, वो जो परेशान है, सो जायेगा जीव। मैं ने आज जीव नाम रखा है, मन नाम नही रखा है, क्यों कि जीव और जगत सत् है। अभी जो तुम्हारा बेटा है, जीव है ना, उधर तो तुम्हारा मन है तो क्यो ?

प्रेमी : सोता कौन है ? KNOWER तो सोता नहीं है ?

भगवान : जीव थोड़ी सोता है ? KNOWER नहीं सोता है पर जभी ये शरीर सोता है तो KNOWER उसके अंदर से सुजागी देता है कि अभी तू कहॉ है, सुजागी मिलती है। अज्ञानी का खाली जीव जागता है, उसका KNOWER नहीं जागता है, वो तो पता नहीं कहॉ गाडी लेकर जायेगा। तुम बताओ अभी अज्ञानी थे तो तूम्हारे पास मन था, तो मन कहॉ जाता था ?

प्रेमी :आज ये अच्छा लगा कि KNOWER अगर सुजाग है तो UNCONSCIOUS का चिचलाना भी असल लगता है।

भगवान : मज़ा आता है बहुत कि ये जानता है कि इसको तकलीफ है, जो थकान होती है, किसको होती है ? जानता फिर कौन है ?

प्रेमी : ज्ञान स्वरूप तो आत्मा है फिर कौन है जो सपना देखता है ?

भगवान : सपना देखता है जो जीव जानता है। सपना वो देखेगा क्योकि वो नामरूप में है। समझो हम नाम रूप में नहीं है तो हमको कोई संकल्प भी नही है। ऐसी गहरी नींद है जैसे हम ना सोते हैं, ना उठते हैं। वो गहरी नींद आनी चाहिए, जैसे दिन को भी जगत कहॉ है ?

*ओम*

[7]

जहाँ पर मौत हुई थी, भगवान एक दिन वहाँ चले और वाणी चली:-

ये तुम रोते हो ये भी चॅचलता है, भगवान निराकार हमको देख रहा है। हे अर्जुन अशोक रहना तेरा धर्म है। जो SCENE होनी है, वो हो ही जाती है, न होने वाली बात नहीं होती है। अपना ही मन दुश्मन है, मन पाप कराता है, चोरी, अहंकार कराता है, ये सब DUALITY का ज्ञान है और अपना मन पहले दुश्मन है। कोई बुरा नहीं है भले मन के वास्ते। हम समझो भलाई में है तो कोई बुरा नहीं है। जो कर्ता है सो भरता है, हम क्यों किसको बुरा देखें। जब तक देह अध्यास है, देह अध्यासी चुप चाप बैठे तो भी कुत्ता बिल्ला मारता है। जब तक मन को आसन मिले जैसे राजा को आसन चाहिए। कोई भी मनुष्य कर्म कर लेता है, पर जानता नहीं है कि क्या फल मिलेगा। देखो कृष्ण को तीर लगा, CHRIST का मौत कैसे हुआ ये क्यूं? भावी है। कोई कर्म का फल कभी मिलता है, कोई कर्म का फल कभी, पर LIFE CONTINUOUS है। अर्जुन को भगवान बोलते हैं कोई कर्म का कभी फल मिलता है, कोई कर्म का कभी, धरती धर्मक्षेत्र है। सब की JUDGEMENT होगी जब इतने पैगम्बर से नहीं टली। दुनिया किसको सहती नहीं है। लोग हर बात में-कुछ न कुछ बोलते हैं। तुम भी बोलेंगे इसने कुछ किया होगा, उसने कुछ किया होगा। कोई बुरा नहीं है.... हम लोग भलाई में रहेंगे तो कोई बुरा नहीं है। कोई बुराई करेगा फिर भी तो पछताएगा। उसको भी आराम नहीं आएगा। सब को जाने का है दुनिया से, सब को मरने का है। तुम जो द्वेत द्वेष करते हैं तो दुख तो सब के लिए है। एक आदिमी को किसीने छुरा लगाया तो आदिमी अभी तक उलझा पड़ा है। दुश्मनी की नहीं और POLICE आयी नहीं। POLICE आयी तो फिर बोला किसी की भी भूल नहीं है, हम हमेशा थोड़ी रहेंगे। सो सुखिया जिस नाम आधार। हम जुदा किसको भी नहीं देखेंगे कि ये बुरा है या अच्छा है? नीच है या उंच हैं ? सब भगवान का रूप है, प्रेम देविता अँदर हैं पर प्रेम देवता तभी प्रगट होता है जब गुरू कोई वचन बोले तो हमारा हृदय भीगे। सब जगह सतसंग में स्त्रीयां जास्ती पुरूष कम आते हैं। ये क्यों? सारे दिन में सबको ही कोई न कोई टाईम भगवान को देना ही चाहिए।

CONTD.. 2.

DUALITY में कर्म करेंगे तो फल ज़रूर मिलेगा। धरती कर्मक्षेत्र है। आसमान में कर्म नहीं है। अर्जुन पूछता है 'न चाहिते हुए भी कर्म क्यों हो जाता है' तो अँदर UNCONCIOUS में इच्छा पड़ी हुई है वो निकल आती है। आत्मा सुतह सिद्ध है। हम दिल से सब को माफ कर दे तो भगवान भी माफ कर देगा।

दृष्टांत :- नौकर को सेठ ने माफ नहीं किया तो नौकर ने कहा तो खुदा तेरे को माफ कैसे करेगा? जब सुख देखते हैं तो नशे में आ जाते हैं, पर सदा न संग सहेलियाँ सदा न काला कैस ....... । ईश्वरी सुख कभी नाश नहीं होता। सब टाईम ईश्वर को हाज़िर नाज़िर देखो, भगवान तेरी रज़ा में राज़ी रहेंगे। भगवान से जो हुकुम आया है सिर माथे पर रखेंगे, नहीं तो दुखी होना पड़ेगा। आज से किसको भी बुरा नहीं देखना। बुरा देखेंगे तो विकार होगा, समदृष्टि करके देखो, उससे कोई भी विकार नहीं होगा। सबको RETURN TICKET है कोई किधर उतड़ता है, कोई किधर। तुम वासना से पकड़ते हैं तो प्राणी को कष्ट देते हैं। हमको हमेशा भगवान की रज़ा में राज़ी रहना है। तुम हमेशा अपनी अच्छाई रखना। दूसरे को GUILTY नहीं समझना। धरती है कुरूक्षेत्र। कोई लड़ाई में मर जाता है, कोई बीमारी में, कोई कैसे। RETURN TICKET सबको है। संतोष में तुम नहीं रहते हैं, सुख में सुखी, दुख में दुखी, वो इन्सान नहीं है। हम इस धरती पर ही रहते हैं, इसलिए सन्यासी किनारा करके जाते हैं। हमारा सन्यास ग्रहस्थ में है। हमेशा के लिए कुछ नहीं है। एक सत् परमात्मा है। अँदर में शुद्ध मन रखना। REVENGE IS A DAYS' PLEASURE, FORGIVENESS IS EVERLASTING HAPPINESS. आप समझो बदला लेने की करेंगे, उसको क्या होगा। REVENGE लेंगे वो आपको जुदा फल मिलेगा। दुश्मन माना अपना मन दुश्मन, इस जीव का ना कोई मित्र है ना कोई दुश्मन। अपना ही तू मित्र है, अपना ही दुश्मन है जे तू आत्मा में नहीं है। तुम OWNSELF आत्मा ही देखो तो दुख सुख रहेगा ही नहीं। जगत है मिथ्या ILLUSION, मन का भर्म। आप दूसरे को दुश्मन मानते हैं, हम अपने मन को ही दुश्मन मानते हैं।

CONTD.3.

प्रेमी : भगवान INNOCENT लोगों को भगवान क्यों लेके जाता है ? ऐसा क्यों होता है ?

भगवान :: INNOCENT कौन है ? मनुष्य कब निर्दोष है ? कौन सा मनुष्य है जो निर्दोष है ? PERFECT कौन है ? पत्थर लगाने वालों को CHRIST ने कहा जो निर्दोष होवे वो ही इस दोषी स्त्री को पत्थर लगाए। तो सबके हाथ नीचे हो गए। CHRIST तो पाण खुद निर्दोष था तो भी उसके उपर इतनी तकलीफ क्यों आयी। महात्मा गाँधी को गोली लगाई, मनसूर को फाँसी पर चड़ाया, स्वामी दयानंद को शीशा कूटके पिलाया, कृष्ण को तीर लगा, सब पैगम्बर को इतनी तकलीफ आयी। मनुष्य तो भूलेला है ही।

प्रेमी : भगवान सबको RETURN TICKET है पर पाँच भाई SAME STATION दिल्ली की TICKET लेते हैं एक भाई को कोई ज़बरदस्ती AHEMDABAD पर उठाके जाते हैं, तो चार को तो दुख होगा ?

भगवान : वो भी हर एक के कर्म का फल अपना है। पाँच भाई है और पाँचों की अपनी WILL है, पाँचों के अपने २ कर्म हैं। अपनी २ बात है। माउ जणींदी पुटड़ा, भाग न डींदी वंडु। सब बच्चे की अपनी २ बात है। तुम भाई कैसे बने ? जब सब एक ही परम पिता परमात्मा से आए हैं।

प्रेमी :भगवान कैसे मालूम पड़े ४ वर्ष की लड़की का MURDER होवे तो उसने कर्म कीया ?

भगवान : हमने पहले ही बोला LIFE CONTINUOUS है। कोई कर्म का फल कभी, कोई का कभी मिलता है। घास तीन दिन में, पपीता तीन साल में, आम पाँच साल में। आप हर चीज़ को बोलो एक महीने में बन जाए तो बनेगी ? सब चीज़ का समय है। ऐसे कर्म का फल भी कोई किस जन्म में, कोई किस जन्म में मिलता है।

तीन भजन चले (1) तेरे हाथ में ...... (2) मन तू जोत स्वरूप है ...... (3) ओम है जीवन ......

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

*'अद्वैत मत पर'*

*[8]*

तुम अपने को मिटाते नहीं जो आत्मा की नेष्ठा होवे। दूसरे आदमी को मिटाते हैं कि ये मेरे से सीधा चले। COUNT करो कितने आदमी को बोलेंगे मेरे से सीधा चलो। मैली ऑख तुम्हारी है मैं तुम्हारे लिए सारे जग को सीधा बना दूं, पर ऑख तुम्हारी मैली रहेगी। AN EVIL EYE SEE NO GOD. तुमको अपनी ऑख का OPERATION कराना है। कोई भी मेरे को किसी योगी की निन्दा शिकायत करेगा मैं उसको वर श्राप दे देगा, मैं उसको ज़हर देके मार देगा कि इतनी मेरी महनत लिया है। दादा भगवान रोज़ बोलते हैं दूसरा देखे दूसरे का बेटा। किसको भी तुम सुधार नहीं सकेंगे। अगर अपने को वस नहीं करेगा तो दूसरे को क्या वस करेंगे। बेशर्म है जो दूसरे की बात करते हैं। तुम अपने को वस कर सकते हैं ? कभी भी अपनी ही गलती को देखकर उसको बनाओ। दूसरा भले बोले कि मेरे विकार बताओ। तुम बोलो ४०४ विकार मेरे में है तो ४०५ कैसे तुम्हारा देखूं? कस तो मेरे को लगेगी ना? मैं अपनी मौत कैसे करूं? अपने को कस कौन लगायेगा? हमेशा ऑख बाहर देखती है, पर तीजा नेत्र खोलो तो अपने में देखेगा। चम ही ऑख बाहर देखती है। ज्ञान नेत्र खोल। पहिंजे दिल में पसु रघुवीर तूं। हमेशा गुरू को देखो कैसे खाता है, देखता है, चलता है। सतगुरू का आदर्श हमेशा सामने रखो वो ही तुम्हारे लिए आदर्श है, बाकी सारी दुनिया DEAD BODY है। DEAD है तो तुम क्या देखेंगे? मुर्दे के क्रिया कर्म देखते हैं क्या, जो जगत के आदिमी को जीता देखते हैं। आत्म जागृति वाला सुजाग है। आगे हम मुर्दा थे,गुरू ने आकर प्राण डाला, बोला मरके जीना। गुरू ने बोला मैं प्राण डालता हूं, तू EGO नहीं करना। २४ घंटा गुरू में मन होवे तो दूसरा दिखेगा ही नहीं। गुरू के इशारे को समझेंगे तो और से बात नहीं करनी पड़ेगी। गुरू का इशारा नहीं समझते हैं तो इस उस से बात करते हैं। सब SPARROW हैं।

तुम सारा दिन देखो एकरस हैं। ये PRACTICE करो। दुख में तुम्हारी शकल दुखी हो जाती है, सुख में सुखी हो जाती है। एक संत है जो सबको हॅसाता है, ये ART है, दूसरा संत इतना शान्त, मौन में बैठता है, इतना गॅभीर जो उसका शरीर नहीं हिलता है। वाणी चलाता है तो उसका नाखून भी नहीं हिलता है,ऐसी स्थिति बनाओ,ऐसी स्थिरता बनाओ।

*ओम*

## 'प्रेम की महिमा'

[9]

प्रेम की महिमा सबने कही पर जानी और पहचानी नहीं। क्यूं कि मोह और प्रेम MIX है तो प्रेम की खबर नहीं है, प्रेम बोलते किसको है? जो निष्काम प्रेम है वो चलता चले पर टूटेगा नहीं। तुमने निष्काम प्रेम किया होगा तो स्वार्थ नहीं होगा, जे स्वार्थ नहीं होगा तो तुम्हारे से कोई छुट भी नहीं सकेगा। बिना स्वार्थ के कोई भी फल की इच्छा रहित सच्चा प्रेम है।

आज तुम्हारा बेटा DOCTOR है, तुम बोलेंगे अच्छा हुआ - वकील है तो बोलेंगे काम आयेगा - पर जो DEGREE है, तो तुच्छ है। पर प्रेम से पैसा देकर बाहर से काम लेगा। सब अपने से शुरू करना है और अपने से पूछना है। तुमको अन्दर ही जवाब मिलेगा। स्वार्थ में किसी से भी बुराई होगी। जभी मोह के दलदल से निकलेगा, तभी उसकी बुद्धि साफ होगी और सर्व में आत्मा देखकर प्रेम हो जायेगा ।

हम अगर भगवान के होंगे तो कोई नहीं बोलेगा, ये फर्ज करो, ये DUTY करो, वो हमको समझते हैं कि ये गुरू के हैं जभी हमको भगवान का समझते हैं तो हमारा फर्ज DUTY खुद ही छुड़ायेंगे, कहेंगे ना गुरू के पास जा, क्यों कि देखते हैं भगवान से इसका कितना प्यार है।

कब तक हम आधा भगवान की तरफ, आधा दुनिया की तरफ रहेंगे, तो दोनो तरफ जूते खाने पड़ेंगे। दूसरे को नहीं कहो मुझ को इज्ज़त नहीं दिया, जो खुद इज्ज़त के लायक है उसको इज्ज़त मिली पड़ी है। उसको ये इच्छा नहीं होगी कि ये मुझको आगे बढ़ाये। तुम्हारा त्याग, तुम्हारा वैराग तुमको आगे बढ़ायेगा।

तुम किसको भी सिखाने वाले मत बनो, इसमें हमेशा द्वैत बना रहेगा। कोई भी देखो तो समझो मैं अपने को प्यार कर रहा हूं ।

ओम

## 'ZERO'

[10]

बड़ी से बड़ी हालत को हम ZERO बना सकते हैं ख्याल से। कुछ मन ने देखा नहीं और ख्याल किया नहीं, ये कैसा होगा जैसे कि ये मनुष्य खुद ही करनेवाला है। गदाराम समझता है जैसे मेरे को ही करना है, पर उससे होता नहीं है। PAINTER जब बोलेगा मैं नहीं करता हूं तो उसकी PAINTING अच्छी होगी। बनके रहेगा तो कुछ नहीं होगा। एक भरे हुए कटोरे में तिनका डालो या फूल डालो तो पानी नहीं गिरेगा, ऐसे WEIGHTLESS होकर हमको दुनिया में रहने का है।

मेरे से ये पाण और उत्तम करेगा ऐसा सॅकल्प हम क्यों नहीं करते हैं। मेरे जैसा ये नहीं करेगा ये क्यों बोलते हैं। मनुष्य समझता है मेरे जैसा न हुआ न होगा। माना मैं हो दुनिया में अकल वाला हूं, काबिल हूं, होशियार हूं। मैं से सारी खराबी है, हानी है। मैं से COURT है, HOSPITAL है। भगवान उसको दिखाता है तू नहीं भी होगा तो भी दुनिया चलती रहेगी।

जो भी तीर्थ यात्रा बनी है वो इसलिए है कि थोड़ी दूर हटके देखना चाहिए कि मेरे सिवाय क्या-२ होता है। नहीं तो मनुष्य वहां ही विष्टा का कीड़ा होके रहता है। सब ग्रहस्थ में विष्टा का कीड़ा है। तो वहॉ से भी थोड़ा हटेगा तो पाण दूसरे को POWER मिलेगा कि हम भी बन सकते हैं, हम भी कर सकते हैं। तू बना तो कोई बड़ी बात नहीं है, पर तेरे से कोई नहीं बना तो तेरी अकल क्या काम की। मन से सब ठगी निकालो, तुम समझते हैं मैं हो दुनिया में हूं, मेरी ही दुनिया है। छोटा कहीं पर भी आज तक बड़ा नहीं बन सका है क्यों कि बड़ा अपने को छोटा नहीं बनाता है। सब को अपनी आत्मा देखो कि सब मेरे से ही हो रहा है। भगवान सब जगह है। भगवान VISIABLE नहीं है तो भी हर हृदय में विराजमान है। तुमको आदत है VISIBLE देखने की. वो अति सूक्ष्म से सूक्ष्म है तभी तो भगवान का दर्शन आज तक नहीं हुआ है। जो अपने को मिटाएगा उसको ज़रूर दर्शन होगा। ज़र्रे-२ अपने को मिटाने का ही सबक है। जहॉ-जहॉ मन हस्ती दिखाए, वहॉ-वहॉ उसको झूठा करें। फिर सब देखे ये ज़र्रे-२ कैसे मिटता है। मैं ना रहूं, रहे ही भगवान ।

*ओम*

'सच्ची खबर '

[11]

हमको सच्ची खबर कौन सी रखनी है ? अपने से पूछो ? दूसरे के विकार देखते हैं, दूसरे के विकार COUNT किया तो अपनी खबर भूल जाएगी। जैसे बालॉकी पंडित है उसको अपनी खबर नहीं है। ब्रह्म देखा सबमें, पर अपने को ब्रह्म नहीं देखा, तो उसको झुकना पड़ा राजा को। तुमको किधर भी झुकना ना पड़े। ऐसा झुको गुरू को, ऐसा मिटो जो कहॉ भी मार खानी ना पड़े। सबसे जीता तू अपने से हारा। क्यों बोला है मन जीते जग जीत। अपने मन पर जीत पहनी नहीं, गया दूसरे का मरज़ देखने। ये CANCER की बीमारी है। तुमको लानत है जीने को, खाने को, पीने को, उठने को, बैठने को, जो अपने को प्यार किया नहीं, दूसरे को JUDGE करते हैं। जब भूलीं तूं आप को तब भासे संसार। दस पागल नहाने को गये, अपने को नहीं गिना तो जाके हाय हाय किया, 'अरे एक डूब गया'२ वो था खुद। खुदी गई तो खुद भया। आपे समर्थ। OWNSELF। आप नचीने भ्रम में भूले ।

## 'युक्ति से मुक्ति'

[12]

ूसरे के
ो। जैसे
ो ब्रह्म
। ऐसा
पने से
दूसरे
ं को,
DCE
अपने
ो गई

युक्ति से मुक्ति है, पर वो कौनसी युक्ति है? केवल आत्मा बोलने की नहीं है, पर शरीर को भी देखना है, शरीर में कौनसी कमी है, वो कमी भी पूरी करनी है। शरीर के साथ भी दया न करो। EXCESS में कोई भी वस्तू की ज़रूरत नहीं है। न EMOTION की न रोष की। नेमतिक क्रिया है वो REALITY में देखना है कि सुबह से लेकर कौन सा प्यार रखा, किस की भलाई सोची? या अपने ही प्रोग्राम बनाए कि मैं ऐसा सुख लूंगा, ऐसा करूंगा।घरवाले भी सोचेंगे कि ये अपने ही सुख में है।किसी की अधिक COMPANY करेंगे तो अधिक मोह बढ़ेगा।जहॉ जहॉ मन अधिक प्रीति रखे वहॉ से उसको मोड़ना। EXCESS में लेके गए तो मन कहॉ भी लेके जायेगा। सारे दिन में कौनसी सुख बुद्धि रखूं, मेरे को सबकी भलाई के लिए रचा गया है, न कि अपने सुख के लिये रचा गया है। पर तुमको सब रस याद है। मैं माया पति होकर सब रस लूंगा! ज्ञानी सब रस लेकर भी कोई रस नही लेता है। पर अन्दर में CONTROL में है। किसी भी बात की इच्छा नहीं करता है,तो प्रभू आपे ही उसकी सम्भाल करता है। कहते हैं निष्कामी भगत का मेरे उपर भार है। सकामी को थोड़ा बहुत देकर दो चार खिलौने देकर खुश करता हूं। जैसे मॉ बच्चे को खिलौने देकर खुद घूमकर आती है,ऐसे ही भगवान सकामी को दो चार खिलौना देकर गुम हो जाता है। निष्कामी के लिये भगवान को सारा दिन चिंता है, कि ये अपना नहीं सोचता है, तो मेरे को उसके लिये सोचना है। हम हद के अँदर अपने को रखते हैं पर बेहद का मज़ा नहीं लेते हैं। मैं सृष्टि का FAMILY MEMBER होके रहूं तो मुझे सष्टि अँश मात्र लगती है क्यूं कि जहॉ देखता हूं पांच तत्व हैं, तो एक ही अँश हो गया।

गीता भी कहती है कि अँशमात्र सृष्टि में सुख है।FULL आनन्द को छोड़के हम टके टके के सुख में पड़े हैं। उसको तृप्ति कभी नहीं आएगी, कई जन्म में भी नही आएगी। इच्छा से सुख लेना माना अपने को बेच देना। बिका हुआ मनुष्य गुलाम होता है।हमको शरीर रूपी जेल से निकलना है तो विशालता का मज़ा मिलेगा। सब दुनिया में कस खा कर मरते हैं।संतन माखन खाइया छाछ पीय संसार। तुमको पुरूषार्थ नही करना है तो छाछ पीयेंगे।संसार कुछ देता भी नहीं है फिर भी हम पकड़ने की कोशिश करते हैं।पूरी माया खडी है पकड़ने के लिये इसीलिये सुजागी रखो।

*ओम*

## 'Knower'

Knower को जानना है तो हमको जानना है - सच क्या है झूठ क्या है ? है ही Knower, तू नहीं है। अपनी हस्ति गुम करो जब हस्ति गुम करेंगे तब ज्ञानस्वरूप जागेगा। जे हस्ति वाला है तो Knower सोया पड़ा है। जिसका Knower सोया पडा है वो क्या करेगा किसका Knower सुजाग है, वही प्रेम कर सकेगा, सबको खिलायेगा,पिलायेगा, घुमायेगा । इधर खास Knower की बात है सबको वही चलाता है।

पहले Total माया को पीछे करना है। सबसे पहले Knower को जानना है - यह मेरे को जाने - मैं इसको जानूं । यह तो होगा ही - मरने तक घरवाले होंगे - जगतवाले होंगे - पर दुखों में - बीमारी में तुम को ज्ञानस्वरूप भूल जायेगा - बाकी सब याद रहेगा। ऐसे आत्मा परमात्मा तुमको नहीं दिखाई देगा - Knower नहीं जागेगा - ज्ञानस्वरूप भूला तो शरीर कैसे चलेगा ? पहले जगत पीछे करो। जगत को कितना धुएँ के पहाड़ जैसे पीछे किया है - मिथ्या जाना है कि अभी कोई अच्छा बुरा नहीं है - रागद्वेष नहीं है - तू मैं नहीं है - सब भेद गया, एक Knower अकेला है। बाकी द्वैत है तो दूसरा दिखेगा, पर Oneness, Sameness में रहेंगे तो सबसे अनोखा प्यार है। मैं खुद आशिक हूं, खुद माशूक हूं । ज्ञानस्वरूप मेरे साथ है। मेरे अंश में सृष्टि है - सारी सृष्टि मेरे हाथ में है भाग्य भी मेरे हाथ में है । सारी सृष्टि को मैं हाथ में लेकर चलाता हूं । जगत है ही नहीं दुख है ही नहीं - तो दुःख कहां से लेकर आया ? ये हुआ जगत मेरे अंश में है।एक बात जरूर देखना है - जग में सच्चा दोस्त नहीं मिलेगा - है ही नहीं, भगवान के सिवाय। तेरा किसी से संग नहीं है - इसीलिए तू शुद है - Knower ही तुमको चलाता है, खिलाता है।मूल तत्व को पकरना चाहिए । कौनसी हालत है जो हमेशा रहेगी ? दुख-सुख रहेगा ही रहेगा - उस पर एक मिनट भी गंवाना बेकार है। ये संसार भी हमेशा होगा ही होगा। मेरे (भगवान जो अन्दर है) से तो कोई मिला ही नहीं है-पर मन से मिलते हो। बोलो मैं निराकार हूं-आदि से हूं ही हूं। ज्ञान-स्वरूप को जानना है। दुनिया तुम्हारा घर पूछती है, पर ज्ञानस्वरूप को कोई नही पूछेगा। अपनी प्रलय करनी है-मेरे को कुछ नहीं चाहिये। अपना आप हम को भूल जाये। तुम सब सच बोलो तुमने Knower को पकड़ा है -

CONTD.2

ज्ञानस्वरूप में चुप है-शांत है-अन्दरवाला Knower सच्चा है, जो बोलता है तू गलत है-तुम्हारी ये कमी है-पर हम अपनी कमी कैसे Count करते हैं? जभी केवल सच है तो बाकी कुछ नहीं है। सब सपने के पदार्थ है। गुरू का ज्ञान अमृत ज्ञान है। जो दूसरा भी अमृत हो जाये। गुरू के शब्द के विचार में सुख है। Knower को पकड़ने के सिवाय शांति नहीं आयेगी। आत्म घाती महापापी। सब आत्मा को भूल के देह में कितना प्रपंच करते हैं ?

हम अपने कर्मों से भगवान से दूर हैं-पर भगवान ने किसी को दूर नहीं किया। न करता है न करेगा, बल्कि भगवान तो दोनों बाहें फैलाकर खड़े हैं कि आओ ।

हमको मना है किसी के उपर दया करना-दया करेंगे तो Wrong कर्म हो जायेंगे। न जाने भगवान ने कौन सा फल रचा है? ये मनुष्य की कहानी है। पर मनुष्य अपने को जानता नही है-और दोष ही देता है। सदा ही प्रकृति में खिलखिलाकर रहना चाहिए। जिससे पुरूष परमात्मा देखे कि ये दुख-सुख में कितना सम है। हमको दुख सुख आते हैं आजमाने के लिए-ना कि मिटाने के लिए। दुख सुख से डरो नहीं। हिम्मत रखकर चलेंगे तो पहाड़ जैसा दुख भी छोटा हो जायेगा। दुख, सुखों की सुन्दरता है सुखों को वारकर फेंक दो दुखों पर। कितने भी दुख आये अपने को कमजोर ना करो। कमजोरी मौत है-अन्दर वाले की सुनो-कितना धीरज में है-शान्त है-मौन है-केवल इशारा करता है।

Life में कभी खफा नहीं होना-जिन्दगी में कभी खफा नहीं होना। अपने को बोलो-ये गुजर जायेगा-आखिर सब गुजर जायेगा।

जो सचमुच में आत्माकार है वो दूसरों के लिए कुछ नहीं कहेगा, कहेगा वह भी 'मैं ही तो हूं '।अपनी निन्दा कैसे करूं? कम ज्यादा क्यों देखें सब मेरे ही रूप है। हम राग द्वेष में जलते मरते हैं। दूध की परवाह करते हैं कि जल ना जाये फट ना जाये-पर खून की परवाह नही करते हैं कि ये जल ना जाये। काहे के लिये क्रोध करते हैं ? दूध तो मिल जायेगा,पर खून जल जायेगा तो कैसे मिलेगा? आज से बोलो हम क्रोध नहीं करेंगे। न जलना, न मरना, अपने को सरल रखना है। भगवान गीता में कहते हैं 'एक ही आत्मा सबमें देखो '। तो तू लड़नेवाला कौन है ? किससे लड़ता है ?

CONTD.3.

सब तू ही तो है। आज से बोलो-एक से भी मेरा द्वेष नहीं है तो मेरा प्रेम ही है। कोई भी होवे-अपना पराया-पड़ौसी, चोर चण्डाल मेरा द्वेष नही है सबसे प्रेम है - प्रेम प्रेम प्रेम ।

एक और बोलता है सब भगवान का है-पर जानते नही है। सारी सृष्टि का मालिक मैं हूं। यह ज्ञान है शांत स्वरूप का। ज्ञान है रोशनी ज्ञान है जल, ज्ञान है नाव इसमें चढने का है - मौत नहीं करने का है। सबसे प्रेम रखें और किसी की पाई को हाथ ना लगायें ।

तू बोल मैं निराकार से पैदा हुआ हूं। मेरे को पैदा करनेवाला कोई पैदा ही नही हुआ है, पर जब तू ऐसा पहचानेगा-जितना-२ पहचानेगा, उतना-२ सुजाग होगा। ये पहचानने की बात है। वो ही सिमरेगा जो जानेगा। जे अपने को न जाना तो बाहर क्या जाना? अन्दर से बहती है प्रेम धारा।

ताकत अन्दर है पर प्रघट करनी चाहिये। खाली देह अध्यास किया। डिब्बे में बन्द करके रखा है। तू Already आत्मा है तो इच्छा क्या करेगा? सौदा अपने से है - उससे Knower से तुम Promise करो-और सच्चा रहो। पहले तुम अपने को गुम करना, तो वो जागे। तुमको मालुम नही है कि तुम्हारे अन्दर वो ज्योति जागी पड़ी है। पर तू देह अध्यास में उसको ढककर बैठा है,अन्दर की ज्योति जागे ना। तेरे अन्दर वो ही ज्योति है-वो ही निराकार है-वो ही सत्य है-वो ही सत्य का सत्य है। ऐसे तू अपने से बात कर,तो देखो तुम्हारे से रोशिनी आती है या नहीं? तुम अपनी खोज करो, अपनी खोज में रहो,आखिर इस देह के पिंजरे में कब तक रहेगा? अपने KNOWER को जगाओ-उसको पकड़के आगे चलो। ज्ञानस्वरूप क्यां सुजागी देता है? वह NO करे तो NO कर, YES करे तो YES कर। हम इतने अन्धकार में हैं जो उसको सुनते नहीं। ज्ञान (गुरू) का मान कर, जिससे ज्ञानस्वरूप पकड़ में आये।

हम अपनी नेष्टा (OM) में हैं तो किसी को सुनेंगे भी नहीं-अपने अनुभव से चलें-जे अन्दर आवाज़ आये निराकार की उससे चलें। ज्ञान का ध्यान रहे, जो ज्ञान का ध्यान करता है वो उससे थकता नही पर लीन हो जाता है।

CONTD. 4.

**जो गुरू को अच्छी तरह जानते हैं, वो गुरू के हर इशारे को जानते हैं** और एकदम चल पड़ता है कि भगवान इस बात पर राजी होगा,मैं ऐसे चलूं। जितना हम REALISE करें, अपना विकार देखकर अनुभव करेगा, फिर वह विकार ना होगा। अतः ज्ञान का ही ध्यान करें।

जो तू आत्मा में प्रश्न करेगा, तो अन्दर में ही जवाब मिलेगा। खुद ही जान WHO AM I ना दुख है, ना सुख है, ना मान ना अपमान, न ONE न TWO ना हम ना तुम दफतर ही गुम। तुम अपनी आत्मा जानेगा, ज्ञान स्वरूप, ब्रह्म का मालूम पड़ेगा, तो लगेगा कि कितना शान्त हूं, KNOW THE TRUTH, जो सच को जानेगा तो झूठ से FREE हो जायेगा। जो है वह अन्दर ही है- जो अन्दर है, वह सर्वव्यापक है, निराकार है, OMNI PRESENT है।

तुम पल में दुखी होता है, पल में सुखी होता है, सारा दिन चिड़ चिड़ करता है, तो भगवान राजी होगा क्या? भगवान तो अन्दर में देखता है कि ये थोड़े में दुखी होता है, थोड़े में सुखी होता हे। जो अन्दर बाहर सच है उसको सच मिलता है। ईमानदार कोई वने तो देखो निराकार क्या करता है? तुम भगवान को SURRENDER करेंगे तो वो तुमको प्रेरणा देगा। जैसे ॲग ॲग में सुजागी होवे कि गुरू यह कार्य कैसे करते हैं? एक ही धर्म है उसका KNOWER पालन करना। पुरा पालन करेंगे तो ठीक रहेगा। तुम्हारा जीवन अलौकिक हो जायेगा, लोक सृष्टि से न्यारा।

कभी-२ अजीब लगता है कि इतने अच्छे-२ लोग कहाँ फँस जाते हैं? प्रायः देखा गया है कि ग्रहस्थी के घर बर्बाद होते हैं। अभी मैं कैसे चलूं? जन्म लिया है तो जरूर उठेगा, बैठेगा, खायेगा, पियेगा, गिरेगा। हमको रास्ता लेने का है- जो खुद के मरने से दुनिया ही मर जाए। कर्म किसके साथ करें? हमारे सब कर्म ईश्वर अर्पण है। ईश्वर ईश्वर से कुछ करता नहीं है। हम दो है तो कर्म है - पर जब खुद ही खुद है तो कर्म नहीं है। भले दो दिखने में आये पर आत्मा एक ही है। उसकी सुजागी में रहो, - नहीं तो कोई ना कोई तुम्हारे उपर वार करता जायेगा और गुलाम करेगा।

जब हम ईश्वर सृष्टि में रहते हैं तो जीव सृष्टि वालों से रिश्ता क्यों रखें। जो प्यारी में प्यारी चीज़ सामने आये उससे मन निकाल के रखना है। मालिक देखो कौन है ? उसको पकड़ना है।

हरि ओम में गुम हो जाओ कि अन्तवेले ओम जपने ही ज़रूरत ही ना पड़े ।
ज्ञान स्वरूप में ऐसे पक्के हो जाओ कि तुम्हारे ORDER के बिना कुछ भी ना हो ।

ब्रह्म माया रहित है। सत्ता मात्र है, उसकी हस्ति है। तू चोरी कर- ठगी कर- ब्रह्म कुछ नहीं बोलेगा, पर आत्मा तुमको बोलेगी कि चोरी क्यों किया? क्या ज़रूरत थी? बराबर आत्मा है तो प्रेरणा आयेगी। ब्रह्म शान्त है- कोई हलचल नहीं है। जैसे सूरज उपर खड़ा है तो कौनसा कर्म करता है,कभी बोलता है क्या कि मैंने रोशिनी दिया-हस्ति उसकी है। आत्मा है तो प्रेरणा आती है। घरवालों के लिये ख्याल आता है- सॅकल्प विकल्प आता है। प्रेरणा आये कि कौन-२ सी ज़रूरत है, जो ख्यालों से खाली हो जाये। प्रेरणा आते-२ उसको खाली करेगा। अन्दर है कोई जो बोलता है।

जीव में है, अपने को न जाना तो गधाराम है। तुम कितने नीचे हैं अगर जीव में है। पर आत्मा में कितना उपर है। असली जो निराकार है वह है। जीव है तो जगत है। दुख सुख, हानि लाभ सब है। आत्माकार को हानि लाभ है नहीं उसको कुछ भी नहीं होता। हानि लाभ किसका होगा - क्या चाहिए हमको। चाहिए उसको जिसने ये स्वरूप धारण किया है, वो बन्धा हुआ है, इसको चलाने के लिए। अभी भी वो ही देता है, वो ही चलाता है वो ही खिलाता है, पर तुम्हारे को विश्वास नहीं है कि ये चोला किसने धारण किया है? जो हाज़िरॉ हुज़ूर ठाकूर है उसको तू झूठ समझता है, जो सत् है। पर जो अभी है, अभी नहीं है उस जीवपने को तुम पकड़के बैठे हैं। तो उससे क्या हुआ? मेरी आत्मा सबकी आत्मा सबके हृदय में मैं गाता हूं। कोई भी हृदय खाली नहीं है। सबके हृदय मे भगवान बसते हैं, पर कोई जानता नहीं है- कोई नहीं जानता है 'प्रभू ते भूलियॉ तो व्यापन सभी रोग'। तुम गहराई में जाओ। तू न बनेगा तो प्रकृति उपर नीचे होते रहेगी - फिर दुख सुख भी प्रकृति से मिलेगा। पर प्रकृति में जो पुरूष है उसे चुना तो वह तुम्हारा हो गया। फिर अन्दर देखो कितने शान्त हैं कि दुनिया में कुछ भी होवे हमें मालूम नहीं है, मेरे राज्य में कुछ होता ही नहीं है - ईश्वरीय राज्य है।

CONTD.6.

आत्मबोध हो जाये तो बाहर ढूंढने की ज़रूरत ही नहीं है- अन्दर में गोता लगायें। तुम अपना उद्धार करने जाओ ना कि रास्ते मे बैठ जाओ कि ये सुधर जाये वो सुधर जाये । सब सुधर जायेंगे पर तुम नहीं सुधरोगे। सारी बात अपनी REALISE करने की है। आत्माकार है कि आगे भी मैं था अभी मैं हूं, इसके आगे भी मैं रहूंगा। प्राण छोड़ने के बाद भी मैं ही रहूंगा। इतनी तुमको नेष्ठा होवे, जो कभी नहीं आये कि मैं पैदा हुआ या मरूंगा। जन्मना मरना अज्ञानी की आदत है,ब्रह्मज्ञानी सब भुलाकर बैठा है।

अन्दर में जो कारीगर है वो ही प्रेरणा देता है कि मैं वो ही हूं, जो हूं ही हूं, तुम वो हो,जो है ही नहीं - YOU ARE NOT । मैं अरूप तुम स्वरूप को ज्ञान देने के लिए अनेकों नामरूप (अवतार) में आता हूं,लेकिन तुम अरूप को छोड़कर स्वरूप में फॅस जाते हैं।

कितना आश्चर्यवित है- खुद ही हुआ है-खुद ही पैदाकरे-खुद ही खिलाये,फिर खुद ही सुलाये- इधर देखो उपदृष्टा हुआ बोलते है। हो मैं का रोग है, पर आत्माकार को कौनसा अहॅकार है ? वो जहॉ तहॉ देखता है 'मैं ही हूं' आत्मा में आया तो मुक्त हो गया। देह की मथानी नहीं लगाओ, पर आत्मा में सत्त को मथ के निकालो, उसे मथेंगे तो अपने निज स्वरूप का आभास होगा। OWN का आनन्द लेना है- उसको ही पकड़ना है। परम ब्रह्म को अनुभूति ही परमानन्द है-शरीर झूठा रूप वह असली रूप है।

" आदम को खुदा मत कहो आदम खुदा नहीं है,
खुदा के नूर से मगर आदम जुदा नहीं है "

है ही भगवान। हरि का सेवक हरि जेसा। आज हम इतने मरें, मिटें, झुकें, गुरू प्रेम में कि जो खुशबू भी निकले तो हरि प्रेम ही निकले। इसलिए गुरू मिलते ही शास्त्र वासना की अपेक्षा गुरू में ध्यान लगायें।" सर्व धर्मान् परितज्य, माम् एकम् शरणम् व्रज" एक बार यह मज़ा चखें, पीछे कोई बात ही नहीं। ना निचे, ना उपर कोई सबक ही नहीं।

गुरू की महिमा भी क्या करें, वो हमेशा याद है, जिसने उसे जगाया। पहले यह मालूम नहीं था कि सबमें साईं है। साधू-चोर को एक पहचानो। नामरूप नाश है, आत्मा प्रकाश हो। मन बुद्धि जब चले तो समझो ये दीवार है - दीवार कहीं जाती है या कुछ कहती है ? इसलिए क्या इससे टकराकर सिर फोड़ेंगे ? निश्चय करना है - ज्ञान में रहकर चलेंगे, गुरू वचन में रहेंगे।

CONTD.7.

सतगुरू ने बताया कि सची FREEDOM है - ज़ब गुरू आज्ञा में पूरा-२ चलें। गुरू का इशारा समझकर उससे चलना है। तुम देखो मेरा गुरू किससे खुश होगा? गलत कर्म तभी होगा जभी गुरू को हाज़िर-नाज़िर नहीं देखेंगे। निराकार तो ठीक है पर गुरू ने जगाया वो याद नहीं है तो तू चोर है। उसकी आज्ञा में ही यह शरीर चले तो निशचिन्त है। यही असली FREEDOM है। CARE FREE- FREE FROM ALL WORIES.

हर बात में अपने KNOWER से पूछो - वह तुमको चलाये। जो भगवान सतगुरू अन्दर है तो वो ही चलाता है। अन्दर ही KNOWER को सुजाग करो । गुरू का वचन अपना करो। यह नहीं कि गुरू तुम्हें उठाये बिठाये निष्काम कराये।

अगर हृदय से जगत निकल गया है तो भगवान ही बैठेगा। दिल दिलबर की जगह है, उसके सिवाय कोई नहीं बैठ सकता है। अन्दर वाले को जगाकर रखो। दीपक जलाया है अन्दर तो अन्धेरा रहता नहीं है। वह है, मैं नहीं हूं - यही दीपक जलाना है।

नूर देखेंगे तो प्रेम के सिवाय रह नहीं सकेंगे। सर्वत्र मेरा ही नूर है। INVISIBLE देखा तो सबसे नूर ही दिखता है। सब तो एक ही परमात्मा है। ब्रह्म की सत्ता एक सत्त है। जब देह अध्यास छोड़ा तो एक रस होंगे।

दर्शन साधू का तो साहेब आवे याद - साधू लिबास में नहीं है- साधू माना तो सदैव प्रसन्नचित है- शान्त है- मौन है- गॅभीर है- एक रस है- वही वह है जो अन्दर है।

*ओम*

*प्रथम प्रणाम उस सतगुरू को जिनके मुख से पवित्र अमृत वचनों की गॅगा प्रवाहित हो रही है- और हम प्रेमी अपनी प्यास को शान्त करने में तत्पर हैं।*

*ओम*

## 'MIX कर्म '

[14]

o MIX कर्म घरवालों के साथ कर लेते हैं। तुम्हारी बहू तुमसे खुश है? घर में कोई कहे तेरा शब्द कठोर है तो मैं CHANGE हो जाउं। जो ये बोलता है तो ज़रूर ही मेरे में गलती होगी।

o जड़ चेतन की आशिष होवे। जड़ माना पलंग, CHAIR, पेड़, पत्थर आदि तिनका भी, सब के आशिष की ज़रूरत है। एक तिनके से भी द्वेष है तो उड़के ऑख में जाएगा। जड़ जूता भी ठीक न रखा तो ठोकर खाकर तुम ही गिरेंगे, तो आशिष कहॉ हुई ?

o मेरी माया, मेरा गलत वचन, मेरा शरीर, मन, मेरा कर्म, मेरी आदत, मेरे स्वभाव संस्कार से कोई दुखी न होवे।

o एक-एक स्वास की कीमत करें,फिज़ूल न जाए स्वास। धर्मराजा का धर्मराज तू है। सतगुरू भगवान को गलती बताएँ। भगवान करूणा दिखाते हैं। शरीर भोगेगा। तू अजर अमर है। धर्मराजा का धर्मराज तू आत्मा है।

o फुल स्पंज तृप्त तब है जब न मान न अपमान, न दुख न सुख, निर्ईच्छा है, कोई कहे ऐसे कर तो किया।

प्रेमी :भगवान मैं घर में पूछते हैं कि मैं ने राईट बोला क्या ?

भगवान :सब आदमी सब में संस्कार है, इच्छा है, मोह भी है, MISER भी होते हैं, अपने अन्दर खोज करें।

o जहॉ शादी हुई,वहॉ तेरी प्रालब्ध है,वहॉ तुझे रहना है,किसी का पक्ष लेके MIX कर्म ना कर।बेटा हो या बेटी, MIX कर्म बनाते हो।बेटा कहता है पड़ोसी के बेटे ने मुझे मारा,मुझे ये बोला और हम बेटे का पक्ष लेके कहेंगे पड़ोसी का बेटा गंदा है,तू उससे बात न कर।तो उसके मन में द्वेत डाल रहे हो।उसे नही कहते कि तुम्हें उससे प्यार करना है,या पड़ोसी के बेटे की बात हम नहीं सुनेंगे कि मेरे बेटे के लिए वो क्या कह रहा है। वो भी सुने। दोनो तरफ का न पूछके अपने वाले की बात सुना तो MIX कर्म हुआ। पति का पक्ष लेंगे,जो उसके OPPOSITE हैं उसके मन में तेरे पति के लिए क्या बात है ये नहीं जानेंगे, ये MIX कर्म हुआ। ये है MIX कर्म लड़की ससुराल से मैके आयेगी, वो कहेगी मेरी सास ऐसी, मेरी ननंद ऐसी, देवर ऐसा है तो मॉ बेटी का पक्ष लेकर कहेगी मेरी बेटी दुख पा रही है, ये लोग ऐसे हैं, ये है MIX कर्म। बेटी को नहीं कहेंगे मैं तेरी बात सुनके नही बोलूंगी।

CONTD.2.

मैं दोनों तरफ की बात सुनूंगी। उनकी भी संनेंगे तब बोलूंगी। जो लड़की ये बात सुनके मेरी सास ऐसी, मेरी ननंद ऐसी ये बोलना बंद कर दे। बेटी को नहीं बोलेंगे तेरी प्रालब्ध उधर है, तुम्हें उधर ही FIT होना है। तुम्हें उनसे ही निभाना है। बाप भी क्या करता है, मैं पैसेवाला हूं, मैं रखूंगा तुमको, तो बेटी-को वासना किधर जाएगी ? बेटी का और उसके आदमी का नुकसान किया, तो MIX कर्म किया। उसे मुड़ना, झुकना, नम्रता करना सिखाया नहीं।

घर में सब तृप्त होवे, नोकर से लेके सब। सबकी आशिष से हम उपर उठेंगे। कोई हमसे दुखी नाराज़ है, हम उनको ठीक करेंगे प्यार से, विचार की लेन देन करके। उन्होंने हमें सुधरने को कहा तो हम अपने को CHANGE करेंगे। नम्रता, झुकना ( अहंकार न करना ) प्यार करना। अपनी कमी हो तो निकाल दो।

जगत में सब होता है। किसके घर में एकदम चार मर जाते हैं, घर जल जाता है, ऐसा भी होता है प्रकृति में। वो है CHANGEABLE । आत्मा में कुछ होता ही नहीं है। प्रकृति से FREE हो, गलती मेरी न हो ये सुजागी रखनी है। मेरा कर्म ना बने। दुख ना करो, मुस्कराओ, मन को पहले दिखाओ सब मरे पड़े हैं। आत्मा शाश्वत है। ये शरीर, बेटा-आदमी सब शरीर मरने वाले हैं, तो पहले ही तुम विचार से मरे हुए देखो। पहले ही तुम अपने को सब गाली देके बैठो, फिर कोई बोले तो तुमको मान-अपमान लगेगा ही नहीं। सब से गलती होती है, उधर गलती ना देखें। उधर निराकार सत्ता देखेंगे तो गलती किसकी देखेंगे ही नहीं। अपनी कदर किया तो दूसरे की कदर करेंगे। तुम तृप्त हैं, तुम्हारी प्रति किसकी शिकायत नहीं है, उधर भी तृप्त करेंगे, अपने को प्यार करें। राग-द्वेष किया तो प्यार कहाँ किया? शरीर को ठीक खाना पीना दें, EMOTION नहीं, मन शांत शांत, शांत। भगवान के वाणी से ये सतसंग में हमें अपनी भूल मालूम पड़ती है कि इधर मेरे से भूल हुई, मेरे में द्वेत है, राग भी है। राग है वहाँ ही संबंध में द्वेष भी होता है। हम इच्छा रखते हैं ये ये करें, ना किया तो द्वेष हो जाता है। अपना पराया मेरे में है, इधर अहंकार से बोला और सतसंग में अपनी भूल मालूम ही नहीं पडती है।

*ओम*

*'निश्चय'*

*[15]*

निश्चय है मान न मान तू है भगवान। निश्चय है मैं देह नहीं मैं आत्मा हूं,है ही भगवान। आत्मा अलग है,देह अलग है। जो यह निश्चय नहीं करेगा,वो जन्मर धक्का खायेगा,नर्क भोगेगा। निश्चय की ही जय है।

गुरू के सामने निश्चय कर लो,फिर जो मर्जी आए करो-घूमो, फिरो। गुरू तुम्हें निश्चय करायेगा,फिर खाली का खाली। जैसे सागर है,वैसे तत्वज्ञानी खाली है फिर दूसरों को निश्चय कराओ,फिर अन्दर ज्ञान का भी ख्याल न चले। गुरू का ऋण भी उतारना है।

आत्मा निश्चय के स्विाय कोई भी कर्म तुमसे RIGHT नहीं होगा कृष्ण अर्जुन को कैसे दिखाता है कि ये सब मरे पड़े हैं। माना एक तो RETURN TICKET है,जो पैदा हुआ है वो अवश्य मरेगा। दूसरा ये कोई नहीं जानता कि मैं अजर अमर हूं। इस बात का शौंक हो, आत्म बोध का। जैसे आत्मा से देखे "मै ही तो हूं" देह से ना बोलो 'मैं ही तो हूं'।इधर निश्चय करना है।जितना कोई निश्चय करेगा,उतना ही फल पायेगा। जभी है ही सत्य तो झूठ की मिलावट क्यों करे? तू मैं किससे करें,यह सब जगत है।

कृष्ण भगवान निराकार के निश्चय से बोलते हैं कि मैं ही तो हूं। वो भी अर्जुन के लिये,नहीं तो बोलने की ज़रूरत ही नहीं है। पर श्रदा वालों के लिये सब बोलना पड़ता है। आत्म निश्चय के सिवाय तुमसे भूल ही होगी,अभूल कभी ना होगे। भूला -मन्द बुद्धि की निशानी है। उत्तम बुद्धि वाला गुरू को जल्दी पकड़ता है। मन्द बुद्धि वाले को व्यंवहार बहुत अच्छा लगता है, परमार्थ नहीं। उसमे सफाई सच्चाई नहीं है, पर जिसे(उत्तम बुद्धि) परमार्थ अच्छा लगता है,उसे व्यंवहार नहीं।

तो पुरूषार्थ है-निश्काम में अंधा होके रहें। जैसी प्रीत हराम में वैसी हरि में हो। हराम में लोग घर बार लुटा देते हैं-जुआ में,शराब में,ऐसा कौन निष्कामी है जो बोले 'मैं पीछेवालों के लिए क्य रखूं? चला तो जाउंगा सृष्टि से। उसे आगे पीछे याद ही नहीं है कि क्या होगा? इसीलिए गुरू निश्चय की बात ज़र्रे-ज़र्रे करता है कि जब तू आत्मा है, तो सर्व आत्मा ही है, आत्मा पश्यन्ति आत्मा। यदि देह है तो आगेवाला भी देह है। पर जब मैं ने जीवभाव को CROSS किया कि संसार में कोई ना बचे जो मुझे देह करके देखे। कोई हमारे पास आये जो ह। उसे निश्चय करायें कि तू ने

मुझ क्या देखा? तू कौन मैं कौन? किसी का मेरी देह में मन है तो GET OUT करेंगे,देह देखेंगे तो चमार है। जो मेरे पास आये उसे भगवान दिखायेंगे। उसे निर्णय करायेंगे कि तू कौन है ? उसे निश्चय करायेंगे, तो उसे भी नेष्ठा होगी कि यह सत्य है।

यहॉ वो ही श्रद्धा वाला आए जो साधना में रहे,बुद्धि न चलाये, गुरू वाक्यम सत्यम् करे,मौन रहे। TIME PASS के लिए नहीं। भले एक दो आये पर जगत और व्यंवहार की बात नहीं करेंगे।मेरे से तो यहॉ अब निमित्त मात्र कुछ भी होता है,न कोई दृश्य भासता है, न कोई कर्म होता है। कर्म तो दो में होता है। न कोई इच्छा है न मनोरंजन है न दूसरा ही दिखता है। शरीर की क्रिया की तरह और भी क्रिया हो जाती है। बात भी करते हैं तो जैसे अपने से, दूसरा है ही नहीं।TOTAL मन और वाणी खलास। अपने से सच्चा रहके भलाई करो। एक बार ही पक्का निश्चय कर लो! तू निष्कामी है तो तुम से भी निष्कामी बनेंगे,क्योंकि जिससे अपनी देह नही छूटती वो दूसरे को क्या ज्ञान देगा।

ज्ञानी को तो अज्ञानी दिखता ही नहीं। एक भी अज्ञानी जो मुझे नज़र आए तो सारा जगत मेरे अंदर है। वासनावाले को तत्वज्ञान निश्चय नही होगा। यह सब रंग रूप भगवान ने ही धारण किये हैं। कोई भी वासना है तो देह से नहीं उठेगा। चाहे सब कुछ भी होवे पर मुझे कुछ नही चाहिए मैं FULL तृप्त हूं,भरपूर हूं। ऐसा RECORD OF REGARD रखो। घटर वासी देखो हृदय में कौन? उपर नीचे,अंदर बाहर कौन है? सब में रोशनी नूर किसका है? जो तू है सो मैं हूं। गुरू करे आप समान। ONENESS, SAMENESS, OWNSELF निश्चय में पक्का। जो आज मेरे गुरू के सामने कोई निश्चय नहीं करेगा,तो कभी कर सकेगा? [illegible] रखो तो जल्दी तैयार हो जायेगा। नीच बुद्धि खुद ही देखो,मेरा स्वभाव संस्कार क्या है ? गुरूमुख होके फिर एक भी भूल करनी पाप है। गुरू से निभाना, पूरा रहना, पूरी मर्यादा करना, नहीं तो बेगाना हो जायेगा। टहनी एक बार पेड़ से टूट गई तो जुड़ नहीं सकती। गुरू ने बताया कि सारा जगत अवतार है। भगवान से यह दिव्य दृष्टि लेनी है। निराकार ही निराकार है। कोई बुरा नही भले मन के वास्ते। ज्ञान की, प्यार की मस्ती और नशे में रहना है। दृष्टि मिले तो उसे पक्का रखो, खो नहीं देना। इतना ज्ञान सुनके भी तुम निश्चय नहीं करेंगे तो मेरे दिल में तुम्हारे लिए क्यों

जगह हो? जो ज्ञान उतारता है अपनी LIFE में उसके लिए प्यार होता है। ज्ञान में एकदम उल्टे हो जाओ।दुनिया देखे कि इसने माया को लात मारके कितनी जल्दी इतनी IMPROVEMENT कर ली है। CHANGE नहीं आयी तो खुद ही शर्म आये कि गुरू की इतनी मेहनत लेते हो। रवाजी विद्यार्थी को भी जो एक ही CLASS में तीन साल FAIL होता है तो SCHOOL, COLLEGE से निकाल देते हैं। पहले ज्ञान पीछे प्यार। मुझे पक्का निश्चय होवे जो दूसरे को भी कराउं।

पहला सबक ही नेष्ठा का है । तुमने कितनी नेष्ठा की है ?

कितना तीन वासनाओं-देह,लोक,शास्त्र से उपर उठे हैं? गुरू से लेन देन कितनी करी है? अहंकार, पांच विकार, जगत कितना मिथ्या किया है? त्याग भावना कितनी है? सुख बुद्धि कितनी छूट्टी है? कितना JUMP लगाया है? मरने से पहले कितना मरा है? मैं हूं ही नहीं यह निश्चय किसने किया है?शरीर को पड़ोसी,निविकारी किसने किया है? CHARACTER FAULTLESS किसने किया है? भगवान में FAITH नहीं है तो तू बेईमान है। मनुष्य मन का ईश्वर है सब कर सकता है,सो फैसला करो,निणय और निश्चय करो एक बार। आत्मा से आत्मा देखनी है। सो मन की सफाई बहुत ज़रूरी हे। जैसे चोर चोरी से नहीं छूटता वैसे मन से अज्ञान नहीं छूटता। सो एक बार दृढ़ता से बीस नाखून का ज़ोर लगाओ।

सूखा चना चबायेंगे एको ब्रह्म लखायेंगे

यह पक्के आदमी का काम है, मैं अपने उपर ही तलवार लगायेंगे, दूसरे पर नही। मोह, वासना और अहंकार निकालने का ही पुरूषांथ करूंगा। साक्षी होके देखूंगा कि उस बात के क्या होगा? खुशी से ख्वाब करूंगा। (WILLING RENUNCIATION) और जब आवे संतोष धन तो सब धन धूल समान। अभी कर्मों का ACCOUNT बिलकुल बंद- ज्ञान भया तो कर्म ही नाश। अभी ये ही निश्चय है कि मेरा तो स्वभाव ही निष्काम है। मुक्त है मैं NORMAL और NATURAL आत्मा हूं। सहज सरलता,मौन गंभीर एक रस शांत STILL हूं।

जब एक बार निश्चय किया तो जगत मेरे में रहा ही नहीं। तू में रहा ही नहीं। तभी सहज समाधि में आना चाहिए। जो निरोध विरोध करे ही नहीं। NEITHER SEEK NOR AVOID पर तुम अभी कोई स्थिति में ही नहीं है। ऐसी स्थिति आ जाये,जो न इच्छा रहे,न अहंकार, न द्वैत न द्वेष,

... ... ... सहज स्वभाव हो गया। फिर न त्याग न ग्रहण। यह तो मेरी बात है,पर तू माया में है तो अभी तेरा काम शुरू ही नहीं हुआ है। तुम देरी क्यों करते हो? पक्का पुरूषार्थ करो जो मन से गल्तीयां छुड़ाये, मन की डोरी को मजबूती से पकड़ो। अब कुछ बनना नहीं है और अपने को देखो कितना लगातार सुमरण में हो? दूसरा देखते ही नहीं, अपने मे ही गुम हैं, फिर बाहर का प्रपंच अच्छा ही नहीं लगेगा।

फिर कभी पूछते हो तुम निश्चय कैसे होवे? तू कौन है निश्चय करने वाला? यह पहेली नही सुलझाते तभी तो उलझन में हो। निश्चय करे तो कौन करे? VISIBLE INVISIBLE ( साकार, निराकार ) को कैसे पहचाने?जो निराकार है वो साकार BODY के THROUGH कैसे मिलेगा? जो तुम देह के THROUGH निश्चय करना चाहते हैं? A CREATURE CAN NOT KNOW THE CREATURE। बेटा बोलता है बाप को मुझे अपनी शादी पर क्यों नहीं बुलाया? वो पेदा ही नहीं हुआ था। 'पिता का जन्म क्या जाने पूत', इस LINE में कितना अर्थ है।परमात्मा का बच्चा 'तू', आत्मा परमात्मा को कैसे जानेगा? यह पहेली सुलझाओ। जब मेरी ''मैं'' मिट,जब हम है तो तू नाहीं जब तू है तो हम नाही। गुरू उसको जनायेगा जो अपना नाश करता है।जो अपने को छिपाये-भगवान को प्रकट करता है।

कृष्ण ९ अध्याय गीता में कहता है "मैं सब के हृदय में हूं" फिर कहता है "मैं किसी में हूं,किसी में नहीं"। कोई मुझे जगा के बैठा है,कोई मार के,कि मैं फलाणा हूं। BUT I AM MISTRY। यह बुद्धि वाले का काम नहीं है, इसके लिये सत्य सरलता चाहिए कि मैं कुछ जानता ही नहीं हूं। बिल्कुल छोटा बच्चा बन जाओ, फिर निश्चय होगा! जैसे छोटे बच्चे को EGO गुस्सा क्या मालूम? हमें कोई चार गाली भी दे तो हम मुस्कराये कि ये शरीर लायक है इस गाली के और ये इसका अहंकार मिटाते हैं। पहले तो निश्चय करना है 'मान न मान तू है भगवान'। भक्ति भले हम करे वो तो हुआ प्रेम लुटाना (ज्ञान) । एक हमारी BANK में MONEY है (मुक्ति),दूसरी हमारी PURSE में MONEY है (ज्ञान)तो निष्ठा करओ,आत्मा में टिकाओ। जो नहीं जानते (अज्ञानी) उन्हें भगवान पकड़ाओ, जो जानते हैं (सत्संगी) उन्हें निराकार में टिकाएं। वो भले सौ दफा देह की बात करे,पर हम हज़ार बार आत्मा में टिकाओ। तुम भागवत की तरह ज्ञान बताते है(कान रस)

(कृष्ण लीला) निश्चय की बात नहीं करते। तुम कहते हैं वो माया से आया है तो उसे लीला सुनाते हैं, पर वो माया से थक्का आया है तो पाण निश्चय करके जाये ना। हम तो पहले ही कहते हैं "घड़ी इक विसरूं राम को..." "आखां तो जीवां ...."। वो देह की बात करें, हम आत्मा की करेंगे, पर गुरू की देह की बात नहीं करेंगे। यह लीला ढिंढोरा नही पीटेंगे कि तुम गुरू के पास जाओ। पर सत्य बताओ,मेरा गुरू तो देह ही नहीं है, तो मैं उसके देह की बात कैसे करूं ?

निश्चय के सिवाय नम्रता और झुकना होगा ही नहीं,फिर देह उठेगी फिर बकेंगे। तुम गुरू के कौन से वचन का ध्यान करते हो और रहनी में लाते हो? जनक राजा निश्चय सुनाता था,तुम कभी नहीं सुनाते कि गुरू तुम्हें आगे बढ़ाये।अपना निश्चय सुनाओ,अभी क्या भासता है,क्या नहीं, निश्चय भी तब होगा जब वैराग आयेगा। पहले गुरू से निश्चय करना है- मैं आत्मा हूं फिर भले लाख शास्त्र पढ़ो उसमें वासना नहीं जायेगी। आत्म निश्चय में ही तृप्ती आयेगी। गुरू के पास केवल अपने उद्धार के लिये आओ न कि तर्कवाद,ARGUMENT करने के लिये,न अपनी होशियारी दिखाने के लिए। ऐसे पॉच मिनट सामने बैठके पॉच मिनट में ही निश्चय करने की बात करें। पॉच मिनट में ही निश्चय करेंगे तो भूल नहीं करेंगे,तर्क नहीं करेगे, तू मैं नहीं करेंगे। हो तुम बेवकूफ(भगवान से बेवाकिफ) पर बनते हो सयाने। गुरू से DIRECT LINK रखकर यही सोचो कि शूल एक भी मेरे अन्दर धर्म न आये। अपनी मौन और निश्चय की चिंता करें, तब तक हम न किसी से मिलेंगे न बात करेंगे। तब तुम्हें (एकान्त) में पता पड़ेगा कि यह भी क्यों बोला? यह कर्म क्यों करा? गुरू की MISTRY में रहना है, बाहर उसकी बात नहीं सुनानी, नहीं तो ESSENCE चला जायेगा। गुरू मेरी कोई भी परीक्षा ले मैं तैयार रहूं। गुरू और मेर बीच कोई तीसरा न आये। ज्ञान की नेष्ठा वैराग्य के साथ मिलेगी, जैसे दवाई खाते हैं तो साथ में VITAMIN भी खाते हो। जैसे आत्म निश्चय पक्का होगा वैसे ही गुरू नज़दीक नजर आयेगा। आत्मा को जानने से ही गुरू नजदीक लगेगा। जब गुरू अन्दर आये तो झूठ निकल गया। झूठ है क्या? झूठ है जगत की बात, पदार्थों की बात करता।

अपने स्वभाव संस्कार को बिल्कुल उल्टा न करेंगे तो निश्चय भी न होगा। जो जन्म से संस्कार लेके आये हैं उनको एकदम उल्टा करो।

यदि स्वभाव तेज है तो ठंडा होना चाहिए। ठंडा है तो उसको गर्म होना चाहिये (शक्तिमान) । जब तुम्हारा मगज़ गर्म हो (क्रोधी) अकेला कोठरी में बैठ, मौन में। जब पूरा ठंडा हो जाये (भगवान जैसा) तब कमरे से निकल के प्रेम का व्यापार करो।

**जिसने भगवान में पूरा मन बुद्धि अर्पण किया है तो निश्चयात्मक बुद्धि है नहीं तो संशयात्मक बुद्धि है।**

जो ज्ञान में रहेंगे उनकी पक्की नेष्ठा है कि मैं अजर अमर हूं। मौत से छुटे हुए हैं क्योंकि आत्मा ही है, चाहे आत्मा देखने में नहीं आती (INVISIBLE) है पर FEELING में, अनुभव में आती है। सब स्वाद कौन चखता है? कौन FEEL करता है? यह अनुभव करो (HIGHEST POWER)। प्रकृति सुलभ है तो मैं खुश हूं, यह कोई आनन्द नहीं है। आनन्द तभी है जब मैं पूरा अद्वैत में हूं। ONE WITHOUT SECOND इन्हें मुख मिले तो बोलते हैं मैं ज्ञानी हूं, (बन्द ज्ञानी) पर अद्वैत में शुद्ध होके नेष्ठा बताओ। मेरा तो एक शब्द का भी किसी से व्यंवहार नहीं है।

संसार में बिल्कुल उल्टे (पहले जैसे नही) नहीं होंगे तो आत्म रस नहा आयेगा। संकल्प विकल्प आयेगा तो देह अध्यास कैसे छूटेगा?

आत्म नेष्ठा से (1) वो TOTAL अकर्ता है। (2) वो कभी नहीं बोलेगा-इसने ऐसा किया। (3) वो भले के भाव से चलता है (4) अपनी WILL से न खाता है न चलता है।

अभी ज्ञान के निश्चय में रहो। जो एक निश्चय बुद्धि होगा, वो देह में कभी आ नहीं सकेगा। पाण घर में हम NORMAL NATURAL रहकर कितना निराकार पकड़ सकते हैं? कितना विवेक विचार जाग सकता है?अन्दर से निराकार इतना पक्का होवे तो आपे ही उसका आकर्षण बाहर होगा।

गीता भी भगवान भी रोज कहते हैं- तू आत्मा है, अजर अमर है, नाम रूप नहीं है, पर तुम विश्वास नहीं करते हैं, बार२ अपने को जीव बताते हैं। एक बार गुरू से निश्चय कर, फिर विश्वास क्यों डिगे? फिर आगे चलते चलो२ । अन्दर ही अन्दर निराकार पक्का करते चलो२ तो पक्का होगा।

हर कदम दृढता से,अनुभव से FIRMNESS से पड़े, पर सीढ़ी पर पैर जमाकर आगे कदम रखेंगे तो फिर आगे बढ़ेंगे।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

## 'परेशानी'

### [16]

**भगवान :** तुमको इतने भजनों में से कौनसा भजन अच्छा लगता है।

**प्रेमी** :भगवान "मुझे मेरी मस्ती कहाँ लेके आई" ये भजन पसंद है।

**भगवान :** मनुष्य जो है ना, वो परेशानी में है। है ना? आयो नंगो,वेंदो नंगो पोए छा जी परेशानी? आज समझो कोई चले जाता है तो इतना परेशान है। जीते जी मरे वो एक भी नहीं है।

एक माई बोलती है मेरे को चार बेटियां है मैं उनकी शादी कैसे कराउंगी? वो मर जायेगी फिर उनकी शादी हो जायेगी, ये कुदरत की बात है। चारों शादी करके सुखी हो जायेगी, फिर वो परेशानी क्यों करती है? परेशानी काहे को करें? क्यों करते हैं? मेरे को ये LINE कल से अंदर में बहुत चल रही है, आयें नंगो वेंदे नंगो फिर विच परेशानी काहे को लेते हैं?

**प्रेमी** :भगवान अज्ञान में यही तो रोना धोना होता है।

**भगवान :** अज्ञान हुआ या मुसीबत है? ये बात तो सरल है ना कि तू आया नंगा और जायेगा नंगा फिर परेशानी क्यों करते हैं, गठरी क्यों लेके चलते हैं? एक गठरी लेके आया, वो भोगना भोगता है, फिर दूसरी गठरी बनाता है वो मेरे को अच्छा नहीं लगता है कि गठरी फिर बनाके जायें। एक ख्लास किया वरी दूसरी बनाके जायें? परेशानी।

**प्रेमी** : भगवान घर SHIFT किया है, नया घर एकदम सत्संग के बाजू में है।

**भगवान :** सत्संग तुम्हारे अंदर है, बाहर सत्संग छोड़ दियो। सत् का संग, वो है सत्संग, बाकी ये (बाहर) सत्संग काहे का है? भली सत्संग हाल में भी बैठे रहा पर ज्ञान नहीं होगा।

**प्रेमी** :भगवान हमको विक्षप आ जाता है तो सत्संग माना क्या?

**भगवान :** सत् जो है, जो है, हमेशा है, सो सत् है और कौनसा सत् है? उनका संग है तो बाकी काहे को करते है परेशानी? परेशानी तो करनी नही है।

**प्रेमी** :भगवान बोलते है तू माया के अधीन है,काल के अधीन है ...

**भगवान :** माया है तिलस्म बाज़ी। माया सच नहीं है, जैसे कोई जादूगर दिखाता है, करोड़ हो गया, लाख हो गया, ये जादूगरी है।

CONTD.2.

प्रेमी :भगवान काल माना क्या?

भगवान : काल माना TIME, वो TIME के अधीन है।ये एक LINE है दादा भगवान की जिसमें आठ प्रकार की बातें हैं कि काल के अधीन है, प्रारब्ध के अधीन है तो जभी तुमको कोई दुख या चिंता आये तो तुम बोल दियो कि प्रारब्ध ऐसे ही होती है, जैसे लिखा होगा वैसे ही होगा,तो बाकी क्या?

प्रेमी :भगवान सत् पक्का है पर कभी२ बोल देते हैं तो ये हमारी आदत है?

भगवान : मेरे को तो एक यहीं LINE अच्छी लगती है ये पुराना भजन है "तूं आयें नंगो वेंदे नंगो पोए काहे की परेशानी"। समझो दूसरा परेशानी में है, फिर मैं बोलते हैं कि ये बेचारा क्या लेके गया? परेशानी लेके गया। और व्यंवहार इतना बेकार है, जगत, जो बात ही नहीं है, है सब परेशानी- ये मनुष्य भरा पड़ा है परेशानी से। तो मुर्दा जाता है तो मैं बोलते हैं वो गया, अभी परेशानी कौनसी लेके गया? पाण ज्ञान मिलता है, मरता किसका है और ज्ञान इधर हमको होता है। तुम ये बताओ पाण तुमने ये LINE अपने से लगाई। जो LINE मेरे को कल से चल रही है? आज मेरे को कोई भी परेशानी नहीं है। काहे की परेशानी? जो होना है सो हो रहा है, मेरे को थोड़ी हो रहा है, बाहर हो रहा है, उसमें मेरा की? जो परेशानी में हम पड़ें? सब मनुष्य परेशानी में पड़े हैं। ये नही बोलते हैं कि सब तिलस्म बाज़ी है, थोड़े वक्त के लिये है पर सच नहीं है। परेशानी लेके बैठे हैं- ।ये मेरी बेटी कभी शादी करेगी, ये कैसे होगा,फलाणा टीरा कभी .... परेशानी । इन्होंने समझा कि हमको परेशानी होती नहीं है पर होती है तो भी।

प्रेमी :भगवान वाणी में चला भगवान से पहले मैं हूं, ये खेलिये?

भगवान : I AM BEFORE GOD WAS क्यों? पहले तुम आये फिर तुमने मेरे को देखा। कौन पहचानता है? तुम्हारे THROUGH पहचाना ना।

प्रेमी :भगवान अपने बोला तुम पहले हैं मैं पीछे हूं।

भगवान : मैं तो हूं पर मेरे को प्रघट किसने किया? इन लोगों ने किया ना-नहीं?

प्रेमी :भगवान आप तो थे ही भगवान?

भगवान : हम तो थे पर हमको प्रघट किसने किया ?

CONTD. 3.

प्रेमी :भगवान इसका मतलब हम अगर आपको ना प्रघट करते फिर भी आप तो थे ही थे भगवान।

भगवान : हां, वो तो में अपने को जानते हैं पर जितने भी लोग हैं जो दुनिया में कीर्ति है ना, तो बोलते हैं, बहुत अच्छा है-३। समझो या ना समझो पर बोलेंगे बहुत अच्छा है। क्योंकि ये भीड़ देखते है ना तो अच्छा लगता है पर अपने को नही जानते हैं।ये एक कमी है हमारे पास जो, मनुष्य जाते हैं, समाधि, ध्यान, व्रत करने में, तो काहे के लिये समाधि करते हैं? क्यों कि ये अपने से अभ्यास नहीं करते हैं, कोई नहीं करता है, अपने से बैठे-वो नहीं करते हैं,कोई नहीं करता है तो बाकी ज्ञान काहे का? ज्ञान है अपने से SINGLE का, करे तो जेकर भीड़ होवे ही ना।

प्रेमी :भगवान पहले हम सतगुरू को समझते थे कि वो भरपूर है, अभी लगता है कि हम भी प्रेम से, STILLNESS में, करूणा में भरपूर हैं।

भगवान : हम तो ऐसे देखते हैं ना कि सब भरपूर हैं। कोई नहीं जानता है- ऐसी तो बात लगती ही नही है। रास्ते में जो भी BUS गाड़ी में बैठते हैं उनको भी ये मालूम हैं कि ये इस सत्संग की है। क्यों जानते हैं कि ये इस सत्संग की है? वो कौन सा NUMBER है, तुमको क्या पड़ा है जो वो ये जानते हैं? क्यों कि मुस्कराहट इधर है, दूसरे सत्संग में मुस्कराहट है नहीं, मुंह सुजाके जाते हैं। इधर सब काले चिट्टे हो गये हैं। माना ऐसा ज्ञान है ना जो मनुष्य काले से चिट्टा हो जाता है।

प्रेमी :भगवान ज्ञान भी लिया है पर जिस पद की इच्छा करते है उस पद पर पहुंच नहीं पाये हैं।

भगवान : जेकर तुम्हारा नाम रूप याद है तुमको, तो तू कभी नहीं पहुंचेगी। जभी तू अपने को मिटाओ तो तू पहुंचो पड़ी है। अपने को हम मिटाने आये हैं ,बाकी नाम रूप से मतलब नहीं है।

प्रेमी :भगवान ज्ञान से परेशानी चली गई है।

भगवान : अभी भी परेशानी है। ये LINE टक्के वाली नहीं है। तुम्हारे घर में अगर कोई मरे तो तुमको परेशानी नहीं होगी? उसी समय ये बोलो ना- मैं हूं हो नहीं, आया अकेला जायेगा अकेला तो मैं काहे के जिऐ परेशान होउं?

CONTD. 4.

प्रेमी :भगवान एक किस्म की परेशानी थोड़ी है, हज़ार किस्म की है?

भगवान : एक ही अक्षर को याद करे कि मनुष्य आया और फिर परेशानी लेके गया- बेटी की, बेटे की, माया की, शरीर की सब इधर बोझ है।

प्रेमी :भगवान परेशानी इच्छा और अज्ञान की वजह से है?

भगवान : जभी इच्छा होवे या अज्ञान होवे, मैं आपसे पूछते हैं, काहे की परेशानी? एक ही अक्षर बोले ना। इच्छा मैं नहीं बोलते हैं, कुछ भी नहीं बोलते हैं- पर परेशानी काहे की उठा रहे हैं कि ये कभी सुधरेगा, ये कभी शादी करेगा ..। वो तो हुई बात TIME की, पर मैं क्यों परेशानी लेके मरूं?

प्रेमी :भगवान परेशानी कोई ना कोई रूप लेके आती है।

भगवान : सब ये ही बोलते हैं कि कभी ना कभी कोई परेशानी है,पर आया खाली है, जाता खाली है फिर परेशानी काहे के लिये लेके जाता है?

प्रेमी :भगवान इसी दर पर परेशानी दूर होती है।

भगवान : वो तो सच्ची बात है, हम ही बोलते हैं काहे की परेशानी? वो इधर छोड़के जाते हे (परेशानी) तो भी जभी अपने घर जायेगा तो मस्ती लेके जायेगा।

प्रेमी :भगवान इधर आकर सब गोलियां छूट गयी है पर देह अभ्यास नहीं छूटा है।

भगवान : बड़े में बड़ी ये बात है - भली तुम लाख सत्संग करो लाख गुरू करो,ये करो, वो करो, पर कुछ नहीं होगा।

प्रेमी :भगवान संसार में रहकर सास ससुर की मर्यादा कैसे करनी चाहियें?

भगवान : सास ससुर इधर कहाँ से आया? सारा भजन बोलो। भजन चला हीअ दुनिया अथई फानी,मतॉ करीं तूं नादानी,आयें नंगो.....

कल से मेरे को ये LINE चल रही थी आये नंगे, जायेंगे नंगे, तो परेशानी क्यों लेके बैठे हो? इसकी चिंता उसकी चिंता, आया है दुनियां में सुख लेने के लिये यॉ परेशानी लेने के लिए? कितनी चितायें करते हैं जैसे कि वो हमारी मदद करेंगे। तुमको ये भजन पसंद आया?

प्रेमी : भगवान ये मालूम भी है कि सत् है फिर भी परेशानी क्यो होती है?

भगवान :काहे के लिये परेशानी करें? कि ये कभी होगा, कभी पैदा होगा, कभी मरेगा, हमारा क्या जाता है?तुम भली लिख लियो कि काहे को परेशानी?

आ। प

ओम सतगुरू प्रसाद

जो भी सत्संग सुने वो मर्यादा करे, जीव भाव लगा पड़ा है और तुम निष्काम कर्म करते हैं, तुम को गुरू याद नहीं है, पीड़ा नहीं है तुम को, हमने अपने तन को भुलाया तभी सुख दिया, जभी तन का सुख भूलेगा तभी सब की भलाई कर सकेंगे, सब को सुख दे सकेंगे, तभी फिर सांई तुम्हारी प्रकृति सुलभ करके देगा, मेरे को अपना सुख टके का भी याद नहीं है कि सुख होता क्या है? इतना हम गुरू के साथ रहे, बैठे, घूमे-फिरे, पर टके का सुख याद नहीं है, सारा TIME सब की भलाई में गुज़रता है। रात को भी कोई प्रेरणा आयेगी तो नींद से उठकर बोलेंगे कि मीरा यह सेवा है। दुनिया में देखो कितनी बड़ी सजाएं हैं, एक आदिमी बड़ा शहूकार पकड़ा गया, उस को १४ साल का जेल हुआ, कई देश द्रोही है, चाहे ACTOR है, उसको बड़ा जेल है, देखो कितनी सजाएं हैं। मैं तुम्हारे गलत कर्म की तुम को कौन सी सज़ा देते हैं? जैसे देश-द्रोही है-गलत है,ऐसे कई गुरू द्रोही है गुरू से छुपाके गलत कर्म करते हैं, तो उनको बताओ हम क्या करें? मेरे देह को भी कितनी तकलीफ दिया है, अपने सुख की वजह से, मैं तो फिर२ मुसकराके चलते हैं। आज इतने सब योगी हैं, पांव पड़ते हैं, वो केसे? मैं तुम को आज भी बोलते हैं, तुम किसी को सुख दियो, पुरूर्षाथ करो किसी दुखी दिल के ऑसूं पोंछो, तो तुम्हारी गलती माफ होवे। तुम पुरूर्षाथ नहीं करेंगे, सब से माफी नहीं लेंगे, तो तुम्हारी भी LIFE में कभी भी कीमत नहीं होगी। बिच्छू का काम है डंक मारना, संत का काम है प्रेम करना, वो अपना स्वभाव नहीं छोड़ता, तो हम अपना स्वभाव प्रेम वाला क्यों छोड़ें? जभी तुम को सुख नहीं चाहिये तभी तुम मर्यादा में रह सकते हैं।

प्रेमी :कीर्ति का बोज अंदर में पड़ा है, अभी तक ?

भगवान : कीर्ति मेरी है, जिसने ज्ञान दिया। वो भूल जाएं क्या? जिसने ज्ञान दिया,उस वजंह से कीर्ति हुई, तो उसको कैसे भूलें? तुम्हारी कीर्ति कैसे हुई? जो भी कीर्ति करे उसे बोलो जिस का ज्ञान है, उसको PASS करो।

प्रेमी :नम्रता पूरी नहीं आती है?

भगवान : थोड़ी नम्रता कहाँ से आई? जहाँ से थोड़ी आई वहाँ से पूरी आयेगी, तुम समझो पापी है, झूठे हैं तो अपने लिये है,मैं सत् में ही रहते हैं, कई लोग दुनिया में ठगी करते हैं, चतुराई करते हैं, पर चतुराई से चतुरभुज ना मिले, छोड़ स्याणप ....। संसार की आसक्ति है जन्म मरण का कारण, उससे छूटने का उपाय है परमात्मा में आसक्ति,ये जन्म प्रभू के लेखे। *ओम*

प्रेम माना किसी के लिए भी धिक्कार नहीं है। बाकी प्रेम का मतलब यह नहीं है गले लगाना या बाहर से दिखावा करना।किसी को भी कम देखा तो उसका मतलब तुम अपने को अच्छा समझते हैं। बाहर से दूसरे को खराब कहते हो तो उसकी माना अंदर से तुमको अपनी बड़ाई की इच्छा है और तुम दूसरे को खराब कहकर अपने मन में अपने को अच्छा समझते हो। अपने साथ,चाहे गुरू के साथ, यह तुम धोखा करते हो।तुम सब झूठे हो जहाँ-तहाँ आत्मा-भगवान नहीं देखते हो। अपने को, गुरू को औरों को, देह करके समझते हो,न कुछ आया है,न कुछ गया है, पर बीच में यह सब भूल हो गई है,विस्मृति हो गई है।इसी भूल के कारण सारे अनर्थ,गल्त फहमियाँ, शक, शिकायत, धिक्कार..आदि उत्पन्न हो जाते हैं।कोई और दूसरा पाप नहीं है आत्मघात के सिवाय।गुरू के पास GUARANTED ज्ञान है,शक वाला नहीं है कि मेरे पास तुम्हारी दवा नहीं है. मैं तुम्हारी नहीं उतार सकता। जैसे DR. जवाब देते हैं कि CANCER का रोग छूट नहीं सकेगा, इसका कोई इलाज नहीं है,इस तरह गुरू कभी भी उम्मीद नही उतारता है,यह दवा है अंदर की,सर्वरोग का औषघ नाम,वह तो तुम्हारे हाथ में ही है अपनी कृपा चाहिए। ब्रह्मज्ञानी को ही बाहरी हालत नहीं है पर अंदर का निश्चय चाहिए. उसे कोई निश्चय वाला ही पहचान सकता है। जो 'तू-मैं' में खड़ा है वो कभी सत्य नहीं बोल सकता है। सच्चा तो केवल गुरू ही हो सकता है. और कोई भी नहीं,सब मन बुद्धि शरीर में फंसे पड़े हैं,वह वहीं से बकवास करेंगे, केवल गुरू ही है जो अद्वैत आत्मा में टिका है, वह सर्वत्र आत्मा देखनेवाला पक्षपात रहित है, सब में समदृष्टि रखने वाला है। उसका एक-२ वचन STAMP लगा हुआ है। उसे रत्ती भर भी देह का ज्ञान नहीं है,जिसका मन जिंदा है वो कभी भी RIGHT नहीं हो सकता है। D SEASE माना DISEASE माना बेआरामी। यानी लोभ मत कर। केवल राम ही सत्य है वो मैं हूं। रामतीर्थ=राम+TRUTH, SO AM I.ज्ञानी का एक२ MINUTE आनंद में गुजरता है, वो क्यों? क्यों कि उसको जीने की कला आ गई है कभी भी हालत उस को हैरान नहीं कर सकती है,वो विक्षेपता में भी है,पर वो अंदर से निर्लेप न्यारा है, NON POSSESSION है,कुछ भी करता नहीं है।इसलिए सबसे उपर है,तुम भी उससे सीखो,दुनिया वालों से उल्टा हो जाओ। दुनिया वाले जिधर दौड़ते हैं तुम उससे उल्टी तरफ दौड़ लगाओ तो भगवान से भेंट हो जाएगी। आनंद शांति पा जाओगे।

*ओम*

## 'TUNE पर'



हारमोनियम है,बाजा है,मुरली है,उसके आवाज़ पर कैसे सब मस्त होते हैं,तो हम भी अपने से पूछे कि हमारे आवाज़ में कौन सी TUNE है। भली कोई कितना भी बड़ा ज्ञानी हो जाए, LECTURE भी करे, पर मैं उसका शब्द देखेंगे कि वो कौन सी TUNE निकालता है, TUNE भी बहुत बड़ी बात है- भगवान ने बोला हम भी देखते हैं कि कोई तीखी मिर्ची है, कोई लाल मिर्ची है, कोई काली मिर्ची है, ये कौन सा ज्ञान हुआ?

मेरे शब्द में ऐसा प्यार भरा हुआ होवे जो आगे वाला बोले 'फिर से बोलो'२,भले मैं किसको गालियां भी दे,चमाट भी लगायें,तो भी उनको अच्छा लगे जो बोले फिर से बोलो,फिर से लगाओ। अभी मेरे से(भगवान) से सब क्यों बोलते हैं कि भगवान मेरे को फिर से चमाट लगाओ,सारी अंदर की बात है।आज मेरे लिये किसी से भी जाके पूछो इतने पुराने२ योगी हैं वो बोलते हैं कि भगवान ने मेरे को बहुत प्यार किया है,उनके बच्चे भी बोलते हैं कि भगवान ने हमको इतना प्यार दिया है जो कुर्बान जाते हैं। कोई भी शिकायत नहीं करेंगे,तो ये क्या है, तुम बताओ कि तुमने किसके उपर प्यार का ठप्पा लगाया है? जो कोई आके बोले कि इसने मेरे को प्यार किया है।

अभी तुम बताओ तुमने LIFE में किसको भी गल्त शब्द दिया है? या अभी किस को गल्त शब्द देते हैं? जभी किस को गल्त शब्द देते हैं, तो उसको क्या समझते हैं? उसको क्या समझके बोला?वो कौन है? ऑखें भली देखती है पर है कौन?है तो वो ही, कौन कम जास्ती है?कौन उंच नीच है? हमने तो बचपन में एक कविता पड़ी थी कि जे भाई भलो पिज़ो त घट न कहिं खे दिसु निमी खिमी निहार ....

जभी तुम किसको भी शब्द देते हैं तो अपने को क्या समझते हैं? किसको भी गल्त शब्द बोला उस के दिल को दुखाया,उसकी दिल दुखी हुई तो सब तीर्थों का पाप आके तुम्हारे को लगेगा,तुम ये याद नहीं करते हैं, किसी से भी गल्त शब्द बोला जैसे उसके दिल में HOLE कर देते हैं।

ज्ञान के बाद डरते नहीं है कि कोई ऐसा शब्द बोलके मैं कर्म नहीं बनाउं,इसीलिए कोई भी शब्द बोलो तो विचार करके बाद में बोलो, भले हमारे घर में कोई नौकर होवे,पापी से पापी होवे, नीच में नीच होवे, हमको उसको कभी भी गल्त शब्द नहीं बोलने का है समझो मेरे घर में कोई जुल्मी है, हमको उसको कोई भी गल्त शब्द नहीं देने का है, एक दिन आपे

देगा,समझो मैंने उसको शब्द बोला और वो मेरा शब्द पकड़के जाके कुछ भी करे..... तो हमारे दिल पर क्या गुज़रेगी? उसका पाप किसको लगेगा? इसीलिए बोलते हैं विचार के बाद में शब्द बोलो।

दुनिया में जो भी नौकरी करते हैं उसको सिखाते हैं कैसे बात करनी चाहिये,कौन सी TUNE से बात करनी है JUDGE को,वकील को, TELEPHONE वाले को देखते हैं कैसे बात करते हैं?तुम को पता नहीं कैसे बात करते हैं, कुछ अनुभव ही नहीं करते हैं-तुम्हारे लिखने पढ़ने पोथियां भरने से क्या होगा? सब से प्रेम से चलो नम्रता से बात करो, सेवा करो, शब्द भी और भावना भी सबके लिए अच्छी होवे,भावना भी पहुंचती है?एक शब्द की महिमा है।

आज समझो कोई फकीर दरवाजे पर आता है? तुम को कुछ देने का नहीं है, पर तुम उसको चार गाली देता है कि नहीं है, ऐसा नहीं करता है, वैसा... तुमको समझो देने का भी नहीं है फिर तुम उसको गाली क्यों देते हैं?फिर उसके अंदर से हमारे लिये क्या निकलेगा?आहें निकलेगा, नहीं देने का है तो चुप में रहे न पर उसको कम जास्ती क्यों बोलेंगे।

प्रेमी :भगवान सेवाधारियों से हम रहते हैं वो अलग२ संस्कार के है तो कैसे बिना शब्द बोले रहें, इसको खोलिये?

भगवान : किस तरह बोलें जो RECEIVE MAN बनायें समझो आपका आवाज़ उंचा है तो नीचा कब बनाया, नौकर से समझो तीखा बोलते हैं: कैसे किया? पानी क्यों डाला? पर बोलो हां पानी कैसे डाला, नीचे से बात करो, किसको भी चाहे पति हो या दुश्मन नीचे से बात करो, मेरा TUNE ही खराब है जब TUNE बने। जो मेरा TUNE है वो आत्माकार का नहीं बना जैसे वो CATCH करे कि हां ऐसे पानी डालो, ऐसे घी डालो, पर हम ORDER करता है। सन्यासी स्त्री के साथ MATHERAN गया बोला माताजी२ पर TUNE में वो ही ORDER था। बाहर से सन्यास लिया पर TUNE CHANGE नहीं किया हम OBSERVE करते हैं, किसके भी घर पर जाते हैं तो कैसे बोला? हम सब का स्वभाव CATCH करेंगे, LOCAL TRAIN में भी बैठते थे तो देखते थे कि इधर लड़ाई हुई तो किसको क्या बोला? इधर कोई ORDER करके न चले। प्रेम न करो तो ORDER भी कैसे करते हो। मैं समझो प्रेम करते हैं तो ORDER भी करते हैं। तुम कैसे बात करते हैं?कैसे ORDER करते हैं? सब है सिर के साईं। *ओम*

## 'तपस्या'



प्रेमी : भगवान असल में तपस्या कौनसी करें?

भगवान : मन वाणी की तपस्या है। मन, बुद्धि, वाणी, मन हमारा यहाँ वहाँ क्यों घूमता है।वाणी में अपशब्द क्यों बोलते हैं?मन में गलत संकल्प विकल्प क्यों करते हैं? बुद्धि क्यों चलती है? शब्द मेरे से गल्त ना निकले। ये है वाणी की तपस्या। मैं तुमको दावे से बोलते हैं, मेरा किसी के पास गल्त शब्द नहीं है। किसको हमने ATTACK नहीं किया है। हमारे पर सौ जनों ने ATTACK किया, पर हमने ATTACK नहीं किया। एक योगी ने बताया कि जैन धर्म में एक दृष्टांत बतात हैं एक गृहस्थी गुरू के पास गया। गुरू ने उसको वचन दिया "दाल अलग-छिलका अलग" शिष्य भाव से ज्ञान सुनके वापस आया, रास्ते में किसी को दाल से छिलके अलग करते देखा, वहाँ ही गुरू का वचन ध्यान किया, उसे समाधि लग गई कि शरीर और आंत्मा अलग है। गुरू ने कहा ४८ मिनट भी किसको लगातार समाधि लग जायेगी, तो वो मुक्त हो जायेगा और वो मुक्त हो गया। फिर भगवान ने बोला केवल ४८ मिनट की बात है पर कोई लगातार सात दिन तपस्या करे, जो एक ख्याल भी न आवे, खाना भी ऐसा होवे जो रस न लगे। ऐसे खाये जैसे बीमार को दवाइ मिली। फिर चाहे पैदल करे, घूमे भी पर चंचलता न होवे। RELEAX करे। बात न करे। सात दिन पूरा मन भी न आवे, ख्याल भी न आए। ख्याल आये तो बोलो,मेरा की? लगातार OAM में वृति TIGHT रहे। वो मेहनत सफल है, बाकी रोज ४८ मिनट खाली तो कुछ नहीं होगा।

प्रेमी :भगवान राजाओं के लिए कहते हैं कि राजाई छोड़कर ज्ञान लिया तो वो कौन सी राजाई छोड़ी ?

भगवान : राजाई छोड़कर मतलब राजाई का EGO छोड़ा। उनको राजा पलंग पर रहता है, कभी नहीं मिला तो ज़मीन पर भी वो सो सकता है,कभी नहीं मिला तो विक्षेप कोई नहीं। वैसे गहने पहने तो भी शोक नहीं। ये भी ठीक है,वो भी ठीक है। बाकी राजाई छोड़कर भागना थोड़ी है,भागेगा कहाँ।खाना हाथ में मिले,चाहे दोने में, चाहे ठिक्कर में,सोने में या चांदी में। पानी में भिगाके धो के खा लेंगे। क्या फर्क पड़ेगा। शादी में जो पातल में खाते हैं, त्याग किसका करें? त्याग EGO का ही करें।

CONTD. 2.

प्रेमी :भगवान साहूकार लोग पूछते हैं सुख बुद्धि कैसे छोड़ें?

भगवान : सहज में सुख मिला है तो दुख क्यों खरीद करें? ये भी ठग्गी है राजाई छोड़ना।जैन धर्म में एक ने सन्यास लिया तो पूरी JEWELLERY रास्ते पर फैंक दिया तो उससे क्या हुआ? तिजोरी से निकाल कर कर्ता बनके जो फिर फैंका। एक आदमी मरता है उसकी जो चीज़ जहॉ पड़ी है वहॉ ही पड़ी होगी। जो चीज़ सड़ भी जाए तो मरे हुए को शोक नहीं होगा। समझो DEAD BODY हो गयी जीते ही तो वो क्या, ये क्या?मरेला आदमी क्या करेगा। ये अपने को ज्ञान देना है कि मरा हुआ क्या सोचेगा?

प्रेमी :भगवान आपके वचनों में ताकत जो सारी राजाई किसी को भी भुला सकती है।

भगवान : जभी मैंने किसी को कहा कि ये चीज़ छोड़ो तो वो बोलते हैं अभी हम ज़ुबान पर भी नहीं ला सकते हैं। त्याग और ग्रहण की बात ही नहीं है कि सोना छोड़ें या मिट्टी। अपने को देखें ख्याल कौन सा आता है।

सुख भी होवे प्रारब्ध से तो सबके लिये होवे।खाली मैं क्यों सुख लूं। अभी मेरे को कोई सुख की चीज़ है तो तुम दस जने भी उसमें से सुख लेते हैं,तो सबके लिये सुख होवे। ये सहजता का ज्ञान है। बाकी त्याग और ग्रहण दोनों खराब है। यहॉ से मनुष्य संसार छोड़ के जायेगा। फिर उधर नया संसार बनायेगा। यहॉ बच्चे छोड़ेंगे वहॉ शिष्यों में मन जायेगा। इसीलिये कहते हैं जो तुम्हारी प्रकृति है उसमें संतोष में रहो।

प्रेमी :भगवान आज अन्दर में आ रहा था राजा ने दुश्मन को राज दिया, चण्डाल के घर से भिक्षा लेने आया।

भगवान : मैं बोलते हैं ज्ञानी कौन सा होवे, गुरू बोले राजाई दो तो एक क्षण भी न लगायें। बाकी जहॉ मनुष्य पैदा हुआ है वैसा ही चलेगा। दृष्टांतः राजा ने रानी को कहा फकीर की पहली /DELIVERY के बाद घर में तीसरे दिन काम करती है, तुम चालीस दिन बैठती हो। तो रानी ने राजा को दिखाया जो अपने घर में पौधे लगाते हैं, उनको पानी रोज़ देना पड़ता है, जंगल के पौधों को थोड़ो देना पड़ता है।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद



# 'HOW I FEEL'

**BY LORD DADA**

मैं अपने को महसूस करता हूं कि मैं निराकार भगवान हूं, मैं ये देह नहीं हूं, मैं भगवान हूं, ये देह नहीं हूं, जो एक दिन प्रारब्ध वश छोड़ के जायेगी।

- मैं अशोक रहता हूं, आत्मा, अमर हूं, अजन्मा हूं, अद्वैत हूं, निराकार, निष्काम हूं, इच्छा रहित हूं, सर्वज्ञ हूं, NON POSSESSION हूं, साखी, THOUGHTLESS, जीवन मुक्त, पर शरीर नहीं हूं।
- शूरूआत में मैं एक ही WORD था। WORD से WORLD बना, उस में LORD छुपा हुआ है।
- सारी सृष्टि जो तुम देखते है, वो मेरा ही बढ़ावा है, मैं सच हूं और ये मेरी प्रकृति मिथ्या है।
- मैं किसी के बुद्धि में आनेवाला नहीं हूं, पर ब्रह्म विद्या से ही मेरे को कोई जान सकता है। और जो कुछ भी दिखाई पढ़ता है वो सब अविद्या है। ब्रह्म विद्या - ब्रह्म श्रोतरी और ब्रह्म नेष्टी अर्थात तत्व दर्शी गुरू से ही मिलती है। सब जो भी कर्म काण्ड है वो बंधन में डालने वाले हैं। तुम्हारा AIM, लक्ष्य है 'अपने आप को जानना'। अपने आप को न जाना तो कभी भी मन की शांति व आन्नद नहीं मिलेगा।
- मेरा कुछ भी अपना नहीं है जो मैं छोडों, मेरे को कुछ भी नहीं चाहिये, जैसे कि सब कुछ मैं हूं। और जहॉ तहॉ मैं ही हूं, मेरे सिवाए कुछ भी नहीं है।
- वैराग से सारे पदार्थ खुशी से खुवाब हो गए हैं, जैसे कि कभी भी टिकने वाले नहीं है। सकल सृष्टि का राजा दुखिया। इसीलिए आप कैसे किसी भी पदार्थ से खुशी प्राप्त कर सकते हैं।
- जभी मैं कभी भी नहीं कर्ता हूं, तो अपने आप को जानता हूं। मैं बहुत साधारण तरीके से सुनता हूं और बहुत शांत हूं, बहुत ही स्थत हूं। और अपने सूक्ष्म स्वरूप में रहता हूं। मैं ही सच में रहता हूं और दुनिया रहती नहीं है। इसी तरह मैं परधर्म से छूट गया हूं। जैसे कि सृष्टि में सब AUTOMATIC होता है। मैं दृष्टा हूं कर्ता नहीं।

CONTD.2.

- मैं अपने को TRUSTEE, BANK CASHIER, HEAD MASTER और आया करके जानता हूं। मैं हरवक्त असंग हूं, निरमोही हूं,
सब जो भी शक उठते हैं वो तुम्हारे खलत ख्याल है। [ चलता, उठता बैठता गलत है]

- सृष्टि में तीन बातों की ज़रूरत है - एक तो आज़ादी, दुसरा आत्मिक शक्ति तीसरा समानता योग।

- सारी सृष्टि को प्रेम की ज़रूरत है न कि किसी बाहर शक्ति की। मेरे जो कारोबार है वो तुम्हारे को, तुम्हारे सच के खज़ाने को ढूंढने में मदद करेगा। जो भी इस पद को पहचानेगा उसको ही मेरी सची आर्शीवाद है।

- सारी सृष्टि से जब दिल से पूरन त्याग हो गया तो अन्दर ही अन्दर से आत्मा प्रगट हो जाएगा।

*ओम*

## 'एकरस'

*"हूं एक सदा बेजोड़ हूं, नहीं दूजा कोई, यह जान लिया"*

जे अगर मैं आत्मा हूं, तो पक्क ई पक्क एकरस हूं। तू आत्मा निर्लेप नारायण सदा एकरस ही है। एकरस भी हम गुरू के सिवाय नहीं हो सकते हैं। मेरी सारी पिक्चर गुरू को मालूम होवे। मैं हँसा या रोया, मनोरंजन किया, सब मेरी बात गुरू को मालूम पड़े।

अगर मैं आत्मा हूं तो निश्चय ही एकरस हूं। बाकी कभी देह कभी आत्मा तो अदल बदल ज़रूर होगी। तू आदि से निर्लेप नारायण सदा एकरस है। तुझमें कोई भेद छेद नहीं केवल दिखने मात्र भेद लगे, तो तू मैं हूं। पर अन्दर बाहर एक ही है। बीच का पर्दा कोई दूर करना है, वो है ही है। देह से कोई कैसा भी साधन करे पर सब व्यर्थ जाएंगे। अपने को अपने में ही गुम करें और कोई खुद को खुदा जाने।

हमने जबसे ज्ञान सुना SAME वाणी SAME रहिणी सब SAME। मैं सदैव एकरस रहता हूं। यह हमारे शुरू के निश्चय की बात है। सब कुछ AUTOMATIC होता है। हमारा चहेरा हमेशा एकरस रहता है, कितनी भी हालतें आईं। तुम तो गिरते फिरते हैं, एकरस नहीं है। तुम्हारे में इच्छा, लोभ है। अपने से सत्संग नहीं किया है कि मैं साखी, दृष्टा हूं,निर्दोष हूं, एकरस हूं।

हरबात का उपाय निकालो जैसे बाहर बहुत शोर है, तो कमरा बन्द करके बैठो। अपने को ठीक करो। कमरे के बाहर हमारा हक नहीं है। नेयलान का मौजा हो जाओ। एकरस, मौन, शान्त। तुमको यह सबक पढ़ना है कि मेरे को एकरस रहना है। इतने वचन सुनते हैं, किसी में आशा नहीं रखेंगे, तो SAFE होंगे।

जितने भी गृहस्थी है उनको एकरस रहना मुश्किल लगता है। एकरस होने के लिए घर छोड़ने की ज़रूरत नहीं, पर घर में हाज़िर नाज़िर भगवान देखो, तो सामने वाला बोलेगा, इनको यह बात पसन्द नहीं। तो तुम सहज में एकरस हो गए।

कोई भी ऐसा दृश्य नहीं, जो मुहं टेडा करो। गुरू के पास जाने से, ब्रह्म सुनने से, अपने को एकरस रखना है, नहीं तो तुमने ज्ञान सुना ही नहीं है। तुम्हारे FACE से सब देखे कि ये कितना एकरस रहता है।

CONTD. 2.

ज्ञानी तुमको कैसा भी दिखे बाहर से पर अन्दर एकरस रहता है। एक SECOND में अज्ञानी का MOOD खराब होती है। ज्ञानी को एक SECOND भी नहीं लगता है MOOD बनाने में। कुछ भी हो जाए मेरे को नहीं होगा। मैंने फैसला अपने से कर लिया है कि सुख दुख क्या है?

दूसरे को नहीं मोड़ेंगे, अपने को मोड़ेंगे, एकरस, प्रसन्नचित, तृप्ति में। घर में रहो यह मन बोलेगा - यह बर्तन कैसे टूटा, किधर टूटा? यह मोदीखाना है, पर तुम्हारा एक चम्मच भी जाएगा तो रोएगा।

हम एकरस है तो राक्षस जैसे लोग भी इधर आकर ठंडक प्राप्त करते हैं। तुम्हारी भी इतनी तपस्या होवे जो तुम एकरस रहो, जो कोई भी तुम्हारे को देखकर एकरस हो जाए। लीनता के सिवाय ज्ञान नहीं होगा। ऐसे गुम हो जाएं, जो मैं रहे ही नहीं।

FACE नहीं है MIRROR है। रोज ४० शक्ल बनाने का क्या मतलब है? आइना भी देखे, कि भगवान की राजधानी में आए हैं तो प्रसन्नचित हैं। मैं कैसा हूं? तुम्हारा ऐसा ही सारा दिन मोह द्वेष शकल CHANGE करने में जाता है। मेरे को सब भूत लगते हैं, एक भी नहीं लगता है जो सदैव एकरस, प्रसन्नचित शान्त स्वरूप होवे। एकरस वह है जो अपने से दिल लगाकर बैठा है। बाकी अगर मन इस उसमें रखेंगे तो कुत्ते की तरह होंगे। इधर भटका उधर भटका, सारा दिन इधर उधर देखते रहते हैं। सुना साधू भी माला फेरते हैं, देखते इधर उधर हैं कि कौनसी माई है, कौन सी पर्स है, कौन सी चीज़ लेके आई है? यह माला फेरते हैं। तुम भी देखेंगे कि यह नहीं आया, वह नहीं आया, किससे बात करूं? किससे हॅसूं? मैं अपने में ही हूं, जिधर जिधर, जो मैं चलूं बोलूं, यह नहीं आया, वह नहीं आया। मैं एकरस हूं। बस। जिसको प्यार होगा तो आकर मिलेगा। मेरे को PERSONAL क्या चाहिए? यह हमको देखने का है कि मैं खुश हूं? वचन तो है ही है, जो इधर वचन मिलते हैं वो एक ही वचन बस है। तुम एकरस तभी है जभी एक में भी इच्छा नहीं रखो। दिमाग को हमेशा एकरस रखो। तुम किसके भी कर्म में, स्वभाव में जाऐंगे। मेरे को तुम सब पागल लगते हैं।

कोई भी कर्म में तन मन एकरस करने का है। एकरसता खाली शब्द नहीं है, पर एकरसता है हर हाल में मैं ठीक हूं।सन्तोष मे हूं, समानता में हूं। एकरस रहने से तृप्ति आएगी।

CONTD. 3.

जो जिस TIME करना है, उस TIME करो, पर सारा दिन चिन्तन काहे का?जगत के TIME जगत करो,पर चिन्तन नहीं। ऐसा दिमाग को हमेशा एकरस रखो। ऐसे जगत के TIME जगत, पूजा के TIME पूजा,ऐसे जिस TIME जहाँ रहो, तन मन एकरस। जिसकी वृति अन्तरमुख है,शान्त है, स्थिर है, मौन, एकरस है. वह ओम के आलाप को महसूस कर सकता है,जो नित्य निरन्तर अन्दर बज रहा है। सुबह से रात तक कोई भी एक दिन प्रसन्न रहे, तो दूसरा दिन भी अच्छा निकलेगा। फिर आदत बन जाएगी प्रसन्नचित रहने की। कितनी भी हालत आए पर तुम एकरस रहो।

PERMANENT आनंद है, वो अपने में है। और सब रस छोड़कर एकरस हो जा, सब रंग छोड़कर एक रंग हो जा। पहले नम्बर का ज्ञान निराकार का है, एकरस, मुस्कराना। कोई भी मुसीबत आए,एकरस।

एकरस होना माना आत्मा में स्थित होना। हम NATURAL एकरस है, हमको बनाना थोड़े ई पड़ता है, है ही एकरस। हमारा स्वभाव है एकरस रहना। हमको हमेशा तुम क्या देखते हैं? हम हमेशा समान दृष्टि में रहते हैं, एकरस। महलात को आग लगे तब भी एकरस, चाहे शरीर को कुछ भी होवे, पर हमेशा एकरस बनाकर रहें अपने को।

जहाँ तन होवे वहाँ मन होवे, तन मन एकरस। जे तू इधर है, मन कहाँ भी गया, इधर उधर तो हम किसी की चोरी क्यूं करें, जो किसी में मन डालें, उसका कुछ भी कर्म देखें,बात करें, परचिन्तन करें, तो क्यूं किसी में मन रखें? दूसरे में मन रखना माना अपने से दूर होना।अगर अपने में मन है,तो तन मन एकरस।सिमरनि सच्चा ये है जों तन मन एकरस होवे। आज यह PROMISE करो कि यह इच्छा नहीं रखेंगे कि आगे वाला ऐसा करे। दुसरे को नहीं मोड़ेंगे, अपने को ही मोड़ेंगे। एकरस. प्रसन्नचित, तृप्ति मे रहेंगे।

मेरा स्वभाव है एकरस रहना,हमको हमेशा तुम क्या देखते हैं? सबने देखा है हम हमेशा प्रसन्नचित रहते हैं। PHOTO भी हमारा निकालते हैं, हमेशा सब PHOTO एकरस होगा। तुम सर्दी में सर्दी का रूप बन जाते हैं, गर्मी में गर्मी का रूप बन जाते हैं, तो तुमको ज्ञान नहीं होगा। हमको सारा दिन तुम क्या देखते है? एकरस रहना पहला ज्ञान है। किसी को भी देखो कोई चिन्ता में है, कोई मोह में है, क्यू कि अपने को एकरस बनाते नहीं है। जिसको कोई चाह नहीं,चिन्ता नहीं,वं सदा एकरस ही है।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

*'वैराग'*

*"कोई ऐसी आग लगा दे रे,ये तन मन जीवन सुलग उठे,*
*दिन दूनी हो.विरह वेदना, पल भर चैन न आये रे"*

जिज्ञासू ब्रहमचर्य में रहे, सबसे वैराग ले, मन से भी वैराग ले कि आया अकेला जायेगा अकेला। ज्ञान खत्म होने का भय इसीलिये होता है क्योंकि वैराग नहीं है। ये नहीं सोचा है कब तक बनी रहेगी-किसकी बनी रहेगी। जितना वैराग होगा, उतना अन्दर से ख्याल आपे ही खत्म हो जायेंगे- ये अन्दर के वैराग की बात है।

भगवान के चेहरे से या उठने बैठने से कभी ये नहीं लगता है कि भगवान को वैराग है, पर फिर भी अन्दर में कितना वेराग है। वैराग माना क्या? संसार है भगवान का, जगत दूषण नहीं भूषण है। तू नहीं है, तू अपने से वैराग ले कि तू नहीं है। अगर खातरी है कि चव्वनी भी है तो वैराग नहीं ले सकेगा। हम क्यों आवाज़ करें कि मेरे को वैराग दे। बस Disinterest होना है। अंदर से इतना वैराग होवे, तेरी ऐसी आवाज़ निकले जो सामने वाला भी वैराग में आ जाये, पर गुरू के उपर आंच भी न आवे कि गुरू ने छुड़ाया।वैराग माना Disinterest। घरवालों से खायें,घूमें,पर मेरी इच्छा नहीं है। तुमने ऐसा ज्ञान लिया है जो बोलेंगे मेरे को अभी वैराग लेना है-वैराग क्यों? उनसे तो मीठी बातें भी नहीं करते हैं- लेन देन नहीं करते हैं। उसको दिल नहीं लेते हैं तो पड़ोस में जाकर माँ-बहन सहेली बनायेंगे।

अगर कुदरत को देखना है तो बैठके अपने शरीर को देखें, अगर वैराग लेना है तो सारे संसार से एकर मिनट में वैराग मिल रहा है। क्यों कि सारी माया अपूर्ण है, ब्रह्म ही पूर्ण है। कपिल मुनि ने माँ देवहूति को ज्ञान दिया। उससे ऐसे ही जगत मिथ्या नहीं कराया,पहले आत्मा का ज्ञान दिया।

मेरे को समझ में नहीं आता है- मनोरंजन करते हैं। किसका NATURE हंसी मज़ाक का है, उनको ज्ञान से अंतरमुख होने का है। योगी योगी को वैराग देवे। वैराग तो एक शब्द में है 'क्या मांगू कुछ स्थिर नाहीं।" किसमें मन रखूं? तंगदिली, विकार पैदा करते हैं। एक फुरने को हटाओ तो दूसरा.. । भगवान से पैसा मांगता है तो दो लाख दे- अपनी LIFE RUIN करता है, बरबाद करता है। माया कभी अपने मालिक को शांति नहीं देगी।

Contd. 2.

माया में सदा ही अतृप्त रहेगा। बड़े२ राजा लोग राजाई छोड़कर वैराग क्यों लेते हैं?मनुष्य को वैराग नहीं है कि मैं खुशी के कीड़े से बनकर बैठा हूं, ये ही खराब है जो आगे बढ़ने नहीं देता है।

सब तू ही तू है या सब मैं ही मैं हूं, भाव बना रहे-अर्थात मैं और मेरे वाला स्वभाव शून्य हो जाये। वह शून्य होते ही सचे वैराग की भी स्थिति हो गई ना। जो फल मिलता है तो पाण वैराग आता है कि हमने ही काला मुहॅ किया है-फल निकला है तो अभी क्या करें? पहले उल्टा चले थे- अभी पाण सीधा चलेंगे। वैराग कैसे आयेगा? वैराग माना त्याग नहीं-सन्यास नहीं,पर कोई मेरे से उल्टा चलेगा तभी वैराग होगा।मन में ना रखूं कि ये मेरे से उल्टा चला।वो उल्टा चला ही है, मेरे वैराग के लिये। अपने साथ अभ्यास वैराग करना सीखें-पर केवल सत्संग में आना जाना न करें। सच्चा वैराग ज्ञान से आता है।जो कुछ भी है-मेरे को Interest है? मेरा मन देखो कहॉ जाता है?मैं नीचे नहीं आ सकते हैं। तुम्हारे से भले कितना भी कुछ मिले पर मेरा दिल ऐसा हो गया है-कुछ अन्दर जाता ही नहीं है। इतने उपर चढ़ गये हैं,जो नीचे आते ही नहीं है। Taste में जो भी दुख मिला उसका अनुभव वैराग देता है।उससे वैराग का सबक पक्का करते रहना है।

तुम तो बोलता है तम्हारी प्रकृति सुलभ हो जायेगी, तब तुम वैराग लेगा। पर इस बीच में तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी, जन्म मरण के चक्कर में आयेगा, तो नर्क में चला जायेगा, प्रकृति कब सुलझेगी?यहॉ कोई भी नहीं है,जिसे मैं बुलाकर प्यार करूं, इसमें सूक्षम वृति चाहिये।तुमने किसीको वैराग में रखा ही नहीं है,व्यर्थ में है तम्हारा वैराग। जिसको शादी अच्छी लगती है तो वो अशोक कैसे रहेगा?पराई शादी में वो ऐसे ही जायेगा।निमत मात्र नहीं चलेंगे! हम नहीं बोलते है मैले कपड़े पहनकर जाओ पर जितना ये लोग खुशी करते हैं, उतना वैराग नहीं है। आखिर है, क्या? उससे भी क्या होगा-क्या?माया इतनी इकट्टी करते हैं-आखिर में सब छोड़के मर जाते हैं।

झुकना ज़रूरी है,पर हमको अन्दर से वैराग लेना है, ये कब तक२?इससे क्या होगा२? वैराग देते हैं घरवाले-Not बाहरवाले। सन्यासी बनकर कोई चला गया,तो वो झूठा है। वैराग तो है जो वो हमारी Will हो

Contd.3.

No करें और हम मुस्करायेंगे। एकदम विचार आ जाये-अभ्यास हो जाये कि मेरे को Turn करने का है कि दुनिया देखे कि ये वैरागी कैसे हो गया। ज्ञान फकीरी का है, तुम पाण अब जास्ती सुख लेते हैं।

तुम्हारी Party में कोई चंचलता करे तो तू ऐसी बात कर ना जो वो वैराग में आ जाये। तुमको दर्द होवे,विवेक होवे,ज्ञान सुनकर लापरवाही नही करनी है। सारी दुनिया में मेरे को प्रिय में प्रिय चीज़ है तो मेरा गुरू है-फिर मैं कहॉ भी दुनियां में बैठेंगे तो अंगारा लगेगा,कहॉ भी बात करेंगे तो अंगारा लगेगा कि मेरे को प्रिय में प्रिय चीज़ कौन सी है? अंगारा लगेगा तो कहॉ भी बैठ नहीं पायेंगे। बकर२ नहीं करेंगे,परचिन्तन नहीं करेंगे। मज़ाक करके हम खुद ही भावी बनाते हैं। फ़िर कभी वो Nature सुधरेगा नहीं। जो ब्रह्मज्ञान में बैठे वो वैराग में बैठे।मज़ाकी आदिमी कभी वैराग नहीं लेगा। जो जिज्ञासु है उसको वैराग होना चाहिये कि ये क्या बात है? हंसी मज़ाक नहीं करना चाहिये।वैराग लें पूरा।कल गुरू के पास एक राजा आया वैराग लेकर,गुरू ने कहा पहले औरत के सामने वैराग ले। मेरे आगे क्या वैराग लेके बैठा है? इसका मतलब त्याग नहीं, पर सच को जानो तो झूठ आपे ही छूटेगा। When knowledge dawns, the world disappear गुरू को लगता है हरेक सीधा सरलता से चले. बाहर के त्याग वैराग से ऊपर उठे। तुम बोलते हैं ये माया है!माया अभी किधर है?पहले जभी हमारा मन निकले तो वैराग है, फिर त्याग ग्रहण कहॉ है? जो लोग मांगते हैं.वैराग नहीं लेते हैं कि कब तक,ये चीज़ें कब तक? ऐसे ही अँधेरे में जा रहे हैं। वापस आने को ऑखें भी नहीं है। **"आप भये बूढे, तृष्णा 'भये जवान"** हमको जगत को एक बार भूल जाना है।जैसे राजा ने नहाते२ वैराग ले लिया। उसने बोला हम तुमको वैराग दिखाते हैं,और चल पड़ा।उसके सिर पर मुलतानी मिट्टी थी और चल पड़ा।तुम तो बोलते हैं कि हमारी प्रकृति सुलभ हो जायेगी तब तुम वैराग लेगा।इस बीच में तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। किसको भी बाण दियो तो घोट-घोट कर दियो।अर्जुन को भगवान कहते हैं अभ्यास वैराग करो।इधर मैं भी तुम्हारे लिये अभ्यास वैराग करते हैं, जो तुमको वाणी घोटकर देते हैं। मन को ज्ञान सुनाना है,वैराग लेनां है, वैराग है-है ही भगवान। जिस मनुष्य को सुनाना है,वो समझे भगवान अन्दर नहीं है, वैराग

Contd.4

बैठके ले रहे हैं। इनको अगर भगवान याद होता तो बोलते है ही भगवान। तो मैंने वैराग कैसे लिया?मैंने कौनसा त्याग किया? मैंने क्या किया है?भगवान देखो इनकी शक्ल में है ही नहीं। चेहरे पर मुस्कराहट नहीं है। खाली त्याग करते हैं, बोलते हैं-मैं शॉत हूं। ये सूनी शॉति शॉति मेरे को नहीं चाहिये।

अभी कोई भी सब्जी बनायेंगे तो थोड़ा घी ज़रूर डालेंगे, तो सब्जी मज़ेवाली लगेगी। तो भगवान का साथ भी रसदार जगत है। अगर भगवान के सिवाय तुम्हारी Life है तो देह अध्यास में मरेंगे। वैराग माना Detach, सबसे प्यार कर -फिर भी अलग रहो जो हमको ध्यान समाधि में कोई याद न आए।

*ओम*

28-08-2000.

**भगवान :** विलायत में सब संत एक होते हैं, भले अच्छे है, खराब नहीं है, पर बात है कि ये ज्ञान किधर भी नहीं है।

**प्रेमी :** भगवान सब जगह बोलते हैं कि हे जीव तू ये कर ये नहीं कर।

**भगवान :** इधर बोलते हैं कि तुम्हारे से हुआ क्या है? तुम कर क्या सकते हैं? तुम बने क्यों? तुम को बनना ही कुछ नहीं है।

**प्रेमी :** भगवान इधर Be Nothing, Do Nothing है।

**भगवान :** बोलते हैं इधर Be Nothing है, Do Nothing है, उधर हमको दान पुण्य कराके नाम निकालते हैं। कोई भी दान पुण्य करता है तो उसको याद तो होता ही है कि मैंने दान पुण्य किया। इधर इसीलिये हम ये नहीं कराते हैं, तुम्हारा नाम कोई नहीं पूछेगा।

**प्रेमी :** भगवान,इधर सबको अपना अपना Lesson मिलता है।

**भगवान :** सबसे हमने बात किया है। शरण माना क्या? शरण माना सबक। शरण माना ये नहीं कि पॉव पड़ना, पॉव नहीं पड़ने का है, सबक उठाने का है। जो हम बोले सत्संग में वो उठाने का है।

**प्रेमी :** भगवान, भजन की Line है "मन की गति संभलिये" इसको खोलिये?

**भगवान :** मन की गति सम्भाल माना तू बोलता है भगवान को कि मेरा मन मार, पर तू चलता है मन के कहने में, फिर बोलता है मन को मार, ये नहीं करो। जे तन मन धन भगवान को दिया है तो मेरा कुछ नहीं है, भली सब मरे। तुम बोल सकते हैं 'कि मेरे वाले सब मर भी जाये तो भी मेरे को दुख नहीं है'? बोलो ?

**प्रेमी :** भगवान, ऐसे नहीं बोल सकते हैं, डर रहता है।

**भगवान :** इसका मतलब तुमने ज्ञान नहीं उठाया है ना। अभी तुम बोलेंगे तो वो क्या सचमुच में मर जायेंगे? इन लोगों को भ्रम होता है।

**प्रेमी :** भगवान वाणी में आता है कि प्रेम करो,दूसरी तरफ बोलते हैं कि असंग रहो।

**भगवान :** प्रेम करो माना सच्चा आत्मा का, तू भी आत्मा, वो भी आत्मा तो न्यारा हो जायेंगे, पर जेकर हम मोह को प्यार बोलेंगे तो वो गलत है। मेरे को होवे मोह और मैं बोले कि मेरा है प्यार तो आत्मिक प्यार हुआ ही नहीं।

**प्रेमी :** भगवान, अहंकार है, इसीलिये प्रेम निकलता नहीं है।

भगवान : क्यों कि सब से उपर तुम प्रेम को नहीं समझते हैं। थोड़ा मोह, थोड़ी इच्छा,थोड़ा पदार्थ,थोड़ा घर,थोड़ा ऐसे..।मैं क्या बोलते हैं कि तुम सब के उपर प्यार रखो, बाकी जो टके टके की बातें हैं वो सब छोड़ दियो।

प्रेमी : भगवान क्रोध और मोह नहीं जाता है।

भगवान : ये दोनो ही दुश्मन है महा दुश्मन। क्रोध और मोह बड़ेर दुश्मन है। क्रोध में अन्दर बुद्धि नाश हो जाती है, ज्ञान टिकता ही नहीं है, मोह में भी बुद्धि चट हो जाती है, तो मोह किसको करें? मैं जो बोलते हैं, हे अर्जुन ये सब मरे पड़े है, तुम बोलो।

प्रेमी : भगवान, आज वाणी में सुना कि पैगम्बर से इतनी मेहनत नहीं लियो,ज्ञान सुनके अपने को जानो।

भगवान : मैं मेहनत ऐसे थोड़ेई करते हैं? लोहे को थोड़ेई कुटते हैं,जो मेहनत करते हैं। मेहनत हमने कुछ नहीं किया है। हमने इशारा दिया है कि तू कहाँ मैं कहाँ, तू क्या समझता है, मैं क्या समझते हैं, बस इशारा।

प्रेमी : भगवान, हमारे शहर में आपको सब याद करते हैं, सबने Message दिया है।

भगवान : नयी बात कोई बताओ मेरे को कौन याद नहीं करता है? सब मेरे को Message देते हैं, जिधर किधर, पंक्षी भी बोलते हें कि भगवान को बुलाओ,हवा भी बोलती है भगवान को बुलाओ, पर मैं हवा से भी उपर है।

प्रेमी : वाणी में आया कि अगर अहंकार है तो ज्ञान का दरवाज़ा बंद है।

भगवान : जे मेरे को अहंकार है तो ज्ञान अंदर कैसे जायेगा?

प्रेमी : भगवान, ये भ्रम है: 'कि हम बोलेंगे सब मरे पड़े हैं तो वो मर जायेंगे'?

भगवान : कौनसे भ्रम में है? मरेगा कौन? बोलने से मर जायेंगे? बोलते हैं, बाकी सतसंग में दुआ होती है, पिट(बद दुआ) नहीं होती है। हम पिटाते हैं तो वो पाण अमर हो जाते हैं।

प्रेमी : भगवान, आत्म निशचय में टिक नहीं पाते हैं।

भगवान : क्यों कि तुमने वो व्यंवहार नहीं किया है। हम आत्मा समझके व्यंहवार करते हैं, देह समझके व्यंवहार नहीं करते हैं। A-B-C-D, तू देह समझके व्यंवहार करता है तो कच्चा पक्का है। हमने कभी देह देखी नहीं हैं कि कौन है?

Contd.3.

प्रेमी : भगवान, मौह बहुत तंग कर रहा है?

भगवान : ये तुम जानते हैं तो ऐसी चीज़ क्यों रखी है अपने पास? अभी बताओ मोह किस किस से है? प्रेमी : भगवान, बेटे से ।

भगवान : सुख चाहिये? तो बेटा सुख देता है? वो जन्म से सुख नहीं देता है। देता है? हम बचपन से बोलते थे कि बेटी अच्छी है, वो ससुराल जाके बैठेगी, पर बेटा तंग करेगा। तुम बोलो मैं न्यारे हो गये हैं।

प्रेमी : भगवान, निर्भय निर्वैर नहीं हो पाते हैं?

भगवान : एक बात बताओ, एक भी आदिमी को कम प्यार किया तो तुम कभी भी अज्ञान से नहीं छुटेंगे। एक आदिमी को भी तुमने कम प्यार किया तो तुम कभी नहीं भगवान के घर में पास होंगे। कम प्यार,अपने से ज्यादा और बच्चों से भी ज्यादा, पति से भी ज्यादा। मेरा किसीसे भी प्यार कम नहीं है, इतने सभी हैं, इनसे पूछो, मेरा कम प्यार है किससे? मैं बोलते हैं कि मैं हमेशा ऐसे बैठके देखते हैं कि मेरा कोई दुश्मन नहीं है कि मैं उसको ज्यादा प्यार करूं,किसको छुपके फोन करूं... कुछ नहीं है।

प्रेमी : भगवान, शिकायत करने की आदत नहीं जाती है? कोई कुछ करते है तो जाके उसको बोल देते हैं?

भगवान : उनको जाके बोलो कि तुमने मेरा Treatment किया, मेरे अन्दर को खोला, अच्छा किया।

प्रेमी : भगवान, एक वचन दीजिये।

भगवान : सुना नहीं वचन? बोला न-हे अर्जुन सब मरे पड़े हैं।

प्रेमी : भगवान, निराकार कुछ नहीं करता है, गुरू सब तरफ से मदद करता है।

भगवान : नहीं निराकार ही सब करता है, गुरू नहीं।

भजन चला - अर्जुन से बोले एक रोज मोहन मदन।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

## 'शुक्राना'

ज्ञान का पहला सबक है *'शुक्राना'* और मुस्कराना। जुबान मिली है निराकार की महिमा और शुक्राना करने के लिये। सुबह को पलंग से उठते ही भगवान का शुक्राना मानो और कहो 'भगवान तू ही तो है' 'भगवान तू ही तो है', हमारे से क्या हुआ है, सृष्टि के मालिक तू ही तो है। तुम खाली दुख के समय भगवान को याद करते हैं, फरियाद करते हैं। माया ऐसी है, सुख के समय तो शुक्राने याद नहीं है। राजा तो राज्य में भी रोता है, फकीर मागंकर भी प्रसन्न है। राजा सदा सुखी है, पर एक भी दुख होगा तो भूल जायेगा, उस दुख की ही बात करेगा इसीलिये तुम्हें सदा शुक्राना याद रखना चाहिये,वो तुम भूल जाते हैं। मुझे तो निराकार हरदम याद है कि आज अभी आनंद खुशी में है, अपना भाग्य भला मानती हूं, आज की घड़ी सभागी, मेरी सोई हुई सुरत जागी। मैं सतचित आनंद स्वरूप हूं। सुबह से शाम तक शुक्राना करती हूं। सोने में नींद आ जाती है फिर सुबह सलामत उठती हूं। रात को भगवान पहरा देता है, तुंदरस्त हूं, सब दुनिया मुझे प्राप्त है, सब सुख २१/२ मुझे प्राप्त है। प्यास के Time पानी मिलता है, खाने के समय खाना। स्वांस आपे ही चलती है, सब दुनिया अपने समय में वरत रही है। चांद, सूर्य, पृथ्वी देवता मेरी नौकरी कर रहे हैं। बाग बगीचे सारी दुनिया खेलने के लिये है। पेट साफ़ होता है, पेशाब आता है सब शुक्राना मानना चाहिये।

लाखों सुख बस, रेलगाड़ी, ऐरोप्लेन, मोटर, कार, टेलीफोन, पोस्ट, आटोरिक्शा सब मेरी सुविधा के लिये एक मिनट मे मेरे पास आ जाते हैं। इतने सारे मज़े रोज ले रहे हैं, उसका मैं हर समय शुक्राना करती हूं। मुझे हरदम याद है पर तुम्हें शुक्राने भूले पड़े हैं। इसीलिये प्रभू भी भूला पड़ा है। प्रभू के सिवाय सब बातें, इच्छायें, सम्बंधी तुम्हें याद है, सब ने कबूल किया है कि बराबर सब सुख हमें मिलते हैं पर उनकी अच्छी बात या शुक्राना हम नहीं करते हैं। बाकी दुख की बात हम सबसे करते हैं, दिल में दुखी भी अपने को समझते हैं। सुख के समय शुक्राना कभी याद नहीं, इसीलिये भूल जाते हैं कि हम सुखी भी है। बस दुखों का भूत हमारे उपर असर करता है। विचार करो तो दुख तो कभी२ आता है बाकी सुख तो हमेशा ही है। इन्हीं सुखों का शुक्राना करें कि हम सुखी है। यदि हमने शुक्राना नहीं किया तो आज से, अभी से शुक्र करें। पहले इतने मिले हुए

सुखों का शुक्राना आज माने तो स्वभाव ऐसा बन जायेगा कि दुखों में भी शुक्राना निकलेगा। 'दुख दारू सुख रोग भया'। मैंने सबको कहा कि List लिखकर आओ कि तुमने किनते सुख भोगे हैं पर शुक्राना नहीं माना अभी मिलकर एक समय ही शुक्राना मानों तो अभी आनंद प्रगट हो जायेगा।

वैसे भी दुखों की List सुखों की List से कम है, रोजर आज सब खुशी में हूं अपना भाग्य उंचा मानता हूं, दख आ ही नही सकता है। खुशी माना आनंद वह है ब्रह्म। जब भगवान के शक्राने मानते हो तो याद रखो God can do no wrong। घड़ी इक विसरूं ....। मिनट मिनट भगवान का शुक्राना माने, भगवान तुम्हारे साथ है *"सदा बसत हम साथ"*। दृष्टांत : चिड़िया ने भगवान से कहा पेड लगाओ, उसको सात जन्म में पेड की छाया नहीं लिखी थी पर शुक्राने माने तो सात दिन में ही सात जन्म कट गये। भगवान हमेशा ही हमें गोद में बिठाकर रखते हैं।

*ओम*

## *'अपने पर आशिक होना'*

दुनिया में अपने को कितना प्यार किया है? तुम दूसरे को प्यार करते हो, उसकी रहिणी देखेंगे तो दूसरे में पड़े होंगे। खूद में टिको, दूसरे की अच्छाई, बुराई तुमको दिखने में आती है कि ये टिका हुआ है, ये नहीं टिका हुआ है। कोई टिका हुआ है तो वो तुमको अपना टिकना (निश्चय) दे देगा? आन्नद अपना देगा? सुख देगा अपना? शान्ति देगा अपनी निकालके। तुम कहते हैं ये टिका हुआ है मैं नहीं टिका हुआ हूं। माया माया को बढ़ाती है, हिम्मत हिम्मत को बढ़ाती है, प्यार प्यार को बढ़ाता है, निश्चय निश्चय को बढ़ाता है। अपनी आत्मा को भुलाके तुम दूसरे के गुण देखते हैं, दूसरे का कर्म देखते हैं, रोलू कुत्ता है, तो ये आदत गंदी है। A के गुण देखेंगे तो B के विकार देखेंगे। गुण कर्म बुद्धि से तू परे है, वो कैसे ? दो बुद्धि है - एक है देह बुद्धि - संश्य वुद्धि, दूसरी है निश्चय बुद्धि - आत्मिक बुद्धि। आत्मा बुद्धि से आत्म नेष्ठा होगी, देह बुद्धि से जगत पदार्थ सच समझ में आयेगा। वो बुद्धि Useless है जो देखती है कि ये टिका हुआ है, मैं नहीं, यह जानता है, मैं नहीं, इसको Lecture करने आता है मेरे को नहीं। कोई भी जब घर से आया, तो क्या जानता था? जो भी तुम आज है गुरू ने बनाया है। You have made me what I am today. जिसने आप को बनाया उसको भुलाके टकेर में अपने को बेच देते हो। तुमको अपने मूल्य का पता नहीं है कि तुम्हारा कौन सा मूल्य है? मूल्य को पहिचानो आज जो तुम अपने को निकमा समझते हैं, तो नास्तिक है, गंधा है, बेसमझ है। तुम अपने उपर आश्कि हो जाओ कि मेरी सब को ज़रूरत है, जब से गुरू की नज़र पड़ी है तो सब देखते हैं। वो अगर नहीं बनाते थे तो कौन देखता था? गुरू तुमने जिसके ऊपर नजर किया तो पनपता फलता फूलता है। अगर तुम Cut-Cut करेंगे तो गुरू भी Cut-Cut करेंगे, पीछे तुम किस काम का नहीं होगा। ना घर का ना घाट का। सारी दुनिया की सुन्दरता तुम गंवा देते हैं, टक्केर के सुख में जो दूसरे पर आश्कि होते हैं। जैसे कुत्ता कांटे में। हम खाली कांटा फेंकते हैं, कुत्ता कांटे में ही अपना खून पीता है, सो तुम अपना ही खून पी रहे हो, जो अपने को गिराते हो। तुम को गुरू हस्ती देता है, जो तुम कहाँ भी जाकर अपने से आन्नद ले सकते हो। अभी भी ले सकते हैं, पर मैं थक गये हैं जो तुम दूसरे के पीछे लटक रहे हैं। ना लेने वाला सुजाग है, ना देनेवाला सुजाग है।(सुख)

Contd.. 2.

तुम लोगों की आदत खाली खराब गलत है, एक खडे से निकलकर के दूसरे में पड़ना। प्रिय में प्रिय क्या है? घरवाले भी तुम्हारे से तृप्त होंगे तो तुम भी दुख सुख में आराम करेंगे, तो भागने की नहीं करेंगे, जागने की करेंगे। Totai घर में ही सुख है, चाहे बाहर का घर, चाहे शरीर का घर, चाहे आत्मा का घर। बाहर टोले सो भरम भुलाये।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

'नम्रता'

प्रेमी : भगवान, Situation में नम्रता नहीं निकलती है?

भगवान : भंगी है क्या? जमादार है क्या? Friend देखेंगे या औरत या बेटा देखेंगे, हम बोलते हैं तुम अपने बच्चों से इतना मज़ा नहीं लेते हैं, जितना हम लेते हैं। समदृष्टि के सिवाय प्रेम नहीं होता। तुम अलग-२ भाव से देखते हैं। हम दूसरे को नहीं देखेंगे, वो अपने को धोखा देवे या सुख देवे। जिसमें मन रखेंगे तो मरने के समय तुमको दुख होगा ना, पर प्रेम का सौदा करें। हमारा राग द्वेष है ही नहीं। आनन्द ही आनन्द है, शान्ति ही शान्ति है।

प्रेमी : भगवान, निभयता से नम्रता कैसे होवे?

भगवान : तुम इधर से नम्रता, निभयता सीखके जायेंगे, तो बोलेंगे कि ज्ञान में मेरा अपना कोई नहीं है, मेरे को परवाह नहीं है, मेरे को अपना आनन्द है, तो निभयता है, पर साथ में नम्रता भी है। वैसे कोई गुस्सा करे, प्यार ना करे,पर पहले प्यार करेंगे फिर गुस्सा करें।क्योंकि वो प्यार की आदत में आ जाता है। तो उसकी आदत कैसे निकालेंगे? कोई मतलब होगा तभी गुस्सा करेंगे, तुम खाली प्यार के लायक है, जो उम्मीद रखके आते हैं प्यार की।

प्रेमी : भगवान, Practical में इतनी नम्रता, प्यार से बात नहीं होती है?

भगवान : खाली होगा तभी होगा, अगर खाली नहीं है तुम, कोई भी अन्दर में भेद है, तो तू प्यार नहीं कर सकेगा, समझो दो सहेली इधर आती हैं तो हम उनको Cross करते हैं कि तुम अलग-२ निश्चय करो और वो अलग निश्चय करे। तुम अलग रास्ता पकड़ो, वो अलग रास्ता पकड़े, तभी तुमको ज्ञान होगा। दो से ज्ञान नहीं होता है। खाली होता है, भर जाता है और खाली नहीं है तो उसमें सेवा नहीं होती है। कौन खाली रहता है? कुछ न कुछ अन्दर पड़ा रहता है। तुम बोलते नम्रता नहीं होती है, फिर तो झूठ है, तू झूठी है। झूठा टिके ना कोई। नम्रता तो पहले करने की है। अज्ञान पहले निकालने का है, तो क्यों न हम झुक सके। हमारे से हुआ क्या है? हम तो कुत्ते को भी झुक सकते हैं। कुत्ते में भी वो ही है। मनुष्य में भी वो ही है। सब में वो ही है। हम तो झुक सकते हैं।

प्रेमी : भगवान, ये अच्छा लगा कि अगर नम्रता नहीं कर सकते तो अपने से पूछें क्या हुआ है तेरे से?

Contd... 2.

भगवान : मैं बात करती हूं, दुख होता है कि ये मनुष्य कैसे ऐसे सिर उचॉ करके चलता है। ऐसे सिर क्यों करता है? झुकते क्यों नहीं? झुकने से उठना है। मनुष्य मनुष्य को नहीं झुकता है, ये क्या बात है, जो सत् में हमारा लक्षण होवे। देवी देवता का तो लक्षण धारण करो। भगवान तो पीछे है, पर देवी देवता का लक्षण लिखा पड़ा है। दैवी सम्पर्दा वाला कैसे रहता है? सबकी भलाई में रहता है। गलत शब्द नहीं बोलता है।

*ओम*

'पुरूषार्थ'

जिस दिन से ज्ञान सुना तो उस दिन से मेरी Link गुरू से, गुरू की वाणी से जुड़ी रहे। तो Link ऐसे जोड़के और उपर हो जाओ, जो संसार और संसार की बातें हमको दिखे ही नहीं। यही सच्चा पुरूषार्थ है कि एक ही सच्चा रास्ता पकडना सत्गुरू का। निमत मात्र संसार चलेगा, पर Foundation है कि मैं वो रास्ता भगवान का पकड़ूं दूसरा ना पकड़ूं। सीधे रास्ते पर सिर्फ चलते चले। सब अभ्यास करना चाहिए, ए शरीर अभी तू ऐश करता है - अभी तू मरेगा तो क्या ऐश करेगा? जन्म मरण मिलेगा। तू पुरूषार्थ कर तो तुम्हारी वृति बहुत अच्छी होगी। पुरूषार्थ ही देव है।

प्रेमी : भगवान उत्तम जिज्ञासू के लिए क्या पुरूषार्थ है?

भगवान : वो सबको भलाई में रहता है, उत्तम जिज्ञासू सबको प्रेम करता है। किसी का सपने में भी विकार नहीं देखता है। वो सपने में भी जागता है। सपना आता है तो समझो अन्दर मन है, वो ही जन्म मरण का कारण है। तो क्यों न हम दिन में मन को नाश करें कि ये क्या देखा? कुछ भी सत् नहीं है। ऐसे दिन को तुम मन को नाश करते आओ, जो तुम्हारे में मन रहे ही नहीं, जो फिर रात को सपना आए।

प्रेमी : भगवान, पुरूषार्थ करने समय करतापन आ जाता है।

भगवान : करतापन के किसके लिए आता है? देखो तू कुछ नहीं कर सकता है, जो कुछ होता है उसके हुकुम से होना है, तू कुछ नहीं कर सकता है।

प्रेमी : सत्संग में लग्न बढ़ाने के लिए कौनसा पुरूषार्थ है?

भगवान : सब अभ्यास करना चाहिये कि ऐ शरीर तू क्यों ऐश करता है। वो शोक की बात है। मन को बताएं कि जन्म-२ में धक्का खाया है। मेरे में समाने का है तो बूंद बनो। ज्ञान के लिए पुरूषार्थ माना Be Still क्यों कि भगवान है Pathless Land तू भगवान को ढूंढने जाएगा तो कहीं भी नहीं मिलेगा, पाण दूर हो जाएगा। पर अगर अपने में ही जागेगा तो पुरूषार्थ कौनसा करेगा। हाथ की घड़ी को आईना लेके थोड़े देखना है, ऐसे ज्ञान के लिए क्या करना है, वो तो प्राप्त है।

प्रेमी : अक्षय आनन्द का क्या पुरूषार्थ है ?

भगवान : अक्षय आनन्द के लिए पूरा पुरूषार्थ है **'मैं ना'**। न इन्द्री के सुख न दुनिया के सुख, कोई भी सुख नहीं लेना है। मैं सुख स्वरूप होके सुख को क्यूं ढूंढूं?

प्रेमी : भगवान, कौनसा पुरूषार्थ है जो भगवान भक्त को याद करे।

भगवान : भक्त जभी तुम बनेंगे तो याद करेगा। तुम दूसरा देखेगा तो मैं याद कैसे करेगा? भक्त को तो चिंता नहीं कि भगवान मेरे को याद करता है या नहीं, सब कुत्ता दूसरा देखते हैं - कुत्तों को नींद नहीं आती है। मालिक भली जागे भी, तो भी कुत्ता पूरी रात सोता नहीं है, कि मालिक के पास चोर न आ जाए। तुम बताओ सारे दिन में तुम दूसरा देखते है या नहीं तो भक्त कैसे हुआ? भक्त सच्चा वो ही है जो भगवान के सिवाइ कुछ ना देखे। आज से ये Practice करो।

प्रेमी : भगवान, आप हमें मिले हैं ये हमारा पूर्व जन्म का फल है या पुरूषार्थ है?

भगवान : हम तुम्हें मिले पड़े थे, तुमने आखें अभी लिया है।

प्रेमी : भगवान, तुरिया पद में पहुंचने के लिए कौनसा पुरूषार्थ है?

भगवान : तुरिया पद तुमने देखा है कि किसको बोलते हैं? जब तक वाणी सुनना, बोलना बंद नहीं किया है, मौन नहीं किया है, याने ना वाणी सुनो ना सुनाओ पर मौन करो तो वो **'तुरिया पद'** है।

प्रेमी : गुरू के सिवाइ किसी ने सुखी नहीं किया है।

भगवान : सो वो ही तुम्हारा कर्म है, तुम्हारा ही जन्म है। एक को मनुष्य का जन्म दिया, एक को कुत्ते का जन्म दिया। तो तू हर जन्म में पुरूषार्थ करते करते उस जूणी से छूटता है। ये सब का पुरूषार्थ है। अभी कोई अच्छा आदमी है और कोई तो जान बूझकर भी पाप कमाता है।

प्रेमी : भगवान,सत्संग में शान्ती मिल रही है,आत्मा का निश्चय कैसे हो?

भगवान : सत्संग से उद्धार होता है। धीरे धीरे हमको Level आ जाती है। सत्संग महान है। सत्संग से सब फल मिलता है, जो भी चाहिए।

प्रेमी : सत्संग मीठा लगता है उसकी रक्षा के लिए कौनसी सावधानी रखनी चाहिए?

भगवान : As the company so the colour. जो सत्संगी होता है वो भी मेरे से उंचा हो। मेरे से नीचा होगा तो मैं उनको सुनाउं। ये नहीं कि वो कोई गल्त शब्द बोले या परचिन्तन करें, तो मैं उनसें बिल्कुल मिलने न जाउं।

Contd..3.

प्रेमी : भगवान, आप ने वाणी में कहा जिसका आखिरी जन्म हो वो ये दम लगा सकेगा, वासना काटने का। तो पुरूषार्थ से ये जन्म आखिरी नहीं हो सकता है?
भगवान :हंम जब ऐसे तीन किस्म के लोग बोलेंगे तभी तो Improvement करेंगे। कोई Born great है, किसी को योग भ्रष्ट को गुरू देता है, कोई इधर आके शुरू करता है। अगर शुरू करता है तो Double promotion हो सकती है। सब पुरूषार्थ से होता है।

*ओम*

'सत्गुर से प्रश्न-उत्तर'

प्रेमी : भगवान, आजकल मैं 'योग वशिष्ठ' पढ़ रहा हूं। पढ़ते-२ मेरा दिल उचाट हो गया है। सच में जगत से खटाई आती है, भागने को ही चाहता है, ये क्या है? क्या ये ही वैराग है भगवान।

भगवान : वैराग माना संसार से भागना नहीं है। यह भी अच्छा है जगत से खटाई आई है। सच और झूठ की परख चाहिए। किसी भी चीज़ में इच्छा ना रहे, पर किसी भी प्राणी मात्र से प्रेम बहुत बढ़े, किसी से भी द्वेष नहीं रहे। सब भगवान ही है। ब्रह्म ही ब्रह्म हर जगह समायो...। संसार से भागना नहीं है, सब में भगवान रखना है।

प्रेमी : सब कहते हैं कि माया बड़ी दुष्कर है, माया में रहकर कभी मुक्ति प्राप्त नहीं होगी। माया भुलाने वाली है।

भगवान : ऐसे ही तुम सादे लोग हैरान रह जाते हैं, लेकिन आत्मा याद नहीं है। अगर तुम आत्मा में है तो माया तुमको कभी भुला नहीं सकती। माया को सत्ता देनेवाला आत्मा में नहीं है। जब ऐसा अनुभव है - तुम सेठ होकर नौकर को Control में नहीं रखता है तो तुम लायक नहीं है। माया को सत्ता अज्ञानी देता है, मन देता है।

प्रेमी : भगवान, ब्रह्मकार वृति कैसे आये? उसका कोई साधन?

भगवान : तुम अपना मौत करो। हर बात में से आसक्ति निकालने की है।

प्रेमी :भगवान क्यों नहीं रोकता कि तुम चोरी नहीं करो,ठगी पाप नहीं करो!

भगवान : भगवान ने हर इन्सान को free छोड़ा है, तो कहाँ भागता है। भगवान पाचँ तत्व का शरीर बनाकर तुमको फेंक दिया है। तू शरीर में है तो गेंद की तरह नाचता रहेगा।

प्रेमी : भगवान से माफी मॉगनी चाहिए या नहीं।

भगवान : नहीं। तुम बोलो जो कुछ मेरे कर्मो से आया है वो धीरज रखकर क्यों न भोगूं? क्यों माफी मांगूं? क्यों इन्साफ मांगूं? एक शाहूकार और नोकर का दृष्टातँ.......।

प्रेमी : धृतराष्ट्र राजा के पास १०० बटेर अमानत रखकर गया, उसके रसोईये ने एक-२ करके राजा को खिला दिया, ऐसे में उसका कर्म बन गया। ऐसे तो सारे दिन में खाना खाते हैं, पानी पीते हैं, तो करोड़ो कर्म बनते हैं, उसके बारे में कृपा कर के ठीक-२ बतायें?

Contd..2

भगवान : अनजानाई में भी अगर हाथ से बीज गिर गया तो भी जिधर उग जाता है, कर्म का फल निकल आता है। परन्तु ज्ञान भया तो कर्म ही नाश। देह अध्यासी को कर्म का फल ज़रूर लगता है। देह अध्यास को छोड़ा तो आत्मा निर्लेप है। कर्म, सुकर्म से उसको क्या बन्धन। ज्ञान Catch किया तो तेरा अगला पिछला कर्म से मुक्ति है। पिछले पाप याद है क्या? जवाब दियो? भगवान ने सब से पूछा। कितने जनों ने कहा कि "हॉ भगवान"। एक ने कहा "मैं निश्चय में हूं"। मुझ आत्मा से कोई पाप कर्म, विकर्म नहीं हुआ है। भगवान ने कहा - तो बस।

प्रेमी : भगवान, आठों पहर समाधि में कैसे रहूं?

भगवान : (भगवान ने सबसे कहा) जवाब दो। किसी ने कहा - हाथ काम में दिल यार में, ऐसे निश्चय में रहें, और ने कहा - अपना सारा दिन भगवान में रहें। (पर भगवान को यह भी ठीक नहीं लगा।) एक ने कहा समबुद्धि में रहें कि भगवान ही है। वो ठीक है।

प्रेमी : भगवान, क़िसको help चाहिए तो help नहीं करनी चाहिए।

भगवान : तू इतना शक्ति वाला है तो करो help, पर help भी सच्ची होनी चाहिए। जो है ज्ञान धन। तू कब तक उसको पैसे का दान देता रहेगा। ये देखो- जहॉ दुनिया से फटे कपड़े कम्बल कितनी फालतू चीज़ें आती है। मेरे को दुख होता है जभी रास्ते में Leprosy वाले, लॅगड़े, लूले और गंदे फ़कीर भीख मॉगते रहते हैं और तेरे जैसे उनको चार आने देकर भिखारी बना रहे हैं। क्यों नहीं उनको Government पर छोड़ दें, जो समर्थ है उनका बन्दोबस्त करके ठिकाने लगाने के लिए। तुमने अन्धा देखा और पैसा दान किया, माना तू ने अपने कर्म बनाये। इसलिए तू आत्मा के धर्म में रहो। पैसे टक्के की मदद से तू ने किसी की सेवा नहीं की पर उसको भिखारी बनाने में मदद की।

प्रेमी : जगत मिथ्या और ब्रह्म सत् है,इसके बारे में कुछ रोशिनी डालिये।

भगवान : जगत और जगदीश दोनो अनादि है। मैं और मेरा साया दोनों अनादि है। मगर जगत और साया दोनों मिथ्या है।जगदीश और मैं सत्य है।

प्रेमी : भगवान हालत आवे तो ....... ।

भगवान : मैं कर्म करूं और हालत ना आये, सो कैसे होगा?

प्रेमी : To See God is to be God वो कैसे?

Contd. 3.

भगवान : तू अपने आप को देख़ नहीं सकता है तो जभी दूसरे की ऑखों में देखेंगे तभी अपने आप को देखेंगे।

प्रेमी : भगवान अपनी कोई वासना नहीं रहे, बस एक वचन दो कि अन्तकाल में कोई वासना ना जाये।

भगवान : ज्ञानी के लिये अन्तकाल आता ही नहीं।

प्रेमी : भगवान,कहते हैं बछरा बन के ज्ञान लेना है, सो कैसे ?

भगवान : पहले बछरा गाय का दूध निकालता है,फिर भी गाय माता सब के लिये दूध देती है, ऐसे ही जितने मुखी भगत जो भगवान के नज़दीक जाते हैं फिर भगवान ज्ञान की गंगा बहाते हैं।

प्रेमी : मैं सर्व से कैसे न्यारा रहूं?

भगवान : तू सर्व क्यों देखता है? तू ही सर्व है।

प्रेमी : रस कैसे छोड़ें?

भगवान : प्रभू ते भूलियॉ, व्यापन सभी रोग। मन में मॅथन चालू रहे।

प्रेमी : कभी-२ विकार निकल आता है, कोई उपाय?

भगवान : देह शरीर से नाता रखके बैठे हो तो क्या होगा? देह में तो है ही गंद। अन्दर में गंद है तो क्या Expect करते हो? गटर से कभी खुशबू निकल सकती है? तो यह गटर को बंद करना होगा जो गंद रहे ही नहीं।

प्रेमी : बोलते हैं जन्म-२ के संस्कार है।

भगवान : वो संस्कार अब खत्म हो गये, जब तूने गुरू की शरण लिया। अब तेरा नया जन्म हुआ। जब तलक तुमको ज्ञान नहीं था तब तलक तू अगले पिछले जन्म के संस्कार अनुसार चलता था, अब नहीं। अब जो निश्चय से गुरू भगवान की शरण लिया। अगले पिछले जन्म के सब संस्कार जल गये। अब से, ज्ञान की रोशिनी से, राह में खड़े clear दिखने में आने से,इमसे सावधान होकर कोई ऐसा वैसा कर्म होगा ही नहीं जो इस देह शरीर को कोई दाग लगे।

प्रेमी : ज्ञान भया तो कर्म ही नाश, कर्म काटे कैसे?

भगवान : ज्ञान की सीढ़ी चढ़कर सब कर्म कट जाते हैं। गल्त खाना, गल्त चलना, गल्त बोलना, गल्त रहना। सब कुछ सही-२ रास्ता मिल जाता है, क्योंकि शरीर एक रथ है, सत्संग में लेकर आता है, तीर्थ यात्रा होती है, क्यों कि इधर ही निराकार की Address मिलती है, महिमा होती है। सारा

Contd...4

Time निराकार ही निराकार मन में बैठता है। संसार के गल्त कर्म नाश हो जाते हैं।

प्रेमी : परीक्षा में जीतने का क्या उपाय है?

भगवान : सब के सामने मंदिर की मूर्ति जैसे लगो।

प्रेमी : भगवान ने दो मनुष्य क्यों बनाया?

भगवान : इसलिये कि एक दूसरे के सामने झुक सके। नम्रता से अमृत खरीद सकता है। एक अहंकार करेगा तो भी उसको नम्रता से जीत सकता है, उसका अहंकार हटा सकता है। कोई तुमको धिक्कार करता है, उसको भी प्यार करो। सर्व में पेखे भगवान।

प्रेमी : ईमानदार कौन है?

भगवान : १. एक भी शब्द गल्त ना बोले। २. अपने को सुधारे, दूसरे को नहीं। ३. अपने साथ ईमानदारी करे। गुरू भगवान को हमेशा हाज़िर नाज़िर जाने। ४. यह भूलाना है कि मैं कुछ हूं।

प्रेमी : परचिंतन से कैसे छूटें?

भगवान : तू मन को बोल तू मुखी है क्या? अनाज तो वो अपना खाता है फिर तू परचिंतन क्यों करता है? तूने दूसरे का कर्म विकार देखा तो तेरी भावी बन गई।

प्रेमी : भगवान से क्या मॉगें?

भगवान : सदा ही जो तेरे संग रहे, वो भले ही मॉगो, पर जो चीज़ हैं नाश्वंत वो क्यों मॉगने का।

प्रेमी : भगवान कभी-२ अभी भी विक्षेप आता है?

भगवान : तुमने विक्षेप का दरवाजा बंद नहीं किया है। मेरी Gift है मौन! "मौन है सोन"। सब को मेरा ईनाम है ये। ये मेरा वचन है। तू सारी दुनिया से मौन मे रहो॥ एक बार मौन होगा तो कोई तुम्हारे लिये नहीं बोलेगा कि इसने कुछ बोला। मौन! हमेशा के लिये मौन। मौन से कोई कर्म भी नहीं बनेगा। मौन ही सहज समाधि है। मौन में ज्ञान-पक्का होगा। जो कुछ अंदर चले उसे ज्ञान देकर हमेशा के लिये मौन। जो मौन में है वो संसार से बचा हुआ है। मौन वाले के लिये कोई भी नहीं कहेगा कि उसने यह बोला। सारे दिन में तुम्हारा एक शब्द भी फिज़ूल नहीं निकले।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

*'पैगम्बर की तपस्या'*

प्रेमी : आप अन्दर इतना खाली है उसके लिए आपने क्या तपस्या किया?

भगवान : देखो मैंने बताया न, जिस दिन ज्ञान सुना तो एक दम जगत की प्रलय हो गई, जगत रहा ही नहीं। किससे मिलें, किसको देखें, क्या करें, किससे कर्म करे, ये भी मेरी इच्छा हो जाएगी। फिर हम लेन देन नहीं करेंगे जैसे मेरा उसमें कर्म न बनें। किससे मेरा कर्म न बनें ये डर था। एक कर्म करके आए हैं, प्रारब्ध का भोगते हैं, सब फिर नया कर्म ये बनाते हैं। तो मेरे को ड़र होता है कि नया कर्म मेरे को बिलकुल नहीं बनाने का है। किससे न लेन देन, न शब्द का उनसे बोलना, कुछ भी नहीं। हमारे से कई लोग करते थे कुछ भी, पर हम उनको वापसी में कुछ नहीं बोलते थे। हम बोलते थे ये भी ठीक है, मंत्र था ठीक है।

प्रेमी : भगवान, आपने अभी बताया कि जिस दिन आपने ज्ञान सुना तो जगत की प्रलय हो गयी, जैसे कोई रहा ही नहीं, पर हमारे को चक्कर काटते-२ Time लगता है, हम ऐसे नहीं बोल सकते हैं कि कोई है ही नहीं हमारा।

भगवान : देखो न तुम्हारे लिये चक्कर है न। मेरा तो चक्कर ही नहीं था न, जगत में व्यवहार किया नहीं, नहीं तो हम क्या बोले? वो ही लोगों ने जभी मेरे को पूरा जान तो भगवान समझा आपे हीं-हमने नहीं बोला। फिर भी अभी हम मिलते नहीं है, आपनेवालों से। वो बोलते हैं कि हम दर्शन करने आयें, हम बोलते हैं नहीं करना। तुम जाकर अपना दर्शन करो। जिधर इतना दिन नहीं आए तो अभी भी तुम ऐसा करो। मतलब है कि अभी व्यवहार कैसे रखें? हमको किसी डर नहीं था, हम किसका खाते नहीं थे, देखते थे कि हम सहज में ही चलते हैं तो फिर लड़कियों से पूछते थे कि भगवान को कुछ लगा? तो ये बोलते थे कुछ नहीं हुआ-उपर सत्संग ही चला।

प्रेमी : भगवान पैगम्बर की तपस्या सुनते हैं तो लगता है वो स्वंय भगवान है, तो तपस्या कौनसी?

भगवान : पैगम्बर कोई आसमान से नहीं फेका गया, स्वंयभव ही उसकी नेष्ठा है।स्वंयभव शरीर नहीं है। नेष्ठा है कि भक्तो के उद्धार के लियें प्रघट

Contd. 2.

हुआ है, पर यह जो शरीर है उसका कहाँ तो जन्म हुआ। अभी हम माँ बाप के सिवाय आसमान से थोड़ी आए हैं। तुम बोलते हैं न कृष्ण देवकी का बेटा था। जन्म से थोड़ी भगवान थे पर जन्म से संस्कार अच्छे होते हैं। Born Great बोलते हैं, क्यों कि संस्कार अच्छे थे।

प्रेमी : भगवान, बताते हैं कृष्ण की माँ ने तीन लोक उसके मुख में देखा.

भगवान : यह सब लीला है, बढ़ा चढ़ा कर लिखते हैं, सच थोड़ी है।

प्रेमी : मतलब पैगम्बर की तपस्या होती है।

भगवान : तपस्या तो होती है न। मन की, वचन की, वाणी की, खाने पीने की, सोने की, सब किस्म की तपस्या होती है। जभी चढ़ जाता है फिर बोलता है अभी कुछ हुआ ही नहीं है। अभी जितनी हमारी तपस्या आई वो कहाँ से आई?

प्रेमी : पुरूषार्थ से।

भगवान : तो दुखो न पुरूषार्थ है, जादू थोड़ी है जो लकड़ी फिराई। कमाई किया न, गुरू वचन पालन किया न।

प्रेमी : आप के आर्कषण से आए भगवान।

भगवान : देखो ये आकर्षण भी तो तपस्या से आया, वैरागी मनुष्य में आकर्षण है जो किसी को खेंच सके। लाईट है न जो खेंचती है, बिजली Main Power से आती है।

प्रेमी :भगवान,ब्रह्म ज्ञान से पहले,आपकी मन इंद्रियाँ आप के वश में थी?

भगवान : Natural, जब जन्म लेते हैं वो थोड़ा बहुत तो रहता है न। संस्कार अच्छे रहते हैं, किसी को भी मन, वचन कर्म से दुखी नहीं करते हैं, पाप नहीं करते हैं, फिर पर उंचा चढ़ने के लिए तपस्या तो है ही है।

प्रेमी : आपने वो भी लीला की हमको दिखाने के लिए।

भगवान : अभी तुम नानक, Christ को देखेंगे, बोलेंगे हम ऐसे नहीं हो सकते हैं ना उम्मीद होते हैं, पर हमको देखके उम्मीद करते हैं, क्यों नहीं मैं इच्छा छोड़ सकता हूं, अहंकार छोड़ सकता हूं, क्यों नहीं सबको प्यार कर सकता हूं? तो गुरू तुम्हें दिखाता है कि Impossible को भी Possible कर सकते हैं।

प्रेमी : संस्कार हुआ मतलब जीव आत्मा है।

Contd.. 3.

भगवान : उंचा था न संस्कार। किसी जीव में इतने उंचे संस्कार हैं, मेरे को नहीं लगता है कि किसी को गलत शब्द ना वोलें। मैं माया को इकठ्ठी नहीं करता हूं, कोई है जिसने Life में एक भी गलत शब्द नहीं बोला होवे।

प्रेमी : जब-२गलत शब्द बोलते हैं तो पैगम्बर नहीं बन सकते हैं।

भगवान : ऐसा नहीं तो बन सकते हैं? पर इतनी Double मेहनत पुरूषार्थ करता है, तुम हिसाब करो, एक शब्द भी मेरा गलत निकलता हैं तो क्यों? एक गृहस्थी का पैसा कोई खां गया बोला यह कब देगा? हमने बोला उससे लेकर दूं, किसे खिलाएगा। बच्चे स्त्री को, वो तो तुम जो सारा दिन पैसा-२ करते हैं तो वो किसके लिए। सबको पैसे की हाय-२ है। जो खाली बच्चों को खिलाया तो जानवर हुआ। मुझे तुम्हारी इस बात पर दुख होता है।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

## 'अपने आप को प्यार करना'

प्रेमी : अपने आप को प्यार करने का मतलब क्या है?

भगवान : अभी मैं सारी दुनिया से तृप्त हूं, तू तृप्त नहीं है, कोई भी तृप्त नहीं है। कोई भी तृप्त नहीं है Full! कि मेरे को इस के बाद कुछ भी नहीं चाहिए। वो कौन करता है जभी प्यार किया है अपने को Full किया है, तभी, बाकी हम को चाहिए नहीं। समझो हम दुनिया के झंझटों में नहीं गये, तो अपने को प्यार किया ना। कर्म नहीं बनाया ये नहीं किया।

प्रेमी : आप की वाणी में था जो अपने आप को प्यार करेगा उस को किधर भी जाने की ज़रूरत नहीं है, Time Pass करने के लिए।

भगवान : वो तो अलग बात है ना, पर जो प्यार करता है कि I am full. तू अभी मेरे को कुछ नहीं देखेगा कि भगवान को ये ज़रूरत है। कुछ भी तुम बोलेंगे भगवान के लिए कौन सी Present लेकर जाउं? हम क्या करेंगे? Full है ना तो किस में ऑख ही नहीं जाती है। तू सारी दुनिया मेरे आगे रख, पर मेरे को अच्छा नहीं लगता है, जैसे पेट भरा पड़ा है।

प्रेमी : आज आप ने Clear किया कि अपने आप को प्यार करें।

भगवान : जेकर हम सब से Fit नहीं है तो तुम को इन से धोखा मिलता है, तो तुम ने अपने को प्यार किधर किया। समझो हम को धोखा भी मिले तो भी मैं खुश हूं। पर तुम को धोखा मिलता है तो तुम दुखी होता है, तो तुम ने अपने को प्यार किधर किया जो नाराज़ होगा। भगवान बोलता है: हे अर्जुन, अशोक रहो, शोक ना कर।

प्रेमी : वाणी में आया कि हृदय का प्यार हम अपने से नहीं करते हैं, इसको खोलिए ?

भगवान : अपने आप को प्यार करना माना Time पर हमारी क्रिया होनी चाहिए, ऐसा नहीं कि मेरे को ये भूला, ऐसे भूल नहीं होती है। तुम चाबी इधर रखेंगे तो ढूंढेंगे उधर, तो क्या? हृदय में तुम को आवाज़ आएगा कि इधर रखी है उठाओ, सब कुछ सहज हो जाएगा। जो हृदय से प्यार है सब से। तुम को कोई भी कुछ बोलेगा तो तुम बोलेंगे ये मेरे को ताना मारता है, पर ताना है ताम, खाने पीने की चीज़ है, रोज कुछ तो खाने को मिलता ना दुनिया से। **"ताना लोकन का ताम थी भायां"**। हम को तो मज़ा आता है ज ज्ञ

Contd. 2.

कोई मेरे लिए कुछ भी बोले, और भी बोले पर हमारा नाम तो मिटे ना। ये नाम इतना गंदा हो जाए जो बदबू ही आये तो कोई इस को देखे भी नहीं पर भगवान का नाम इतना सुगंधी वाला हो जाये जो सब आके अच्छी तरह से सुगध ले, तो भगवान में सुगंध है। इस झूठे नाम में तो दुर्गधं है तो तुम दुर्गधं को प्यार करता है, ये तो गटर का मल-मूत्र शरीर का नाम प्रगट हुआ।

*ओम*

'मरने मिटने पर'

आज़ादी है मन के राग द्वेष से, इसमें त्याग बहुत करना पड़ता है। उसमें Natural निईच्छा है। अपनी हस्ती गंवानी है कि एक-२ के आगे झुक सकें, मर सकें। मैं न चाहूं यह मेरे आगे मिटे। अपने को मार-मार कर मिट्टी करना है। इसीलिए भगवान ने साकार रूप धारण किया है जैसे सबके आगे शरीर झुके, ऐसे तो शरीर पापी नीच योनी है।

o हमेशा हारने का है।जीतने की इच्छा नहीं रखनी।वो ही जीतेगा जो सबके आगे झुक गया। तू झुकेगा तो अगले का विवेक जागेगा। Order न सीखें, आदर्श सीखें। कभी ये शब्द न बोलो-अभी कितना मरेंगे, कितना मिटेंगे,मैं ही झुकूं क्या?मैं निकली अर्थात मौत आया, पीछे जन्म मरण आया।

o जहॉ मैं निकले वहॉ दस ही नाखुनों का ज़ोर लगाके अपने को हटाओ।

o किसी के आधार पर माया छोड़ेंगे तो घरवालों को वासना की बांस आएगी कि यह दूसरे का आधार लेके मेरें को छोड़ रहा है। तो तुम्हारे Life में राग-द्वेष कभी ना छूटेगा। थोड़ा भी Life में द्वेष बचा तो कुत्ते का जन्म मिलेगा।

o जीतेज़ी मर जाओ। जीव तो फथकेगा मरने के टाईम तो आज ही क्यों न फथके। वो मरने का दिन तो आनेवाला है, फिर जन्म-२ नहीं फथकेगा। कितने जीव-जंतू जानवर देखो कैसे फथक-२ के मरते हैं। तो आज ही अहंकार का पर्दा उठाओ और मर जाओ।

o मनुष्य जन्म परीक्षा का साधन है, उसमें अगर पास नहीं हुए तो मूर्ख के मूर्ख है, इस मनुष्य जन्म का कदर नहीं किया तो ।

o तू मर तो जगत है ही नही। मैं नहीं हूं, भगवान है, जगत की बात छोड़ दे।

o प्रकृति है वो तो सेवा करती है। हर चीज़ काम में आती है,Useful है। यह शरीर ही है जो काम में नहीं आता। उसकी Ego छोड़ दो। यह Artificial खुशी है, खत्म होगी गुरू की मार खाने से। गुरू मार देता है तो बाकी लोग भी तुम्हारी इज्ज़त नहीं करते हैं तो तू Ego गंवाकर, निराकार से मिलकर एक हो जाता है। है ही वो। देह नहीं रही। फिर सब से Fit हो जाते हैं।जब फूल पूरा खत्म हो जाता है,तो उसका Essence रह जाता है।

Contd.2.

o सुरमा कूट-२ के, तब ऑख में पड़ता है, तो तुम्हें भी इतनी हस्ती गंवानी है, जो तू मरे मिटे, केवल भगवत्न ही रह जाए। फिर मरे हुए को कौन मारेगा। जीव भाव का पूरा बीज ही गल जाए। मुझे मरा हुआ आदमी पसंद है, जिसका शब्द मिटा हुआ होवे। जिसका शरीर जले तो पता भी न पड़े, शांती ही शांती। अहंकारी है तो मेरा उठना बैठना भी दूसरे की दिल को धड़कन देगा।

o हृदय में प्रभू प्रेम, करूणा, दर्द का खड्डा बनाओ, जिसमें भगवान का प्रेम अंदर टिके, जैसे बरसात का पानी किसी खड्डे मे टिकता है।

o लड़ना है अपने मन से, इच्छा से,अहंकार से, मन जो बाहर दौड़ता है। हम अपने में ऐसे बैठे जो मन कुछ कर ही ना सके। मरे हुए को कौन मारेगा? हमारे अन्दर Sense ही ना होवे जो औरो को रस ही ना आवे मेरे से। तुम बोलते हैं घुटन में कब तक? चुप भी कितना रहूं? कितना मरूं? जिज्ञासू है तो क्या Count करेगा? तू Accountant थोड़ी है। जो बोलता है इसके आगे कितना मरूं- मरा कौन?जो मुर्दा है तो उसको क्या भासेगा? तू तो मरा ही नहीं है। गुरू का है विचार, तुम्हारा है ख्याल। विचार से मगज़ खुलता है। अपनी चमाट अपने को नहीं लगती, गुरू ऐसी चमाट लगायेगा जो याद रहेगी। सारी Life की Reel मरने के समय सामने आयेगी, तो क्यों ना गुरू के चरणों में मरूं, जो सारी दुनिया सपना लगे। सपने को सपना समझके झूठ को Dissolve करो। गुरू की वाणी की मदद से निर्णय करो, कचरा निकालो। विचार का वचन अन्दर काम करता है। नया जीवन होगा, आनन्द आयेगा, यहीं मुक्ति है।

o हर एक सुख लेना चाहता है, पर मिटता कौन है? कुछ भी बनने की आदत है, इच्छा है, पर मिटने की आदत नहीं है जो शल मेरा नाम मिट जाए, गुम हो जाए। पुराने नाम से मुझे कोई न पहचाने। तुम अभी सूक्ष्म में जीते हो। जीते हुए नहीं रहो, है जीते जी मरना।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

*'गुरू भक्ति'*

प्रेमी : भगवान गुरू भक्ति को खोलिये कि किसको कहते हैं?

भगवान : दुनिया में एक भी भक्त सच्चा गुरूओं को नहीं है।इतना श्रद्धावाला नहीं है जो गुरू को देखकर उसका रूप हो जाए। अनन्य भक्ति एक-२ में आत्मा देखना और प्रेम करना। ये ही सच्ची अनन्य भक्ति है। रवाज़ी गुरू भक्ति सच्ची नहीं है, पर सत् के सिवाय रह न सको। एक-२ में राम रूप देखो तो प्यार करने में देरी नहीं लगेगी। औरत देखी, आदमी देखा, तो अनन्य भक्ति कैसे हुई? उस एक के सिवाय कोई है ही नहीं,है ही अल्लाह। बसकर-२ है ही ......। इतने रूप धारण करके आया है। अभी कौन सी ऑखों से दूसरा देखें? ऑखों में ज्योति उसकी है,ऑखों में से जो खिड़कियॉ है उनसे भी देखो कि कौन बैठके देख रहा है।शांत स्वरूप, ज्ञान स्वरूप कौन है? सूरदास को ऑखें नहीं है, तो भी अनुभव करता है कि ये स्त्री की आवाज़ है,ये पुरूष की आवाज़ है। जो सर्व में सतगुरू देखता है, उसने भक्ति किया। हम अपने से पूछें,हम सर्व में आत्मा देखते हैं? तुम बोलते हैं हम गीता पढ़ते हैं,तो किसको कम जास्ती कैसे देखते हैं? तुम्हारे से ये काम क्यों नहीं होता है? ये गुरू भक्ति क्यों नहीं होती है,जो सर्व में साईं देखो।

प्रेमी : सतुगुरू में आत्मा देखने में आती है, पर वो भाव सबके लिये नहीं रहता।

भगवान : वो तो हम हुए लोभी कि जिससे मिला उसे Return किया, जिससे हमको मिला उधर भगवान देखा पर जिनसे नहीं मिलता है उससे क्या करते हैं? जिधर Opposition मिलता है, Opposition में प्यार करना ही उन्नति है। Opposition में प्यार करना ही गुरू भक्ति है। जिनसे मिलता है, उनसे प्यार करते हैं, जिनसे नहीं मिलता है उनको आप दियो ना। एक जगह से लेकर सर्व में जाके बॉटो। प्रसाद नाम उसका है, जो बॉट के खाए। जैसे गुरू पूर्णिमा के दिन प्रसाद खाते हैं,ऐसे ही गुरू का ज्ञान प्रसाद है, वो लेके सर्व में बॉटे। वो कैसे बॉटे,कि आगेवाले को खातिरी होवे कि ये सब सतगुरू देखेते हैं। गुरू जभी हमको देते हैं तो हम उसको प्यार करते हैं, पर जभी कोई गाली देता है तो उसमें कैसे भगवान देखें? उन्नति किसमें है?

Contd. 2.

प्रेमी : हम कहते हैं इसका तो ऐसा Nature है, ये समझेगा ही नहीं।

भगवान : देर है भगवान के घर में, अंधेर नहीं है। बाकी हमारी वृति पदार्थ में भी जाती है, जगत में भी जाती है, इस उस में भी जाती है, तो हम भूल जाते हैं,क्यों कि यहॉ वहॉ मन है, तो वो विष्टा लेकर आएगा। मन जीता है तो वो लेकर भी आएगा। फिर भी मनुष्य इस मन को सत्ता देता है कि I am right. सत्ता क्यों देते हैं? मन का आवाज सनेंगे, गरू का नहीं। गुरू का आवाज सुनने में बहरे हैं, कि यहॉ गुरू क्या बोले? Second-Second में गुरू-२ करेंगे तभी बनेंगे। ये पाप है जो गुरू-२ नहीं करके, मैं-२ करूं। पीछे भूल होती ही रहेगी। तुम पता नहीं कैसे चलते हैं? एक मिन्ट भी गुरू भूला तो ये शरीर याद आयेगा। एक रहेगा, हम है तो तुम नाहीं, तुम है तो हम नाहीं। उसको ही Observe करना है। मेरे को ये अन्दर में आता है कि स्वार्थ गुरू से पूरा हुआ तो प्यार करते हैं पर इससे गालियॉ मिले तो प्यार करे ना।

प्रेमी : भगवान, गुरू भक्ति क्या है?

भगवान : गुरू की भक्ति है गुरू के वचन हृदय में रखना। चरण गुरू के धोय-२ पी...। यह भक्ति नहीं है कि गुरू के चरण धोके पीना। तो कौन सी भक्ति है। आज हमने गुरू के वचन हृदय में रखे हैं तो सब को कितना फायदा पड़ता है। आज लोग मेरे वचन लेके अपने को धो। जाते हैं, और Change feel करते हैं। गुरू के चरण माना वचन। वचन को हृदय में बसाए, न कि चरण। गुरू है वाणी, वाणी है गुरू। गुरू को देखकर खुशी होवे कि ये कैसे सत्संग करते हैं, मेरे योगी कहाॅ भी जाए, तो सब भक्तों को बिठाकर, ओम कहें, गीता पढ़े।

मेरे मुख से भी वो ही वचन निकले, जो भगवान की महिमा निकले। जैसे भगवान ने मेरे को तारा, ऐसे मैं भी भगवान की महिमा करते-२ सब को तारते आयें। गुरू जभी सब में देखवे तुम प्यार करेंगे न, तो गुरू भक्ति किया। गुरू ऐसा छोटा नहीं है ५ फीट का जो तू मुझको देखेगा।जभी तू सब में मेरे को देखेगा, तभी समझो तुमने मेरे को प्यार किया, भक्ति किया। Time पर किसको जरूरत है तो तुमने प्यार किया, ये है अनन्य भाव एक-२ में परमात्मा देखना और सबको प्यार करना। गुरू के वचन पर

Contd.3.

मरके मिटे। गुरू भक्ति ये नहीं कि गुरू के पांव धोना। सच्ची भक्ति ये है कि मैं उसका रूप हो जाउं, और उनकी वाणी अन्दर में अनुभव करूं कि ये कहां तक वाणी है, कहां तक रहणी है, कहां तक सहनी है। उनका अनुभव करे जो बोलते हैं ना कि गुरू भक्ति क्या करें? जैसे मीरा ने भक्ति किया, पहले तो बाहर देखा, आखिर जभी उसको गुरू मिला, पीछे बोला कि मैं ने अविनाशी वर पाया। पहले समझा कृष्ण मेरा भगवान है, फिर बोला अविनाशी मेरा भगवान है। जाग्रता आ गई ना उसको।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

*'जान छूटी लाखों पाए'*

वो दिन याद करो और आज का दिन याद करो, कितना फर्क है तुम्हारे में? तो वो फर्क कहाँ से आया? पहले दुनिया के नशे में थे, कि ये नसीब में है, माया लेना, पर्दाथ लेना। सब ठीक है,पर जैसे ऑख खुलती है, सपने से जागता है, तो बोलते हैं कि इसमें मेरे काम का क्या है? मेरे को कौनसी शांती मिलेगी? तुम समझते हैं इसमें शांती मिलेगी? ये ज़रूर देखना है कि एक आना मेरा भाई मेरे पर खर्च करेगा तों बोलेगा मैंने इतना खर्च किया इसके उपर। इतना मेरा इस बात पर विश्वास है कि घरवाले एक आना देकर बोलेंगे कि दस आना हुआ। कोई माफ नहीं करेगा कि मैंने नहीं किया। तभी तो ये संसार में सब एक दूसरे के गुलाम बने हैं। क्यों बने हैं? क्यों कि कोई भी देकर भूलता नहीं है। तुम बेटी को दहेज देंगे तो भी नहीं भूलते हैं। बाकी भाई तुमको देगा तो भूलेगा नहीं? माना तुम पाण लेते है ना। हम बोलते हैं लो उससे जो बिलकुल भूल जाए, कि मैंने कुछ दिया भी है,उसको लगे कि इसका था, इसको मिला। ऐसा कौन है? ऐसा कौन देता है? तुमने कभी Promise कराया है उसको कि मेरा हक है जो मेरे को देता है, या अपनी मजदूरी हमको देता है?

एक तो प्रारब्ध होती है, वो ठीक है. पर प्रारब्ध को भी काटने वाला ये ज्ञान है। तुम बोलते हैं सहज मिला सो दूध बराबर, हम बोलते हैं दिने दुखोया,अणदिन्हे राजी रहिया, दिया तो दुख हुआ,नहीं देते थे तो हम राज़ी हैं।समझो तुम अभी सोने की मोहर रखते हैं,तो मैं क्या खुश होंगे? क्या करेंगे हम?कौनसा जेवर पहनेंगे?कौन सा घर बनायेंगे?जिस को घर रखना है वो बना रहे हैं,जिसको बनाना है वो बना रहे हैं'मेरा की '। इधर तो सब Readymade होता है। मेरा तो कोई मतलब ही नहीं होता इन बातों से।ये खाली याद रखो कि जान छूटी तो लाखें पाए।जो समझो कोई हमको पैसे से बांधे तो हम बंधन में नहीं आएंगे? हम बोलेंगे-ठीक है। तुमने बोला,हमने लिया-अभी ये तुम्हारा है। वो होशियार है जो बोले,इससे मेरा क्या होगा? पर जो अज्ञानी है उसको दिलका दिलासा है माया का,भगवान नहीं।देखो तुमको माया आये तुम Refuse करो,देखोतुमको हिम्मत है Refuse करने की? हमारे पास कोई लेकर भी नहीं आएगा। बोलेगा भी नहीं,खाली बोलेंगे कि कोई सेवा होवे तो बताना। हम बोलेंगे,जभी होगी तभी बतायेंगे। अगर हम Cut Cut Cut Cut Cut करेंगे, तभी निज स्वरूप में आयेंगे। *ओम*

## 'प्रवृति-निवृति'

प्रेमी : भगवान, प्रवृत्ति में निवृत्त कैसे होवें?

भगवान : पूरन ज्ञानी प्रवृत्त होते हुए भी उसमें शंका नहीं रखना कि ये प्रवृत्त क्यों होता है? तुम्हारी प्रवृत्ति सच है, ज्ञानी की प्रवृत्ति मिथ्या है। तुम लड्डू नहीं खाओ कि मैं प्रवृत्त होके न्यारा कैसे रहूं। तू अज्ञान में बैठा है तो न्यारा कैसे रहेगा? जो ज्ञान में है वो न्यारा है। जभी इतनी स्थति अपनी बनाके रखे तभी प्रवृत्ति का असर नहीं होता है। जभी माया सत् मानते है, सोना मिट्टी सत् लगता है, जगत सत् लगता है, लोक वासना भी है, देह वासना भी है, तब उसकी प्रवृत्ति निवृत्ति कैसे होगी? आपे ही अपने को शाबास देते हैं। अभी प्रवृत हूं, निवृत्त कैसे होउं? वो तो ज्ञानी के लिये बोलते हैं-शंका नहीं रखो इतनी प्रवृत्ति में वो कैसे Be Still, शांत, मौन, गम्भीर है। जैसे इसके अन्दर जगत जगत ही नहीं है। जगत अन्दर नहीं है, तभी Be Still है।

प्रेमी : भगवान, आप की वाणी से अन्दर हिल गया, अब आप को निवृत्त करना पड़ेगा।

भगवान : निवृत्त मेरा ख्याल होगा, निवृत्त मेरी Body थोड़ी होगी। Body मेरी कहाँ भी है मैं निवृत्त हूं। चाहे यहां है या वहाँ भी है । एक लड़की ने मेरे को दिल्ली में कहा जैसे आप दिल्ली में बैठे हैं, कोई वाणी नहीं, कर्म नहीं, बात नहीं, शब्द नहीं, ऐसे Bombay हम देखेगा वो आई मेरे को उसने शरणागति में देखा, कौन सी मेरी बात है, कर्म है, क्रिया है, लेन देन है, तुम Inquiry करो, वो चुप हो गई। बोली मैं Fail हो गई।

सत् पुरूष अपने में ही गुम रहते हैं तो हालतें ऐसे ही बीत जाती हैं. जैसे सपने की बात हुई। सपने में भी कई बातें आती हैं तो जागने के बाद सब खलास हो जाती है। ऐसे आत्म जागृति में सब कुछ मिथ्या है। इसलिए आत्मा का ज्ञान सब की निवृत्ति कराता है। पीछे प्रवृत्ति तो रहती नहीं। जो तुमको व्यवहार लगता है उसमें तुम भी सच्चे नहीं, जो सौदा करे सच का। सच क्या है? सच बात करना सच नहीं है, पर अपना देह अध्यास छोड़ना ही सच है। अपना अहंकार छोड़ना,किधर भी बनना नहीं, ये सच है।

प्रेमी : भगवान, आप की Point है प्रवृत्ति तुम्हारी कृपा है, निवृत्ति गुरू की कृपा से होती है।

Contd..2

भगवान : प्रवृत्ति अपने घर में है। हर चीज़ में तुम प्रवृत्त होते हो, कर्म करते हो, तो उसमें ही गुम हो जाते हो। अभी निवृत्ति चाहिये जो घर में रहते हुए भी न्यारे होके रहें। जैसे भजन बोलते है "बाहॅ से पकड़के मेरे को तारेंगे...।" वो कौन निकाल सकता है? वो खुद निकलके बैठा हो। दुनिया में जो खुद ही दल दल में है, वो कैसे निकालेगा? दुनिया में कोई गुरू माया रहित नहीं है। उनके पास कुछ भी लेके जाओ, उनके शिष्य ऐसे लेते हैं जैसे मूर्ख होय, इधर सब Full Spunge, नाक तक तृप्त है। किसी को किसी से कुछ चाहिये ही नहीं, ये नहीं कि सहज मिला सो दूध बराबर। पर मिले कुछ भी तो कष्ट होवे! तुम्हारी (जिज्ञासु) की हालत ऐसी होवे कि क्या करूं तेरी वैकुंठ को जित साध संगत नहीं होये। वो वैंकुठ स्वर्ग नहीं है, जिसको तुम स्वर्ग समझते हो, पर जहाँ परमात्मा का राज्य है, वो ही स्वर्ग है, जहाँ दुनिया का सुख है वो नर्क है।

ममता का मैल तुमने रखा है तो समता कैसे आयेगी? मेरा मेरा करके ऐसे ही मर जायेंगे, तुम समान दृष्टि में नहीं आते हैं तो औरों की भलाई कैसे करेंगे? जो तुम मेरे मेरे में पड़े है, जिनको तुम अपनी जान करके देखते हैं, तो तुम समता में आ ही नहीं सकते। मैं कोई एक भी अपना रखेंगे, ये मेरी बहन है, ये मेरी बेटी है, ये मेरा शिष्य है, तो मेरा Love बन्धन हो जाएगा। तो ममता में समता नहीं आएगी। छूट जाएगी। गुरू जी मेरी ममता काटो। इधर कोई योगी संकल्प करता है कि मेरा सब कुछ भगवान का हो जाए तो वो निष्काम में ही जाता है। तो देखो अच्छी भावना से ममता Cut जो गई। अभी देखो ये प्रवृत्ति से निवृत्ति में आ गये। इस जैसा सन्यासी कोई नहीं है, जो जीते जी इसने मौत खरीद किया। प्रवृत्त में निवृत्त इसको बोलते हैं, तो गुरू ने निवृत्त किया न। जो अभी आराम में बैठा है। तो कोई-२ संकल्प करता है कि मेरा सब कुछ सत्संग के हवाले हो जाए। जो सब का हो गया वो भगवान का हो गया। जो भगवान का हुआ वो सब का Family Member है। जात हमारी आत्मा.....।

प्रेमी : भगवान ये बात समझ में आई कि ज्ञानी कैसे प्रवृत्त में निवृत्त रहता है।

भगवान : ज्ञानी चाहे Action करे या न करे सो स्वार्थ के बिगेर है, उसकी प्रवृत्ति निवृत्ति अलग नहीं है, तुमको भसता है मैं प्रवृत्ति मे हूं तो निवृत्त कब होंगे? उसमें छुटकारे की तो बात ही नहीं है।

Contd.3.

ये भी नहीं कहेंगे मेरे को तेरे से कब छुटकारा मिलेगा? पर मैं तो पहले से ही छूटा पड़ा हूं। मेरे लिये प्रवृत्त निवृत्त है ही नहीं, आत्मा ही आत्मा है, तो छुटकारा है। सारा दिन सेवा मे सब हालत भी चली जाती है।

प्रेमी : प्रवृत्ति से निवृत्ति में कैसे आएं?

भगवान : प्रवृत्ति जो है वो है संसार, उसमें से निवृत्ति से निकले हैं। नहीं तो घर गृहस्थी में फंस जाए, फिर सब छोड़ देंगे जो तुमको पसंद होते, प्रवृत्ति से वैराग लिया।

प्रेमी : हम निवृत्ति के लिये क्या करें?

भगवान:निवृत्ति हो जाती है, जभी ज्ञान अन्दर आता है तो Automatically कर्म छूट जाते हैं। करेंगे तो भी अहंकार आएगा।, छोड़ेंगे तो भी अहंकार आएगा तुम बोलेंगे शादी में नहीं गई,उधर नहीं पहुंची ये कौन बोलता है? हमारा ज्ञान Normal Natural है, सहज है, राज योग है।

प्रेमी : प्रवृत्ति में निवृत्ति को समझाइये।

भगवान : हम प्रवृत्त होते हुए भी निवृत्ति का अनुभव करते हैं। प्रवृत्त होते हुए निवृत्ति में है। समझो जन्म लीया गृहस्थ में प्रारब्ध लेके आए अभी भागा तो किस लिये भागा? जागा क्यों नहीं? अभी समझो एक अज्ञान से न उतरे हो, तो दूसरे का अज्ञान कैसे जाने? माया से न गुजरे हो, समझो born grate हैं, संस्कार अच्छे हैं तो भी माया से गुज़रना पड़ता है सब को। जब पूरा ज्ञान अन्दर जाएगा, पूरा दर्द गुरू के लिये होगा तब दूसरे की भी भलाई होगी। जभी दर्द लगे तभी निवृत्ति होगी। वो ही है भगवान जो पराया दर्द जाने, सच्ची तरह से, जैसे मेरा सिकीलधा बैटा है तो कितनी लगन से प्यार करेंगे? सेवा करेंगे?

प्रेमी : भगवान प्रवृत्ति में निवृत्ति को और खोलिये?

भगवान : तू प्रम स्वरूप हो जा। ये नहीं बोलो कि ये माया है ये भगवान है, ये ठिक्कर है, ये पत्थर है। ठिक्कर पत्थर छोड़ो। तुम बस प्रेम का रूप हो जाओ। जो सामने आए तुम प्रेम करो, Enjoy करो। कोई भी Scenery आए Enjoy करो। बाकी कुछ है ही नहीं। संसार तो है धुएं का पहाड़, धुएं के पहाड़ को कैसे पकड़ेंगे। पकड़ेंगे या नहीं पकड़ेंगे, है तो धुएं का पहाड़। उसको क्या पकड़ेंगे और क्या छोड़ेंगे? ऐसे देखो संसार माना धुएं का पहाड़।

ओम

## 'मूर्ति कैसे बने'

माली कितनी Garden की Cutting करता है, तो Garden की सुंदरता बढ़ती है। तुमने किसको बोला है मेरी Cutting कर। तुम्हारी थोड़ी भी भूल होवे, थोड़ा भी अज्ञान बढ़े, तो तुम एकदम आके सच बताओ। जैसे-२ भगवान Cutting करेगा, तो तुम्हारी सुंदरता निकलेगी। इस से दुनिया में सब कहेंगे, कौन से गुरू के पास जाते हो जो ये इतना सत्य सरलता में हो, इससे हमको सर्वसे प्रेम, सेवा मिलेगी, कभी धोखा नहीं मिलेगा। अज्ञानी कोई उल्टा भी बोले, पर तम्हें सीधा जवाब देना है, जैसे वो भूल ना करे। अगर वो भूल करता है, तो तुम्हारे उपर दोष है। दूसरे को हम कर्म करने (बनाने) ना दे, ना कर्म देखें। इतना हम गुम हो जाएं। अन्दर बाहर तुम्हारी शुद्धता होवे तो तुम्हारा चेहरा मूर्ति की तरह चमकेगा।

**मैं जो चाहूं, वैसा ना होवे, तो ये है Cutting** इस शरीर की, शरीर रूपी Garden की।

(1) मैं चाहता हूं मेरे से कोई मुस्कराए तो सही, पर ज़रूरी है क्या वो तुझे देखकर मुस्कराए।

(2) मैं चाहता हूं मेरी कोई चादर सीधी करके डाले, पर वो भले उल्टी करे।

(3) मैं चाहता हूं मेरी कोई सेवा करे, पर भले वो आराम करे।

(4) मैं चाहता हूं कोई मुझे प्यार करे, पर वो भले मुझे देखे भी नहीं।

(5) मैं चाहता हूं कोई मेरे को घुमाने लेके जाए, पर वो भले बिना बताए कहीं भी घूमने चला जाए पर मेरे चहरे पर गुंज न हो।

(6) मैं चाहता हूं कोई मेरे लिए शुद्ध और अच्छा संकल्प करे, पर भले वो विकल्प करे।

(7) मैं चाहता हूं कोई मेरे से अच्छा चले, पर भले वो मेरे से बुरा चले।

(8) मैं चाहता हूं कोई भी मेरी बेइज्ज़ती ना करे, पर वो लाख बार बेइज्ज़ती करे।

(9) मैं चाहता हूं मुझे सुख मिले पर भले वह मुझे सुख/न दे, दुख ही दुख दे।

(10) मैं चाहता हूं, मैं Strong बनकर रहूं, पर भले मुझे सब Weak बनाए।

(11) मैं चाहता हूं चीज़ ठीक बने पर भले कुछ भी ठीक ना बने।

(12) मैं चाहता हूं सेवाधारी जल्दी आए, पर भले वो देर से आए।

Contd. 2.

(13) मैं चाहता हूं कोई मुझे प्यार से समझाए, पर वा भले मुझसे तीखा बोले।

(14) मैं चाहता हूं घर साफ सुंदर रहे, पर भले वो टेढ़ा मेढ़ा करके घर को बिगाड़ दे।

(15) मैं चाहता हूं यह जल्दी सोये, पर वह भले देर से सोये।

(16) मैं चाहता हूं बच्चे पढ़ाई करें, पर वो भले मौज मस्ती करे।

(17) मैं चाहता हूं वो खर्चा कम करे, पर भले वा ज्यादा खर्च करे।

(18) मैं चाहता हूं मेरे को सब Value दें, पर भले वो Value ना दें।

तभी मूर्ति बनेंगे जब इतनी सारी Cutting होगी।

*ओम*

'अनन्य भक्ति'

प्रेमी : अनन्य भक्ति कैसे बढ़े जो दुनिया से बिलकुल Detach हो जाएँ?

भगवान : एक-२ में परमात्मा देखो तो भक्ति हो जाएगी। गीता में बोलता है कि हे अर्जुन तुमको अनन्य भक्ति करना चाहिए, अनन्य माना एक-२ में परमात्मा देखके उसको प्यार करो, सेवा करो। एक-२ में राग-द्वेष पहले खत्म करो। राग-द्वेष होता है ना कि ये अच्छा है, ये बुरा है। राग-द्वेष पहले मेरे मन में है नहीं, तभी हमारे में अनन्य भक्ति होगी, पर जे मेरे मन में राग द्वेष है कि ये छोटा है, ये बड़ा है, ये अच्छा है, ये बुरा है फिर भक्ति नहीं होगी। मेरे से राग-द्वेष नहीं होवे और समता भाव होवे, तभी हम प्यार कर सकते हैं। पहले ये काम करो, छोटी-२ मोह-ममता, इच्छा-वासना, अपने से दूर करो, अपने से वो निकालो। मोह-ममता, इच्छा-वासना, द्वेत-द्वेष ये छोड़ने का है। पहले सतसंग माना क्या? सतसंग माना अन्दर से खाली होना कि मेरे को किसके लिए राग-द्वेष नहीं है। मेरे को मोह-ममता नहीं है। सब मेरा ही रूप है। ऐसे क्रैसे अनन्य भक्ति होगी? तू भक्ति चाहता है। चाह भली, पर कैसे चाहता है? जभी तू खाली नहीं है तो कोई न कोई विग्न आकर पड़ेगा भक्ति में भी। तुम जो भक्ति करते हैं तो भक्ति नहीं करते हैं, तुम किसको आगे रखकर प्यार करते हैं। हम जो सामने आता है उसको प्यार करता हैं, तो सब भगवान का रूप है। हम Particular किसी कृष्ण की, नानिक की भक्ति नहीं करेंगे पर सर्वज्ञ घट-घट वासी परमात्मा है तो एक-२ में वो देखेंगे तो प्यार हो जाएगा।आज समझा भक्ति इसको बोलते हैं। लोग जो भक्ति करते हैं, ठाकुर रखते हैं, आरती करते हैं, ये तो खिलौनों से संबंध किया, बच्चे जैसे खिलौना बनाते हैं, वो तुम खिलोनों के सामने बैठके उसका ध्यान किया, आरती किया, अरदास किया, सब किया पर जभी चलते-फिरते, अन्दर में, बाहर में, सब में वो साई दिखे तो जैसे मेर किसी से भी Face ऐसा नहीं होवे, राग-द्वेष ना होवे। एक रस Face करो कि हम तृप्त हैं, शांत है, मौन है, पहले तो हमको तृप्ती होनी चाहिए, दुनिया की इच्छा वासना लगी पड़ी है तो आदमी भक्ति कैसे करेगा, तृप्ती होवे ना। Full spunge है कि भगवान से हम को सब कुछ मिला है पुष्पम, पत्रम्, फलम्, तोयम। शरीर है पत्र, फूल है मन वो उनके उपर चढ़ाने का है कि मन मेरा तेरा है, तेरा मन मेरा है। तू मैं हूं, मैं तू है।

Contd.2.

पुष्प-फूल ये नहीं कि हम मूर्ति पर जाकर डालें, पर शरीर पत्र है, पुष्प अहंकार है, मन है, पर जो भी कर्म हमारे से अच्छा बुरा होवे तो भगवान के निमित है। मैं नहीं करने वाला हूं, जो मेरे को फल की इच्छा होवे। करने वाला कराता है तो वो होता है। मैं थोड़ी कर्ता हूं, मैं करेगा तो मुश्किल हो जायेगी, कर्तापना निकल आएगा, उससे कर्म बनेगा, दुनिया में एक भी अज्ञानी नहीं है जो सारा दिन कर्म न बनाये, मन में कुत्ता बिल्ला मारता है। संकल्प विकल्प चलता है। Non-stop thought parade चलती है। तो वो किधर जायेगा ख्याल? ज़रूर कोई ना कोई कर्म बनायेगा। तुमको कभी डर होता है कि मैं कर्म ना बनाउं, द्वूत ना करूं जो कर्म बनें। उहे करूं ही ना जो कर्म बने। कर्म की बड़ी Mystery है, सब कर्म में हे अर्जुन दोष है। अच्छा वो क्यों बोलता है कि सब कर्म में दोष है, निर्दोष फक्त आत्मा है। हम बोलते हैं तुमको करोड़ रूपये हैं, अभी तुम कौनसा सतकर्म करेंगे? है कोई सतकर्म?

ओम

# 'ATTACH -DETACH'

## 'समता योग'

पहले Attach है फिर Detach है फिर समता योग है, बीच में स्थिति आती है वैराग की, फिर वो देखते हैं कि ये तो Same है। हमारा प्यार कहाँ जाएगा, हमारी मुहोब्बत कहाँ जाएगी, ये तुम देखो। हमारा त्याग भी होवे, वैराग भी होवे, बात भी ना होवे, लेन देन भी ना करे, कुछ ना करें, पर सामने जो आता है, हम प्यार करते हैं, तो उसमें भी वो बन जाता है, अभी उनका दुख मिटेगा ना। जो बीच में अवस्था आयी वैराग की! जभी हम को Detach होने का था, Attach फिर Detach फिर समता योग। हम तुम को बताते हैं कि तुम अच्छी तरह से ज्ञान समझो कि Attach Detach समता योग, ऐसे ज़रूर होगा! Attach भी है पहले, मोह भी है सबसे, फिर Detach भी है ज्ञान से वैराग आ जाता है कि ये भी क्या-४। फिर आता है समता योग कि अभी मैं अपना पराया किसको देखूं, ये मेरा अपना है, ये पराया है, ये अच्छा है, ये बुरा है, ये क्यूं मैं देखूं। समता का Part पीछे होता है, पहले Attach फिर Detach पीछे समता।

प्रेमी : समता आने पर शांति आती है, नहीं तो अपना पराया दिखता है।

भगवान : नहीं, पर मन में खोट होती है कि हम को उनसे नहीं बात करना है क्यों कि मौह की बात करेगा, ये इच्छा की बात करेगा, ये अहंकार की बात करेगा। हमको ही नहीं पसंद आता है। घरवालों के लिए खेंच होती है वो भी एक किसम का प्यार होता है कि इससे भी मैं नफरत क्यों करूं, तो ये ज़रूरी है Attach - Detach समता। अपने अंदर थरमामीटर डालना है कि इतना Attach हुआ, फिर इतना Detach किया, फिर कितना समता योग में आ गया। पर No Action! सभी घरवालों से भी समता है, पर Action कोई नहीं है, सिवाय मुस्कराने के कुछ जानता नहीं है। ये नहीं है कि तुम फिर लेन देन करेंगे, आना जाना करेंगे, तू मां करेंगे, नहीं खाली शांती है बस।

प्रेमी : भगवान ये बात बहुत समझने की है कि समता योग में फिर कोई लेन देन नहीं, Action नहीं।

भगवान : सब का मगज़ जो है ना वो Down है तो हम इधर से ही उनका मगज़ ठीक करते हैं कि अभी तुम ऐसे चलना। अपनी छट्टी कोई नहीं

Contd. 2.

जॉचता कि अपनी Life में मैंने पहले प्यार कितना किया? मोह कितना किया? विकार कौन सा किया? किसको कैसे ठगा? क्या-२ किया? अपनी छट्ठी जो है वो लिखना चाहिए और अभी मेरे को क्या फर्क हुआ है ज्ञान से, ज्ञान से कितना फर्क होता है ये अभी छट्ठी लिखो।'

प्रेमी : जभी हम Detach होते हैं तो सामने वाले को Feel होता है तभी हमको भी अच्छा नहीं लगता है।

**भगवान :** ये तो सच्ची बात है क्यों कि मोह है। मैं बोलते हैं कि वो दुखी ना होवे, इसका मतलब Detach हुआ ही नहीं। झूठ में Detach हुई। फिर जभी सामने वाले की शकल देखो तो Detach हुई नहीं। खूद ही दुखी हो जाएँगे। सरल बात थोड़ी है कि Attach से Detach बने फिर समता में आयें, ये तो लगातार पुरूषार्थ है जो कोई उसमें आदमी गुम हो जाएगा। बाकी Attach होना तो सरल है, वो तो शहद है। Attach माना तुमको कोई बोले कि तुम मेरी सहेली बनो तो लेन देन करेंगे, आना जाना करेंगे, मनोरंजन करेंगे, परचिंतन करेंगे, वो खुश हो जाएंगे। Attach में यह सुख है। पर जभी Detach हम करते हैं उन से तो वो हमारे से नफरत करेंगे, गाली भी देंगे, अभी क्या समझती है अपने को, अभी ऐसा, अभी वैसा। Detach होने में तकलीफ है, Attach होने में तकलीफ नहीं है। अभी जाके सबसे Attach हो जाओ, सब खुश हो जायेंगे।.

प्रेमी : भगवान वो Detach ही हैं, हम Attach हो जाते हैं।

भगवान : कुछ भी है, वो Detach है या नहीं है, वो भी तू बोलती है कि Detach है, क्यों कि तू समझती है कि मेरे जैसा मोह उसमें नहीं है, पर उसका मोह छुपेला है। तुम्हारा मोह बाहर से है तो तू समझती है कि इसको मोह नहीं है। हमको कितने ही सतकर्मी बोलते ळे कि हमारा मोह नहीं है, पर यह सच्ची बात नहीं है। 'मेरा' है तो मोह है। 'मेरा' नहीं है तो मोह नहीं है, मेरेपन में ही दुख है कि किसको बोलूं ना कि तू मेरा बेटा है तो उसको मोह हो जाता है। मैं नहीं मानूं कि ये बोले मेरा मोह नहीं है, अन्दर की बात है। बाहर से कितने लोग पहले छोड़के आते थे, किसी ने घर छोड़ा, किसी ने बेटा छोड़ा, बाहर से छोड़ा, पर इधर से थोड़ी ममता गई। फिर अज्ञान वस होके फिर उनसे ही जाके मोह करते हैं। तो कभी ना कोई बोले कि मेरा मोह नहीं है, तो क्या है? घर में तो रहते हैं मेरा-२

Contd. 3.

बोलते हैं, या तो ऐसा रास्ता होवे जैसे मेरा पड़ोसी से नहीं है तो मेरे बेटे से भी नहीं है। किसी से भी नहीं हे। उनका दुख थोड़ी मेरे को लगेगा। अभी Building में कितने लोग दुखी भी होंगे पर मेरे को मालूम नहीं है कि ये दखी है या सुखी है पर अपने घर में दुखी होगा तो वो याद-आएगा। उनकी चिंता होती है तो ये झूठ है कि कोई मेरे को बोले कि मेरा मोह नहीं है तो मैं नहीं मानूं। खाली कुत्ता पालते हैं तो भी रोते हैं जभी वो मरता है। बिल्ली भी मरती है तो रोते हैं, तोता पिंजरे में बैठा है, टां-टां करता है उसमें भी मोह है। ये क्या है?

प्रेमी : आपने कहा अज्ञान के वश मोह करते हैं?

**भगवान :** अज्ञान है या नहीं है, पर ये कुदरत ऐसी है जिसको मैं ने 'मेरा' बोला मैं भी फंस गया, वो भी फंस गया, मेरे में ही दुख है, बाकी किसमें दुख नहीं है। मैं बोलते हैं ना, आज पड़ोस में भी है कोई 'मेरा' मैंने बोला, या लगातार Connection उनसे रखा तो दुखी होंगे। जिसने जितना मोह किया उतना दुखी हैं।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद 10-02-1999.

'अद्वेत मत' [37]

Own में हैं तो निश्चय में है ना, जे द्वैत करें तो फिज़ूल है, इधर ही गया काम से। थोड़ा भी इधर द्वैत किया तो माना बिल्ली पड़ी है तुम्हारे अन्दर द्वैत की। कुएँ से पानी तो निकाला, पर अन्दर द्वैत की बिल्ली पड़ी थी तो पानी फिर खराब हो गया। हमारे अन्दर बिल्ली पड़ी होगी द्वैत की तो उससे सब खराब ही खराब होगा। पर जे द्वैत की हमने बिल्ली निकाली तो अद्वैत में कोई खराबी ही नहीं है, शांती ही शांती है। कितना दृष्टांत छोटा है पर मतलब बड़ा है कि द्वैत की बिल्ली हमको नहीं रखनी है कि ये और है मैं और हूं। तू और नहीं मैं और नहीं, तुम मेरे से जुदा नहीं है, मैं तुमसे जुदा नहीं हूं। ये पहले वाला भजन है कि ये भेद सनम मुझे .... तू और नहीं, मैं और नहीं। एक ही तो हैं सब एक ही है। समता योग का खंजर हाथ में उठा और सबको तुम काटो, द्वैत वालों को। द्वैत के धूएं में है सब। अद्वैत की आग में कोई-२ जलता है। अद्वैत की आग कि मेरे सिवाय कुछ बना ही नहीं है। हमारे को शुरू से ये ही आदत है कोई भी बात आएगी तो हम बोलेंगे मेरे सिवाय कोई है ही नहीं। आज ही तुम्हारे अन्दर की सफाई हो जाएगी, जे भगवान के आगे Agree करें कि हमारे को द्वैत पड़ा है। हमारे को कोई बोले द्वैत, तो हम उधर ही बोलेंगे अद्वैत बोलो। तुम काहे का द्वैत करते हैं। हमने कोई दूसरा रखा ही नहीं है, कोई भगत भी नहीं है सब मेरा ही रूप है। जुदा हम देखेंगे, भगत तो अद्वैत कभी सिद्ध नहीं होगा।

प्रेमी : 'मैं ही हूं' ये निश्चय भी है, पर कभी-२ विकार किसी का दिख जाता है।

भगवान : क्या विकार देखेगा दूसरे का? तुम डरो नहीं। मैं Free बात करेगा। मैं बोलते हैं कि जो अद्वैत में है कि मैं ही तो हूं तो उनका आवाज़ मैं ही तो हूं निकले। बस मेरी और कोई बात नहीं है, एक ही बात है कि अद्वैत में हम अद्वैत बोलें, जो मैं अद्वैती हूं, तो मैं कभी भी Life में द्वैत ना करूं, किससे भी द्वैत ना बोलूं, ना देखूं, ना करूं। ये ही तो है 'मैं ही तो हूं'। जो हम द्वैत करते हैं तो मैं हूँ तो हूं गया काम से। फिर तो हम देह में ही हैं, और मेरे को अच्छा लगता है जो तुम सतसंगी है तो तुमको अद्वैत में ही बात करना चाहिए। द्वैत में बात ही ना करो - चुप।

Contd.2.

हम द्वैत में बात क्यों करें? कर्म बनायें क्या? तो कर्म कौन बनायेगा? जें हम द्वैत में बात करें, पक्का कर्म बनेगा ही। हमको शुरू से ही ये ज्ञान है कि हमको दूसरे से कोई बात नहीं करनी है। ना लेना, ना देना, ना करना। कुछ नहीं करना है, बस देखना है, मुस्कराना है कि मैं ही तो हूं, ऐसे देखना है। जो कोई बात करेगा तो मैं उसको अद्वैत में लेके जाएगा। पर द्वैत में नहीं लायेंगे उसको, ये है अद्वैत। जभी दूसरा है नहीं तो काहे को उसका विकार देखें, ये कितना पाप है। जो हमारे में मैं ही तो हूं है, फिर किसका कर्म हम देखें? कौन है जो द्वैत की बात ही ना करे, और उसका मुहं से अद्वैत ही निकले?

**प्रेमी** : भगवान आपके सामने तो अद्वैत पक्का होता है, फिर जभी सामने कोई बात आती है तो द्वैत निकल आता है?

**भगवान** : ये बात नहीं करो। मैं तो सीधी बात करते हैं कि अद्वैत में मैं हूं तो मेरे मुहं से कौन सा शब्द निकले? तूं जे अद्वैत में है, अद्वैत तुमको पसंद है तो तुम्हारे मुख से किया निकले?

**प्रेमी** : ना चाहते हुए भी थोड़ा विक्षेप आ ही जाता है?

**भगवान** : बस, तो बस गये काम से। तुनको विक्षेप है, तो क्या तू ज्ञानी है या अज्ञानी है? पूरा अज्ञानी, ये मेरे को नहीं अच्छा लगता है, थोड़ा-२ ज्ञान थोड़ा २ अज्ञान, थोड़ा-२ द्वैत, थोड़ा-२ लोभ, थोड़ा-२ इच्छा, थोड़ा-२ अहंकार। मतलब क्या है? जभी कल तुम मर जाएंगे, पर आज तू जीना है तो तुम कर सकता है ना, सब तुम्हारा हाथ में है।

**प्रेमी** : चाहना होती है तो फिर क्या करें?

**भगवान** : तुमको सीखना नहीं है, खाली आना जाना करना है। मेरे को आना जाना नहीं अच्छा लगता है। सीखना हे तो इधर बैठो, नहीं सीखना है तो उधर जाओ जहॉ तुम सतसंग करते हैं। द्वैत कर, मैं क्या करूं? **मेरे को Visible कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती है। Invisible की कोई बात करता है, तो दिल लगती है।** जे Visible कोई बात करता है तो दिल नहीं लगती है।माया की **बक-२,इस-उस** का **कर्म,ये संसार** हो **तो** हुआ,जगत ही तो हुआ सत्,मिथ्या कहॉ हुआ?जे हम अभी भी द्वैत करें तो जगत मिथ्या कहॉ हुआ?

**प्रेमी** : पूरा अद्वैत में कैसे रहें?

**भगवान** :मैं ही तो हूं तो बाकी है मुस्कराना,दूसरा है चुप मौन करना,तीसरा

Contd. 3.

है कि जभी आगेवाला कोई द्वैत की बात करे तो उसको लेके जाना है उपर अद्वैत में, ये है तीन बातें। मौन मुस्कराना-मौन ऐसी सूनी नहीं होवे पर मुस्कराना और कोई बात करे तो हम उसको अद्वैत में लेके जायेंगे। हम द्वैत नहीं करेंगे। मज़ा नहीं आता है उसमें। आखिर तो Level पर आना चाहिए ना, जे Level पर नहीं है तो आना जाना क्या होता है। मतलब ही नहीं है आने जाने का। अपने को जहाँ तहाँ सही सिद्ध करना ये भी द्वैत ही है।

प्रेमी : जे अद्वैत पक्का नहीं है तो स्वभाव संस्कार निकलता है?

भगवान : जे अद्वैत पक्का नहीं है तो स्वभाव संस्कार निकलता है, किसको पक्का है अद्वैत? मैं तो ये ही पूछते हैं ना कि निश्चय बुद्धि रखने का है कि मैं ही तो हूं। कोई हमारे को निंदा बताए कि तुम्हारी निंदा किया तो बोलो उधर कौन है, मैं ही तो हूं।

प्रेमी : भगवान वाणी में आया कि तुम कबूल करो कि मैं द्वैत में हूं तो सफ़ाई हो जाएगी। भगवान हम कबूल करते हैं।

भगवान : अद्वैत कब सिद्ध करेंगे, तुम्हारी कोई निंदा करे तो तुम खुश है कि नहीं? या तुम रोते आएंगे शिकायत लेके कि मेरे लिए ये क्यों बोला। कोई निंदा करे तो तुमको दुख होता है तो क्यों दुख होवे, तुम भजन वो याद करो "सजण सो समझु तूं पंहिंजो ...."। "साख पंहिंजीअ खे बुर्ध दिल थी जदहिं..."। मैं ने ही ये रूप धारण किया है निंदावाले का, मैं हूं तो मेरे को दुख क्यों होवे,उधर भी मैं हूं तो ठीक है,फिर कौनसी बात खड़ी रहेगी? कोई शब्द याद ही नहीं पड़ेगा, सुझी गारियन में पिण आयी कृष्ण कन्हैये की शहनाई। गालियों में हमको कृष्ण की शहनाई सुनाई देती है। किससे भी तुम Fit नहीं है, ये तो बहुत गंध है अन्दर में कि ये किससे भी Fit नहीं हो सकता है, वो बोलेगा मैं उपर, बोलेगा मैं उपर। क्या है जो इनको ये रोग लगा पड़ा है। इतना ज्ञान उंचा अद्वैत का, उसमें द्वैत शोभा देता है? अभी तुम अपनी भूल भी बताओ और निश्चय भी बताओ।

प्रेमी : हम जभी बात करते हैं तो द्वैत का शब्द निकल आता है? दूसरे की बात हम क्यों करें, अपनी बात करें ना? अन्दर द्वैत पड़ा है बाहर से बोलते हैं कि कुछ नहीं है?

भगवान : द्वैत अच्छा नहीं है फिर तो काम बन जाएगा, फिर आना ही बेकार हो गया।

प्रेमी :अभी निश्चय अद्वैत का हो गया है, तो अन्दर स्थिरता आ गई ह

भगवान :कितनों को स्थिरता आ गई है। **कर्म से इतना डरो जैसे जिन्न भूत से डरते हैं।** मेरा कर्म इनसे भी ना बने, उनसे भी ना बने।**इतनी ब्रादिरी लेके जाऐंगे क्या अपने साथ, तो किससे कर्म करें, किसका कर्म सच माने,** अच्छा नहीं लगता है। मैं बात करते हैं तो भी हम को ही अच्छा नहीं लगता है कि हम द्वैत क्यों करें, उससे कि तुम सुधरे नहीं है।

प्रेमी : कभी-२ द्वैत की लहर आ जाती है।

भगवान : मैं बोलते हैं ये ऐसी माला है अद्वैत की जो कोई समझे तो कर्म ही ना बनाए और सदा प्रसन्नचित रहे। कभी उसकी शकल में दूआँ नहीं आयेगा। मेरे को कभी द्वैत अच्छा नहीं लगता है। कोई बात करता है हम बोलते हैं कि हम क्यों द्वैत करें? हम क्यों किस के नाम रूप में जायें। कोई पूछेगा कि मेरे को याद करता है भगवान। तेरे को माना किसको? हमने तो एक-२ बात ऐसे खोलके देखा है। अभी हम समझो गुरू किसको बोलते हैं तो मन बोलेगा कि तुम गुरू किसको बोलते हैं? ये तो शरीर के अंग हैं ना तो गुरू किसको बोला। इतना मैं Deep में जाएगा, जो मैं ही गुम हो जाएगी। किसको मैं बोलूं कि ये फलाणा, ये टीरा, मेरे को कोई काम नहीं है किससे, कोई भी याद नहीं रहता है, कोई भी।

प्रेमी : भगवान ये समझा कि किसी से शक्ल टेड़ी करते हैं तो ये भी Action द्वैत वाला ना होवे।

भगवान : बाकी प्रसन्नचिन कभी रहेंगे।

प्रेमी :भगवान अभी आपने बताया कि कर्म से ऐसा डरें जैसे भूत से डरें।

भगवान : मैं तो डरते हैं। मैं तो किससे कर्म ना करें। ये अभी की बात नहीं है जब से ज्ञान सुना है तो कर्म करने के लिए मेरा ये हाथ नहीं चलता है।

प्रेमी : आज अद्वैत की तीन Points समझ में आयी - मुस्कराना, मौन, द्वैत की कोई बात करे तो उपर चढ़ा दियो।

भगवान : ये अक्कल की बात है। तीनों बातें तुम ऐसे करेंगे तो कोई तुमको जीत नहीं सकेगा। तुमको खबर है ना एक दृष्टॉत कि २० लड़कियां मोटर में गई, Accident हो गया। Police ने पूछा किसने चलाई मोटर, कोई नहीं बोला कि इसने चलाई, २० जनी ही छूट, तो किसको पकडे। देखो अद्वैत में कितनी शांति हो गई। Case ही नहीं बना, ये है ज्ञान।

Contd.5.

प्रेमी : अद्वैत प्यारा लगता है, पर मन द्वैत दिखा देता है। कर्म नहीं करते हैं पर द्वैत दिखता है।

भगवान : दिखाये भली पर तू उसको ध्यान ना दे। तू आगे चल अद्वैत में। अपना अपना सबक पक्का कर कि अद्वैत के सिवाय हम कर्म नहीं बनाएंगे।

- कहाँ पर भी तुम शुरू करो बात और तू अन्दर ही बोल कि यह अद्वैत नहीं है तो एसी बात ही क्यों करें? अद्वैत में रहेंगे तो शांति ही शांति है। अद्वैत में रहेंगे तो एकदम बस, सब तरफ से ऑख बंद हो जाती है। कोई कर्म नहीं बनेगा, किसी को कोई शब्द नहीं बोल सकेंगे, किसी का विकार नहीं देख सकेंगे, दृष्टि से किसी को गलत या Right नहीं देखेंगे, जैसे सब बातों से छूट जाऐंगे, कोई कर्म का खाता नहीं रहेगा, बस मौन शॉत में रहेंगे, बाकी कोई बात करेगा तो इश्वरीय जवाब निकलेगा।
- कोई कितना भी कर्म करे, जप करे, तप करे, चाहे करोड़ दान भी करे तो भी अन्दर में खाल रहेगा, जैसे लगेगा कुछ खाली है, वो जभी अद्वैत में आऐंगे तभी पूरी तृप्ती मिलेगी।
- अद्वैत में ही परम शांती है, द्वैत में शांती कभी नहीं होगी। Unconcious जाएगा अद्वैत से, एक अक्षर भी अद्वैत के सिवाय न बोलें।
- अद्वैत की Meaning है कितना तुमने किसको प्यार किया, कितना झुका, कितना मन को मोड़ा और कितना किसका व्यवहार सुलजाया।
- अद्वैत में है बस निश्चय करना और समानता रखना, कभी भी मन बोले इसका दूसरा देखा तो ऑख ही निकाल दो।
- गुरू ने रमज़ बताई है तो तुम उस अद्वैत में चलो ना सबसे, हमने अद्वैत सिद्ध किया है, द्वैत खलास किया है, किस में भी द्वैत नहीं है। तुम्हारी वाणी अन्दर से Flow होवे, अन्दर से खुले, गुरू से लो बाकी अनुभव करके सबको दियो।
- हमेशा अद्वैत का जवाब देने से बंधन में नहीं आयेगा, द्वैत का जवाब दियो तो बंधन ही बंधन है।
- अद्वैत में बेठके स्थित प्रज्ञ के लक्षण दिखाओ।
- तुमने अपने पास द्वैत रखा है, अब तू अद्वैत से द्वैत निकालो

Contd.. 6.

- दादा भगवान को कई लोग बोलते थे आपने ये बात कहाँ से सीखी, दादा बोलेंगे तुम्हारे से ही सीखी, तो देखो अद्वैत की बोली क्या है द्वैत की क्या है?
- हमको जैसे ज्ञान मिला अद्वैत पक्का किया केवल ज्ञान ध्यान और कोई बात नहीं, सिवाय अद्वैत के और प्रपंच बंद। पाण मंझि ई .... । खुद में खुद को झांक कर, दूसरे की बात ही क्यों करें? किससे बैठते थे तो ज्ञान ही निकलता था।
- मैं अपने को सबसे Fit करूं, ये है अद्वैत। हम बोलते हैं सारी दुनिया भले उल्टा चले पर हमारा मन मुड़ता जाये और आत्मा में जुड़ता जाये।
- कल एक ने कहा कि भगवान कहते है कि अद्वैत ऐसा है जो जूती भी प्रेम से उठाओ, तो अधिक कठिन हुआ।
- ये उम्मीद नहीं रखना कि मुझे दुनिया रास्ता दे, ये ऐसा चले, ये वैसा चले, अद्वैत मत ये ही है कि मैं सबसे Fit हूं। मेरा शुरू का Photo निकालो जिस दिन से मैं गुरू के पास गए है अद्वैत मत को ही पकड़ा है। मेरे को अद्वैत ही प्यारा लगता है! भले गुरू के सामने बैठे रहे पर अपना ही खज़ाना मैंने संभाला।
- अद्वैत तभी सिद्ध है जो कभी किसी बात में 'मैं' करेंगे ही नहीं, उसका कर्म बनेगा ही नहीं! सारी दुनिया से उसकी मौन है।
- रिवाज़ी तरह से अद्वैत सिद्ध नहीं करे, अद्वैत खुद सिद्ध होवे कि इसकी ये रहनी है। पानी की महिमा तुम करेंगे, सूरज की महिमा तुम करेंगे, पॉच तत्त्व की महिमा तुम करेंगे, क्यों कि तुंम महसूस करे हैं।
- जो तू है सो मैं हूं, जो मैं हूं सो तू है, ये है अद्वैत।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

*'आकाश अमृतवाणी'*



मैंने एक को कहा- मैंने Life में अकेला नहीं खाया है, तो उसने मेरी Meaning नहीं समझी,मतलब ज्योति जलेगी तो पतंगे आपे ही आयेंगे, पर मैं किसको Invite क्यों करूं? पर मेरे सिवाय कोई रह न सके। मैं तुम्हारे सिवाय कोई चीज़ खा न सकूं।

प्रेमी : भगवान, प्यार की कमी है।

भगवान : छी ! जिनको इश्क नहीं है उनको कत्ल कराओ। मेरे को कोई भी प्रेम के सिवाय अच्छा नहीं लगता है। मैं कहेगी तुम्हारा शीश कौवे खायें। तुमने प्यार किस को भी किया है तो अपने वालों से क्या मिलेगा? मेरे को बिल्कुल नफरत है। एक स्वासँ भी उठाउं तो प्रेम में। तुमने कभी किसी को बोला है कि मैं तुमहारे बगैर रह नहीं सकता हूं। ये सूनी Life मेरे को अच्छी नहीं लगती है। मनुष्य इसमें बिल्कुल जमादार है, अपने वालों के लिये जीता है, अपने वालों के लिये खाता है।

हमने कभी Picnic-Spot अच्छा देखा (उसमें एक झूला, एक दो पोधा) तो लगेगा कि ये सब को धूमायें। जब तक सब को घूमा के नहीं आयेंगे तब तक शांति नहीं आयेगी। जो मैं ने देखा है तो सबको दिखायें, जो खाया है वो सब को खिलायें, जो Dress पहना है, वो सब को पहनायें। मैं कहते हैं ये सब मेरा विराट स्वरूप है- एक ये Body नहीं, पर सब।

दृष्टान्तः तीन दोस्त- Laughing संत। हमने तो Life में किस अज्ञानी से पूछा होगा, तो सस्ते में सस्ती Medicine क्या है? तो बोला -हँसना। इतने रूप भगवान ने क्यों धारण किया है- प्रेम के लिये । प्रेम के सिवाय कोई मिलेगा भी, देखेगा भी। मनुष्य में ऐसी आकर्षण, प्रेम होवे जो कोई उसको छोड़े ही नहीं। इतनी पोथी, पन्ने पढ़ते हो, पर कोई भी भगवान में नहीं है। जब है ही यहाँ भगवान तो देह की Address क्यों देवें? इस ज्ञान ने प्यार का बड़ा झंडा फैलाना है। पड़ोस में भी सब समझे कि चाहे उनको तुम्हारी Company चाहिए, चाहे तुम्हारा खाना, बाकी दरवाजे बंद करके बैठेंगे तो कोई हमको सूंघेंगे ही नहीं। कबूतर-कबूतरी भी बैठते हैं। सन्यासी, औरत-बच्चे को छोड़कर Jungle में जायेंगे, वहाँ देखेगा, कबूतर कबूतरी कैसे प्यार करते हैं, पीछे इसको मन आयेगा।कभी भी सन्यास नहीं लेना है।

Contd 2

सन्यास है मन का नाश। ये सच्चा सन्यास है जो मन रहे ही नहीं। ना मैं मन ही नहा, ना मैं तन ही रहा... । नाम रूप नाश है..., ये है मुक्ति। बाकी संकल्प विकल्प किस लिये चलते हैं? जिसको भी प्यार किया है, वह सामने आते हैं, बाकी थोड़ी ऐसे सब मिलेंगे। मैं तुमको पॉव पड़ते हैं ज़रूर इश्क वालों को बनाओ और प्रेम करो- पर अकेला नहीं खाओ।

*ओम*

## 'साक्षी भाव'



प्रेमी : साक्षी भाव में रहने के लिए कोई वचन दीजिए ।

भगवान : देखो ना, साक्षी मैं हूं तो सब का साक्षी, ये नहीं कि मैं अपने शरीर का साक्षी है, अपने घर का साक्षी है, सारी दुनिया को मैं ऐसे देखें। पर मेरे को मन में ना होवे मैं साक्षी- साक्षी बस। जैसे दिया जले ना तो दिया क्या देखता है, देखता ही नहीं है, सिर्फ जलता है तो इसके लिए हम क्या बोलें कि दिया क्या करता है, दिये को कौन सी खबर है, रोशिनी तो देता है ना तो दिया क्या देखता है, देखता भी नहीं है सिर्फ जलता है। रोशिनी देता है यह भी उसको खबर नहीं है, ये है साक्षी ।

प्रेमी : कभी-२ कोई Scene आता है तो अपने को Involve करना पड़ता है, साक्षी बनके रह नहीं सकते हैं?

भगवान : तुम Scene में Involve होता है,पर Scene तो Disappear है उसको छोड़ दो, Scene करो uscene (Unscene)। अभी इधर मैंने Paint किया तो दीवार ना होवे, कागज़ ना होवे तो किधर Paint करें, माना दीवार है तभी मैंने उधर छपाई किया,नहीं तो किधर करें।अगर दीवार भी नहीं है,कागज़ भी नहीं है, Scene भी ऐसे ही है,मिथ्या।जैसे दीवार पर कुछ भी Paint करो तो वो मिथ्या है, बाकी जो पर्दा है वो सत् है।

प्रेमी : भगवान, अभी आपने बताया कि दिये में रोशिनी है पर उसको खबर नहीं है तो वो स्थिति कैसे है?

भगवान : हम इतनो को रोशिनी दें,तू बोलती है इधर रोशिनी है,भली है पर मेरे को नहीं लगता है कि मेरे को कुछ है,मैं तो अपना बताते हैं ना। मेरे को ये नहीं है कि मेरे में रोशिनी है या मैं ने इनको रोशिनी दिया, एक आदमी को भी मैं ने कुछ नहीं दिया कि ये मेरे से ज्ञानी हो गया,ये होशियार हो गया,ऐसे हो गया,वैसे हो गया। वो मेरे को नहीं है। दिये को भी क्या खबर है कि मैं रोशिनी देता हूं, क्यों कि दिया जड़ है,मेरे को भी ये नहीं आता है कि मैंने किस को भी दिया है ज्ञान या रोशिनी दी। उसमें दो जने हो गए ना,देनेवाला और लेनेवाला,ये है Mystery की बात, History की बात नहीं है।मेरे को भी दिया याद आ गया क्यों कि मेरे को ये है कि दिये के नीचे तुम कौन सा भी कर्म करो, दिया बोलेगा नहीं, रोशिनी है भी पर बोलेगा कुछ नहीं, बोलेगा तुमको जो करना है सो करो।करते नहीं है

ये सब कुछ?. पाप भी होता है, पूण्य भी होता है, नहीं भी होता है, होता भी है। सब कुछ होता है पर हमको शांति है, इधर हलचल नहीं होती, संकल्प विकल्च नहीं आता है। जे संकल्प है तो किसके लिए अच्छा, किसके लिए बुरा संकल्प चलता है, नहीं तो संकल्प ही नहीं है, विचार की सेजा में सोओ। 'तू ही कर्ता है', ब्रह्मा भी मैं हूं, विष्णू भी मैं हूं, शिव भी मैं हूं, पर तीनों से मैं हूं न्यारा। अभी न्यारा कैसे होगा तू ही बता? न्यारा तो होना ही चाहिये ना। सब कुछ देखते हुए भी नहीं देखूं, सब कुछ सुनते हुए अन्दर Touch ना होवे, जैसे कुछ होता ही नहीं है। भली कोई भी बात करके जाता है तो मेरे को चिंतन नहीं होता है, ये है कुदरत। वो भूल करेगा, अभी क्या में जवाब दियूं। एब Second में मैं एक शब्द बोलेंगे और वो शब्द लेके बैठ जाएगा। शांत होगा, उसको फायदा हुआ ना, मेरे को थोड़ी ही खबर है कि मैंने कुछ बोला या किया। उसको फायदा है तो ठीक है हमारा क्या जाता है, मगज़ नहीं चलाने का है। अभी देखो मैं इनके लिए दिमाग चलाउं या सोचूं तो कितना मेरा मगज़ खराब हो जाये, तू बोल, याद सब है ये जा रहीं है, ये आ रही है, पर चिंतन नहीं है।

प्रेमी : भगवान आप को तो कुछ पत्ता नहीं है पर हमको तो मालूम है ना कि आप की रोशिनी से हमारा जीवन क्या से क्या हो गया है?

भगवान : जेकर ये श्रद्धा ना रखे तो मैं इनके कान में जाके बताएंगे क्या? उनकी श्रद्धा सुनती है मैं नहीं बताते हैं,इनकी श्रद्धा इधर Catch करती है।

प्रेमी : ये तो भगवान पहले दिन ही आप कुछ डाल देते हैं, श्रद्धा भी हम ले के नहीं आये थे, ये अजीब बात है।

भगवान : अजीब खेल है ना। अजीब है ना भगवान भी।

प्रेमी : आपके वचनों से अजीब तृप्ति आ गई है।

भगवान : मैं ने एक भी वचन नहीं दिया है।

प्रेमी : अनमोल वचन दिये हैं।

भगवान : सब झूठ है।

*ओम*

## ओम सतगुरू प्रसाद

## *" 98% Spritual - 2% Physical "* [40]

**प्रेमी** : भगवान 98% Spritual - 2% Physical को खोलिये?

**भगवान** : 2% Physical क्रियाकर्म जो भी है, दुकान है, Office है, कुछ भी है, पर 98% Spritual हमको भगवान की बात करने की है। समझो हमारे पास कोई ग्राहक आता है, उसमें भी न चाहते हुए अचानक मेरा ज्ञान निकल आयेगा, क्यों कि मुख में भगवान बैठा है। व्यवहार भी भगवान के सिवाय नही चलता है। 2% Physical इसीलिए बोलता है क्योंकि शरीर निर्वाह के लिए कुछ तो होगा ना। सब बात में Spritual अच्छा है, जो परमात्मा को प्रगट करे,पर तुम्हारे व्यवहार में Spritual प्रगट नहीं होता है। मेरे को कोई शुरू में भी पूछता था बच्चे कितने हैं?मैं बोलता था अनगिणत। Flat कितने हैं? जो दिखते हैं, वो Flat मेरे हैं। तुम्हारा घर किधर है? हमारा घर बेगमपूर में है। सब बोलते थे, यह Spritual बात करते हैं। जो मेरे अन्दर है,वो ही बाहर है।Spritual के सिवाय जीना मुशकिल पड़ता है। देह अध्यास मे कोई Bargain करता है तो Hospital में देता है। ज्यादा पैसा किधर जायेगा या मलबा खरीद करेंगे, या सोना चांदी। तुम सब बोलो किधर रखेगा? कहाँ रखेगा? खाली कमाओ(2)। फिर मेरे को बोलेगा, मेरे को तो सत्संग का time ही नहीं मिलता। अजब बात है, चाहे Officer होवे या सेठ होवे। हमारा दादा बोलता - एक माई बोलती है, Sunday को Driver नहीं आंता, तो दादा भगवान ने बोला, Sunday का Double पैसा दे, उदारचित बन तो आयेगा। हम घर में, व्यवहार में, शादी में, ख़र्च में कमी नहीं करते हैं। जभी सामने कोई यज्ञ आवे, तो हम कैसे रहें? कैसे कम होवे? पर किसको करना भी नहीं आता, समझ में भी नहीं आता, कि हम यह पैसा किधर करें? सत्संग में प्यार करने से क्या होता है? यह नहीं कि, तुम प्रसाद करो - पर जहाँ रहते हो, खाते है, वहाँ किराया भी नहीं भरते हैं, प्रेम नहीं करते हैं, ऐसे ही नशे में आते हैं और चले जाते हैं। ये तुम्हारा नशा मेरे को अच्छा नहीं लगता है। तुम पैसे लेके आते हैं, वापस लेके जाते हैं, खाने पीने में भी कंजुसी करते हैं, Miser हैं।

इधर तो उदारचित होने का है। बेटा-बेटी को नही देना है, लेकिन ये संगत मेरी जान है। संगत के सिवाय मेरे को कोई पसन्द नहीं

आता, क्योंकि जभी वो दुनिया छोड़ा तो ये दुनिया मिल गयी। अभी ये महोब्बत की दौलत किसपर लुटाउं। यह क्या बात है जो Purse वापस लेके गया, प्यार किसको नहीं किया। कबीर ने उधार लेके भी संतों को खिलाया। गुरूनानक बोलता है "कणका जिस मन जीव बसावे ताकी महिमा गणी न जावे"। इतना कणा (कतरा) भी कोई भगवान का ले, उसकी महिमा गनी न जावे। इतना ज़रा भी ज्ञान सुनो तो मुझे खुशी है, क्योंकि दुनिया तो गिरी पड़ी है, देह अध्यास में मरी पड़ी है। तुम भी पहले भगवान को अन्दर कहॉ बिठाते थे? मन्दिर जाकर पैर पड़ते थे, इधर तो रात दिन आठे ही पहर समाधि है, सिख योगी से उस्तादी। यहॉ तो आठ ही पहर समाधि है, लगातार, क्योंकि इधर ज्ञान सुन२ कर बहुत डाला है, इतना पक्का किया भगवान, जो भूलने वाला नहीं है। अभी जुबान से वाणी निकालो तो गल्त शब्द तम्हारा Life में न निकले। ज्ञान सुनने के बाद तुम्हारी कोई शिकायत न करे कि इसने यह गल्त शब्द बोला। घर में भी और इधर भी, गल्त शब्द निकालने का तुम्हारा क्या मतलब है। कोई भी शब्द निकालो, पूरा Study करो, उसका फल क्या निकलेगा? तभी शब्द निकालो, नहीं तो मौन अच्छी है। शब्द ऐसा हो जो दिल खींच लें। दिल लेने में दिल चाहिए, प्रेम करने से प्रेम बढ़ता है, देने से बढ़ता है, लेने से नहीं! कई लोग मॉ, बहन, ससुराल सब से प्रेम मांगते हैं, तो भिखारी है क्या? कोई भी हमारे को प्यार न करे, हम देते रहेंगे(3)। हमको वापसी की ज़रूरत नहीं है। मैंने ख़ाली देना सीखा है, लेना नहीं, तभी तुमको यह ज्ञान लगेगा। जो एक बार कोई ले, तो मालामाल हो जायेगा। इसका उजूरा देना मुशकिल है। उजूरा यह है जो तू सब को प्यार कर। करना नहीं, Doer बनना नहीं, पर जो तुम्हारे सामने इत्फाक से आये, उसको प्यार करो। तुम यह पक्का समझना, तुम भले कितना भी करो, पर वापसी में कुछ लेना नहीं चाहिये। "आस न करे और की, आप करे उपकार" आस न करे, पर उपकार करता जाए-२, क्योंकि है तो भगवान का यज्ञ। सब चीज़ उसकी,मेरे पास अमानत है,मैं कौन हूं,देने-लेने वाला। तू तो है ही नहीं, One without Second जहॉ दूसरा नहीं है,तो प्यार करने में हम थके क्यूं। द्वेष करना तुमको आता है, पर प्यार करना नहीं आता। गल्त शब्द बोलना,गुस्सा करना आता,पर प्रेम करना,नीचे से बोलना नहीं आता। नीचे से बोलने से तुम छोटे हो जाएंगे,

क्या? बात समझो, एक किलो रखा है- पछाड़ी को 2 grms. आयेगा। वो सबसे उपर होगा। ऐसे ही, हमारी गीता भी सब ग्रन्थों से छोटी है, पर है सर्वश्रेष्ट। जो छोटा है, वो ही बड़ा है। जो बड़ा है वो तो उंठ है, गधा है।

प्रेमी : हालत आती है तो अब Strong हो जाते हैं, आपसे जुड़ जाते हैं।

भगवान : कोई भी हालत से हम डरे क्यूं? डरे हम गल्त शब्द से, गल्त वाणी से। किसको धिक्कारो नहीं। तुमको प्यार करना क्यूं नहीं आता है? गुस्सा करना आता है, Emotion करना आता है। खासकर यह आदमी लोग बकरी पर राज करते हैं, मेरे पर राज करे तो बताए। तुम उसको Weak समझके राज करते हैं कि मैं खिलाता हूं, मैं कमाता हूं, तो उसकी प्रारब्ध है ना? जैसे नौकर हमारा Ration Card लेके जाये, बोले मैं खिलाता हूं, तुम बोलते हैं मैं कमाता हूं, माई खाती है तो उसकी प्रारब्ध कहाँ गयी? गुस्सा करने का क्या मतलब है। एक माई ने पति को बोला- गुस्सा भले करो, पर एक मिनट में हॅसना भी ज़रूर, नहीं तो मेरा दिमाग गरम हो जायेगा। तो देखो,उसने उसका Power कम कर दिया।

प्रेमी : चलते चलो- चलते चलो, आगे का सोचो नहीं?

भगवान : "कौन जाने कल की - खबर नहीं इक पल की"। तो कल के लिये क्यों सोचना हैं? कल नाम है काल का, तो काहे को सोचें। चलते चलो-२, बस तुम अपने में चलो, सत् सरलता में चलो। कोई दोस्त दुश्मन नहीं बनाना, यक की नज़र रखो, ईश्वर की। सुबह से रात तक हमको प्रसन्नचित होके दिखाओ, बस एक दिन ही तुम प्रसन्नचित् रहो। तुम्हारे Face पर कोई लकीर न आए। शान्त, एकरस, मुस्कराना।

प्रेमी : पहले इच्छा पूरी नहीं होती थी, तो रोना आता था?

भगवान : किस बात के लिये तुमको रोना आयेगा, क्या कारण है, रोने का मतलब क्या है? अभी दुनियॉ से तृप्ति है, ज्ञान से तृप्ति है। भगवान को ढूंढना नहीं पड़ेगा, भगवान तो है मेरे पास। हरबात के लिये ऐसे Peace रखो जैसे तृप्ति ही तृप्ति है।

प्रेमी : ज्ञान से रोज Change हो रही है।

भगवान : एक दफा विचार करो कि मैं क्यों नहीं मुस्कराता, क्यों नहीं एक रस रहता, काहे को दूसरे में मतलब रखते हैं? काला मुहॅ है तेरा। जे हम

दूसरे में मतलब रखेंगे, तो भगवान ही हमारी बात पूरी नहीं करेगा, तो तुम भी दुखी होगा ना? तुमको राजी करनेवाला तेरा ज्ञान है, तेरी समझ है, तेरा ख्याल है, पर दूसरा कोई नहीं है। भगवान गुरू Impossible को Possible कर सकते हैं। पर तुम्हारा मन बेवकूफ बोलता है, ये कैसे होगा, कैसे करेंगे, तो यह विकल्प नहीं करो। संकल्प सिद्धि हासिल करो। जो आत्मा के निश्चय में है, उसको संकल्प सिद्धि, व्यंवहार सिद्धि, उपदेश सिद्धि आ जाती है। तुम्हारी वाणी में भी असर होगा। पर जे तुम्हारा निश्चय पक्का नहीं है अपने में. तो अपने से हारे क्यों? दुनिया से जीते, अपने से हारे, तो क्या ये ठीक है? दुनिया को जीतने से क्या मिलेगा? भले राजा लोग, राजाई हड़प करे दूसरे की, जे अपने मन को नहीं जीता तो सब बेकार। अपना मन वश है, तो सब मिला। "मन जीते जग जीत" शुरू में मन जो बोले उल्टा करो, यह रमज़ सीख लो। तुम बाहर सहारा ढूंढते हैं, पर जो सहारा उसमें है, वो तेरे में है। जो दुनिया की विद्या है वो अविद्या है। कोई होशियार वकील है तो मेरे से बात करे, तो मैं उसकी चम्पी करेंगे। सब चोर-ठग- बदमाश है जो खाली पैसा२ करते हैं। मुझे डाक्टर, वकील किसीमें विश्वास नहीं, जो अपने में है। सब Down करने वाले हैं।

*- ओम*

## ओम सतगुरू प्रसाद

## 'इच्छा मात्रम् अविद्या' [41]

पहले जभी सृष्टि नहीं थी तो केवल निराकार ही था, फिर जभी निराकार ने संकल्प किया तो एक से अनेक हो गया, अपना खेल रचाया एक से अनेक हो गया। पहले खाली निराकार ही था, इच्छा किया तो मनुष्य बन गया। **" चाह चमारी चुहिरी अति नीचन ते नीच, तूं तो पार ब्रह्म था जो चाह न होती बीच "**। इच्छा करना ही अज्ञान है। इच्छा है ऐसी बली गुमाती है गली२, और मचाती है मन में खलबली। जब भी मन में इच्छा उठती है और जब तक वो पूरी नहीं होती है तो बेचैनी रहती है, शांती चली जाती है। मनुष्य समझता है मेरी इच्छा पूरी होगी तो मैं तृप्त हो जाउंगा। पर एक इच्छा पूरी हो गई तो उसके पीछे दूसरी इच्छा उठेगी। मेरे को एक सौ रूपया चाहिये तो मिलेगा, फिर हज़ार की इच्छा, फिर बंगला गाड़ी वगेर२ । इच्छा का सोराख कभी बंद नहीं होगा। एक इच्छा के पीछे लाख इच्छाएं होगी। फिर वो इच्छा का बीज बड़कर दृखत बन जाएगा। सारी दुनिया दुखी है तो एक इच्छा और अहिंकार के कारण। इच्छा पूरी हुई तो भी दुखी और न पूरी हुई तो भी दुखी।

समझो किसी को बेटे की इच्छा हुई और वो पूरी न हुई तो मांगके बेटा लीया, फिर ऐसा बेटा मिला जो सारी उमर उसकी शेवा करनी पड़ी। एक माई को भगवान ने बेटा दीया, तो सारा दिन सोता ही रहता था, उठ नहीं सकता था, उसकी शेवा ही करनी पड़ती थी। एक माई ने इच्छा से बेटा मांगा, तो दोनो बेटे पागल निकले, जिनकी शेवा करनी परी। नामदेव संत ने भगवान से घोड़ा मांगा, भगवान ने उसको टटू दिया, जिसको संभालना ही परा। मतलब इच्छा से दुख ही खरीद कीया। एक दूसरी माई को बेटे की इच्छा थी, बेटा पैदा होने पर भी उसे ऐसे लगा कि बेटा नहीं हुआ है, उसकी दिमाग पर इतना असर हुआ जो वो Coma में चली गई, कई बरस Coma में रही। एक इच्छा ने कितना दुख दीया। इच्छा ऐसी है जो मनुष्य को ब्रह्म पद से गिरा देती है। जैसे एक चील मांस के टुकरे के लीये नीचे आ जाती है धरती पर। जभी इच्छा नहीं है तो मनुष्य शाहों का शाह है। **"चाह गई, चिंता गई, मनवा बेपरवाह, जिस जीव को चाह नहीं वो शाहन का शाह"**। जभी इच्छा करते हैं तो फकीर हो जाते हैं, सबके आगे गुलाम होना पड़ता है, कमज़ोरी आ

जाता है।

इच्छा मनुष्य को दीन बना देती है। एक इच्छा पूरी करने के लिये राजा ने कुत्ते के साथ खाना खाया। इच्छा पूरी न होगी तो क्रोध उत्तपन होगा, क्रोध से बुद्धि नाश हो जाऐगी। Energy नाश हो जाऐगी। इच्छा से तृष्णा पैदा होती है, तृष्णा से वासना बन जाती है, फिर वहीं वासना जन्म मरण का कारण बनती है।

जैसे किसी को इच्छा होती है कि मेरे को फलाणा बंगला चाहिये, तो जब तक बंगला नहीं मिलेगा, तो तृष्णा बड़ती जाएगी, और अचानक मर गया तो वासना के कारण उसमें भूत बनकर आएगा जैसे सूरत में एक बंगला है, उसको माई ने बहुत प्यार से बनाया, अचानक वो मर गई, तो आज तक सब बोलते हैं वो माई सफेद साड़ी में रोज़ आती है।

अगर किसी को इच्छा है तो शाहूकार भी गरीब है। अगर इच्छा नहीं है तो बिन कौडी बादशाह है। आम में जैसे कीड़ा है तो फैंक देंगे, ऐसे ही हर इच्छा के पीछे कीड़ा देखेंगे तभी इच्छा छूटेगी। राजा को शराब पीने की इच्छा हुई तो वज़ीर को बोला शराब लाओ। वज़ीर शराब के साथ बकरा, वैषया, डाक्टर और कफन सब साथ में लाया। तो राजा को ज्ञान आ गया, 'इच्छा को कैसे जीतें'? जब जगत मिथ्या, ब्रह्म सत्य हो तो अंदर से पूछो कौन सी इच्छा करें? अंदर में वैराग जागा होगा तो क्या मांगू कुछ थिर नाहीं। कोई भी ऐसी चीज़ हमाशा के लिये स्थिर नहीं रहती है। "सदा न संग सहेलियां, सदा न काला केस, सदा न इस जग जीवणा, सदा न राजा देस"। इच्छा तभी उठती है, जभी हम देह में है, पर सत्गुरू हमको अपना स्वरूप याद दिलाते हैं कि तूं तो पार ब्रह्म परमात्मा है, तू यह देह नहीं है। तो देह से सत्गुरू उपर कर देते हैं।

"जो इच्छा तजे है, वो अनइच्छित फल पाये हैं। जो स्वाद तजे हैं, वो अमृत पाये हैं। जो राज तजे हैं, वो महाराजा होते हैं। जो स्वार्थ रखे हैं, वो घर घर भटके है।"

तू इच्छा छोड़ेगा, तो भगवान को आकर चिंता लगेगी, हम इच्छा करेंगे तो भगवान चिंता करना छोड़ देगा। गुरु बताते हैं तू ही एक से अनेक हो गया है, तेरे से जुदा कुछ भी नहीं है। इच्छा तब होगी जब

तेरे से जुदा कुछ होवे, जहाँ तहाँ अपना ही दीदार हैं, सब जगह मैं ही मैं हूं, मैं ही चलता फिरता गुमता हूं।

अंदर में द्वेत है तो इच्छा रहेगी। इच्छा कितने प्रकार की होती है : पदार्थ की, माया की, दुनिया की, पर मेरे को कोई अच्छा बोले तो ये भी एक किसम की इच्छा है, जो दुखी करती रहती है। सब बोलते हैं इच्छा करना Natural है, परन्तु अलग२ किसम की इच्छा उठती है, क्यों कि जैसे२ मनुष्य Company करता है, वैसे२ इच्छा उठती है। गुरू का संग करने से, इच्छा चले जाती है। इच्छा को दबाना भी नहीं चाहिये। गुरू से उत्तर प्रश्न करके अपनी इच्छा को काटें। गुरू कैसे भी हमारे इच्छाओं को काटेंगे या पूरी खटाई दिला देंगे। इच्छा को दबायेंगे तो अंदर की बीमारी आ जायेगी। अंदर Unconscious में वो बात चले जायेगी और टाईम पर निकल आयेगी। गुरू से सलाह करके एक२ बात करके उनसे नर्णय करना है। पहले अशुभ इच्छा छोड़ने के लिये शुभ इच्छा करनी पड़ती है। जैसे भगवान पाने की इच्छा, शांती पाने की इच्छा, फिर अपने ब्रह्म पद में सिथ्त होने के लिये दोनों से उपर उठना पड़ता है। जैसे भगवान पाने की इच्छा भी भगवान पाने में रूकावट है, क्यों कि दो नहीं रहेगा, क्यों कि एक ही परमात्मा पसर गया है, तो कोन पायेगा। पाया कहे सो मसखरा, खोया कहे सो कुड़, पाया खोया कुछ नहीं, जियों का तियों भरपूर।

*ओम*

प्रेमी : भगवान आप सब कारण और परिणाम को जान सकते हैं?

भगवान : अगर तुम स्थूल को जानता है, एक तो कोई फल हमको मिलेगा तो हम बोलेंगे किस कारण मिला है।

(1) तुम रोज़ खोज करेंगे कि ये मैंने किया था, तभी ये फल मिला है।

(2) अगर Life में मैंने चोरी ठगी कुछ भी किया है तो सज़ा ज़रूर मिलेगी। ये नहीं हम बोलेंगे ये सब Passing हो गया, पर इधर अंदर Un- conscious में ज़रूर चोरी याद आएगी तो ज़रूर भोगेगा। फिर कोई इतनी तपस्या करे जो उसको Total भूल जाए अभी।

(3) तुमने मोह के कारण, दुख के कारण, कुछ भी छोड़ा तो ये ही, तुम्हारा अज्ञान है। इसी से तेरा कारण शरीर है और शरीर से बात Repeat होती है। फिर ये मन तेरी Test लेगा, कहाँ२ गिरने के गढ्ढे हैं, मोह है, क्रोध है, दुख है, सुख है। ये ही कारण तेरे को दिखाएगा। मन Test ना ले तो खराबी का पत्ता कैसे चलेगा, कि बीज कच्चा है या पक्का है।

(4) पुरानी आदत पड़ी है अन्तःकरण में, माया की बात करने की, इस उस से, वो तुम कुछ भी Change करने जायेंगे, पर कारण जो तुम्हारे साथ है अज्ञान, आपस में तुम भले ज्ञान की बात करते हैं, पर ज्ञान के साथ२ Un- conscious में जो पड़ा है वो माया में फिर गिर जाते हैं, ये है अज्ञान।

(5) प्रेमी : भगवान सूक्षम में अंत करण की वासना कैसे नाश हो, ना चाहते भी ऑखें देख लेती है।

भगवान : ना। चाहते हुए? तेरे अंदर की वासना जो चाहती है ऑखों से ना चाहा, मन से ना चाहा, उपर से ना चाहा, पर वो Deepमें जो है वो चाहता है। तुम्हारी वासना को हम Cut करें, तो तुमको दुख होगा। पर जभी तुमको टके२ की चीज़ नहीं चाहिए। देखो एक राजा है वो किसकी गुलामी करेगा?ये तो शौंक की बात है कि मैं खुद ही खुदा हूं, मैं क्यों वासना रखें?

(6) प्रेमी: भगवान किसी से भी बात करते हैं तो सामनेवाले का Unconscious अंदर Repeat होता है?

भगवान : तू कर्ता होके बात करता है, तो याद भी है,पर हम एक Minute में बात करत हैं, फिर पूछते हैं योगी से कि हमने क्या बोला? तू कर्ता होके बोलता है तभी तुमको दूसरे का भी अज्ञान Repeat होता है और अपना भी कारण बना ही पड़ा है, क्यूं कि तुम कर्ता है।

(7) तुम को ज्ञान कब लगेगा, अंतःकरण में वो ही भूत खड़े हैं। अंतःकरण बने क्यूं? जगत सत्: है तो अंतःकरण भी सत् है।

(8) कृष्ण का Conscious पकड़ो। चोर चण्डाल में जो एक देखे वो सच देखता है।

(9) प्रेमी : भगवान हम बीमार होते हैं तो चिड़चिड़ हो जाती है,पूरा Unconscious निकल आता है। जब Strong होते हैं तो कैसे Unconscious को पूरा खत्म करें।

भगवान : वो चिंता तुम ना करो, गुरू के वचन के अर्थ में गुरू की बात समझो। गुरू की रमज़ से ही तम्हारा अंतःकरण नाश होगा। जहॉ से गुरु बात करे वहॉ से Catch करो।

(10) प्रेमी : भगवान आपके Consciousness को जाने तो पूरा ज्ञान अंदर आ जाएगा?

भगवान : जभी तुम्हारे दिल में सच्चाई है, तो अंदर आपे ही मेरा Photo आएगा, पूरा गुरू का Conscious। पर जभी अंदर साफ नहीं है, तो तु मां पड़ी है। इस ज्ञान में ये खास बात है कि मैं तिनके को भी दुखी ना करूं। जे तिनके को भी दुखी किया तो ज्ञान नहीं है गुरू का।

(11) प्रेमी:. भगवान आपका Conscious जानने के लिए लगता है केवल वाणी की ज़रूरत नहीं है, पर आपके सामने Viabration की ज़रूरत है, तभी आपका Conscious जान सकते हैं।

भगवान : हां सच्ची बात है, कितनी भी वाणी सुनो और सुनाओ पर जब तक गुरू का Viabtration नहीं मिलता है तो Conscious को नहीं जान सकते हैं। भगवान की वाणी सुनो,फिर अपने को जानो, फिर उसके बाद सारी दुनिया का अनुभव होता है।

(12) गुरूदेवजी (साईं ) ने अपने गुरू दादा भगवान के लिए श्रद्धा प्रेम,गुरू भक्ति से भर दिया, ऐसा देखकर हमारा अंतःकरण भी इन्हीं शुद्ध भवनाओं से भर जाता है।

Contd. 3.

(13) जिसका Unconscious जैसा है, वो वहाँ से बात करता है, तो फिर ये जीव भाव मरे कैसे? पहले स्थूल से नाता टूटे, फिर सूक्षम से, फिर कारण शरीर से अज्ञान जाए। तिल२ मरेगा, खत्म होगा।

(14) प्रेमी : भगवान क़िसी के स्वभाव का पत्ता है वो Unconscious में पड़ा है, तो Oneness की feeling नहीं होती ?

भगवान : तू किसी के धर्म में क्यों गया? अगर किसी दूसरे के धर्म में गया, तो प्यार कभी नहीं होगा। क्यों न हम अपना Unconscious change करें। हमारे Unconscios में भगवान बैठे, दूसरा नहीं।

(15) प्रेमी : भगवान आप का Conscious जानने से ही ज्ञान होगा, नहीं तो बीमार कर देगा ज्ञान।

भगवान : ज्ञान बोझे की तरह नहीं उठाना है,पर Life बनती है। हमारे हाथ में है, मैं दर्द में रहें तो मैं किसी का दर्द भी उठा सकते हैं,तो मैं नींद कैसे करूं? अद्वैत में ही परम शांती है। द्वैत में शांती कभी नहीं होगी।Unconscious भी जाएगा अद्वैत से, द्वैत से नहीं।

(16) प्रेमी : भगवान अंतःकरण खुलास करो।

भगवान : अंतःकरण में भगवान है तो वो सोने का हो गया, फिर वो क्या करे प्रेम ही प्रेम। अपने को जानने में इतना Busy रहें कि दूसरा दिखे ही ना। भगवान के सिवाय दूसरा नहीं है। दृष्टांतः चार देवियां थी लक्ष्मी सरस्वती, शप्ती और शांति। शांति देवी ने बोला कि तुम भूल जाओ राजा सिर्फ ५ मिन्ट के लिए कि मैं राजा हूं। भूलने से ही राजा के सिर का दर्द चला गया। शांति आ गई - आप विर्सजन...। सिर का दर्द है तो कारण है। कारण के सिवाय कोई कार्य नहीं। समझो राजा को कोई चिंता थी राजाई में कुछ न कुछ Tension होती है तो ऐसे ही कारण के सिवाय कार्य नहीं होता है। जो Unconscious है वो मेरा कैसे है? समझो तुम किसी को सता देंगे, तम उसका Unconscious देखेंगे या नहीं? तभी प्यार होगा? अगर Unconscious पूरा खत्म नहीं है तो ढोंगी है तो तुमको प्यार भी नहीं होगा, तो तमने किसको प्यार किया? जो उसके Unconscious में सच्चा है तो बाहर से भी सच्चा होता है, अगर झूठ है तो बाहर से भी झूठ मिलता है। बाहर से कोई वाणी मीठा बोलता है तो वो मीठा न हुआ, पर Unconscious में प्यार है? कोई दोस्त रखता है

पर मतलब कौनसा पूरा करने आया है? वो साक्षी तुम्हारा अंदर में बता देगा।

(17) प्राण एक Second में चले जायेंगे तो साथ में कर्मों की गठरी चलेगी। Unconscious में कर्म Count होते हैं।

(18) प्रेमी : भगवान Unconscious का पत्ता कैसे पड़े?

भगवान : जभी तुम ठोकर खाओ और संसार भासे तो अपने को भूंडा लगाना अंदर में कि सुजागी बड़ी य। सुजागी से ठोकर? तुम सुजाग है तो कल्याण है। कल्याण ये है कि मैं ही नहीं, है ही अल्लाह, हमको अपनी खुदी को ही खाना है।

(19) शरीर नहीं तो जन्म मरण किसका होगा, न जन्म ना मरण, न शोक, न मोह न भूख न प्यास है। कारण शरीर मे विकार है, आत्मा में नहीं। जैसे गहरी नींद में मालूम नहीं है अज्ञान कहाँ से आया, दिखाई दिया, स्वपन क्यूं दिखाई दिया? दूसरा तो वहाँ है भी नहीं। ऐसे ही अविद्या के कारण मनुष्य को अपना अज्ञान दिखाई नहीं देता है। नींद में अज्ञान समाया हुआ है। सपना आए तो भी ठीक है। पत्ता तो पड़ा न कि अज्ञान पड़ा है। गहरी नींद ऐसी अल्प है, इतनी गहरी, जो खुद को अज्ञान का पत्ता नहीं पडता , पर ज्ञानी तो जागंदी जोत है, हर वक्त जागृता में ।

*ओम*

## 'मौन'



मौन है सोन। मेरी Gift है मौन। मौन में ज्ञान पक्का होगा। मौन से संकल्प विकल्प, द्वैत द्वेष ख़त्म होते हैं। मौन ही सर्वोतम् भाषा है। ज्ञान के बाद मौन करने से शक्ति बढ़ती है, इसका एक दिन अनुभव करो। ज्ञान के बगैर मौन नहीं होती है। मै Agressor बनकर कुछ भी बात नहीं करेंगे, Defence में बात हम करें या नहीं करें Free हैं। एक शब्द भी घर में हम क्यों बोलते हैं? बोलने से कौनसा सुर निकल सकता है। कभी माँ बेटी सेठानी नहीं बनेंगे। कुछ भी बोलने से सियाणप सिद्ध होती है।। know, I am. इसने क्या बोला? एक बार मौन होगा तो तुम्हारे लिये कोई झूठ नहीं बोलेगा कि इसने क्या बोला। जो कुछ अन्दर चले उसको ज्ञान देकर निकाल दो। हमेशा के लिये मौन हो जाओ। पहले तुम देवता बनो, फिर खुदा होगा। ज़ुबान की मौन से मन की मौन शुरू हो जायेगी। मन को

हर हालत में रहने की आदत डालो। मन को सिखाओ, तुम देखोगे कि जो वचन अच्छा नहीं लगा था अब अच्छा लगेगा। मन को मौन का पाठ सिखाओ "मन तू ज्योति स्वरूप है, अपना मूल पहचान" साधो चुप का है संसारा। ज्ञान के पहले कोई लाख समझाये, चुप रहो, तो नहीं रह सकेंगे, क्योंकि मन पर Control नहीं है। हम कहेंगे कि आगेवाला क्यों नहीं सुनता है। हम सबको ज्ञान सुनाने लग जाते हैं। जब तुम Balance में आओगे तो मौन आ जाती है। तुमको मौन अच्छी लगने लगे। बड़े Barrister, Doctor कम बोलते हैं। बड़ा होवे सो कभी ना डोले, थोथा होवे सो बोले।हम हर वक्त तुमको मौन के लिये बोलते हैं,पर तुमने बैल टट्टू की तरह समझा ही नहीं है। मुझे तो गुरू का शुकराना है कि स्थित और मौन के सहारे अन्दर और बाहर का मजा लेना सिखा दिया।मौन उसको आती है जो सारी ज़िंदगी का काम उतार के बैठा है।सच्ची मौन से सब प्रारब्ध के कर्म भस्म हो जाते हैं।मन से कर्म न बनें,मन से मौन,मन न चले।

मौन उसकी सच्ची है जिसका अंदर का सब अहंकार खत्म हो जाये। मौन उसकी सच्ची, जिसकी आसक्ति नहीं है। अंदर से Emotion है, बाहर से मौन करते हैं ये सच्ची मौन नहीं है। जानते हुए भी चुप

रहना, खबर रहते हुए भी बेखबर रहना, ये सच्ची मौन है। मौन करेगा तो न दोस्त बनेगा न दुश्मन। ज्ञान का पहला सबक है मौन। जब तुम बात करते हैं तो देह में आ जाते हैं। मौन से पक्षपात रहित रहेंगे। मौन से एक भी विकार नहीं आयेगा, अंदर ही खत्म हो जायेगा। जिसने एकान्त का मज़ा नहीं लिया, समझो ज्ञान नहीं लगा। नुकसान देखकर भी चुप करना पड़ता है, तभी आगेवाला सीखेगा। बात करता है तो भगवान से जुदा हो जाता है। आत्मा में कोई बात ही नहीं है, इसीलिए मरकर रहो संसार में। अब तक बात किया, नुकसान में रहे कि फायदा हुआ? अपने से पूछो तो मौन हो जायेगा। ख्यालो से खाली, वादों की है आज़ादी।जो भी होता है मन के संकल्प से होता है। संकल्प से खाली मन है, शान्त है, वो ही निर्वासना होके मौज में रहेगा।

ज़रूरत के Time पर बोलना एक शब्द, या दुसरे की भलाई या दूसरे को Encourage करना ये भी मौन है। सच्चा होवे, प्यार होवे या बहुत ज़रूरी जोवे तभी हमारा एक शब्द निकले। मौन है सोन, तुम्हारी सदा मुस्कराहट की मौन हो। मौन में पाप नहीं होगा। किसी ने पूछा परमात्मा

की बोली (भाषा) क्या है, जवाब मिला मौन। बाहर की मौन देवता बनाती है, अंदर की मौन भगवान। मौन तीन प्रकार की है:(1) कम बोलना (2) ज़रूरत के समय बोलना (3) Telegram की तरह to the point बोलना। आत्मा की बात करना भी मौन है। Silence is Gold, Speech is Silver. The greater silence is higher the state deeper than the Kingdom of death. मौन से Observation power भी बढ़ती है। बोलने से शक्ति भी कम होती है। बोलत बोलत भये विकार। पहले गुरु से बात होती, फिर इशारा, फिर मौन में पहुंचा।

*ओम*

## 'हस्ती गुम करना'



ज्ञानी जो है ना तो अपनी मस्ती में चलता है, उसको डर नहीं है, ऐसे तुम भी हस्ती कौन सी रखेंगे? अभी जो हस्ती है वो देह अध्यास की है, Something मैं कुछ जानता हूं, मैं कुछ करता हूं, मैंने मदद किया, मैंने निष्काम किया, "मैं ने" निष्काम किया बोला तो ये भी पाप है, जहॉ मैं आ गयी तो खट्‌टाई आ गई दूध में। आसूरी स्वभाव वाला बोलता है मैंने ये किया, मैंने ये नहीं किया, पर Doerपना है उस Doerपने में तुमको शांति नहीं आयेगी और कर्म का फल भी उल्टा निकलेगा। पर जभी तुम Doer नहीं है, तुम उल्टा कर्म भी कर, पर उसका फल ठीक निकलेगा। हम झूठी Sign भी करें तो भी दण्ड नहीं है। अगर तुमको फल की इच्छा नहीं और तुम Doer नहीं है, तो तुम राजा हो सृष्टि के, मालिक हो। सच्चा निष्कामी कोई नहीं है, जो बोले मैं नहीं हूं, परमात्मा ही कर्ता है। तुम बोलते हैं मैं आज निष्काम में गया, मैंने सतकर्म किया, मैंने अच्छा किया। तुम उसकी भलाई कर सकते हैं? वो भी प्रेरणा परमात्मा की है। परमात्मा अगर हमारे में प्रेरणा न डाले, शक्ति न डाले तो ये शरीर भी चल नहीं सकता है, उसकी प्रेरणा से सब हो रहा है। हम बोलते हैं कि मैंने किया, आपेही हम अपना Doerपना डालते हैं,तो बन्धन में आते हैं। सारी दुनिया बन्धन में है, Free कोई नहीं है। चाहे सतकर्म करे, चाहे बदकर्म,अभिमान है। जहॉ मैं आई तो उल्टा फल ही निकलेगा। तुम भी किसका कितना भी निष्काम करो पर फल क्यों नहीं निकलता है, जितना हमारा एक शब्द से निकलता है। सतकर्म तो ऐसे बहुत करते हैं, तीर्थ तप और दान करे.....।गुमान माना मैंने किया, इतना तीर्थ घूमें चार धाम घूमें, अंधे को दें, सब करें पर देने वाला जीता है वो नहीं बोलता है कि परमात्मा की प्रेरणा से इधर पहुंचा। तुम बोलो किसको "मैं" नहीं आती है? जो मैं२ ना करे, अपनी हस्ती जो गुरू को देगा तो वो वापस में हमको शक्ति देगा, हस्ति मिटाने से शक्ति मिलती है। अगर हस्ती ना मिटाएं, वापस हम झुके ना, तो उठें कैसे? अभी हम झुकेंगे तो कोई गिरी हुई चीज़ उठाएंगे ना, ये सिर कहॉ झुके? सबके आगे अहंकार करेंगे- मॉ के आगे, बाप के आगे, कि मैं भी तो तेरी बेटी हूं ना, मैं भी तो

Contd.2

तेरा पति हूं ना। सब अपने को Title देते हैं, पर कभी ये बोला है- सब तू ही तो है, सब मैं ही तो हूं, एक ही तो परमात्मा के सब रूप हैं। तुम तो बोलेंगे मैं हूं। कोई ऐसी हस्ती मिटाके भगवान के आगे मैं ना में रहे, "मैं ना"। इधर भगवान है, मैं कौन हूं। तुम हस्ती मिटा नहीं सकते हैं क्योंकि झुकना तुमको आता नहीं। कहॉ तुम झुकेंगे, कहॉ फिर उठेंगे। जैसे सांप के 100 Face है। एक बंद हुआ तो दूसरा निकला, दूसरा बंद हुआ तो तीसरा निकला, ऐसे ही तो मन का सांप उठके खड़ा हो जाता है। कहॉ न कहॉ निकल आता है। पर हमेशा के लिए इसको "मैं ना" करने का है कि "मैं ना"। जो है सो है। जो ठाकुर सद सदा हज़ूरे ता को अन्धा जानत दूरे। हाज़ूर नाजूर Knower है, पर तुम दूर समझते हैं भगवान को। पर भगवान Near से Near है। उसको तुमने दूर किया है बोलते हैं दूर है बहुत, तपस्या करनी पड़ेगी। तपस्या तो एक ही है, अपनी हस्ती गंवानी है।

*ओम*

** कर्म करते हुए समाधि रखें अन्दर, न कोई उपाधि ।

** ज्ञान सुनकर अपनी शांति में बैठ जायें, ये ज़रूरी नहीं है, पर कर्म योग ज़रूरी है। ऐसा कर्म होवे कि मैं Natural में चल रहा हूं!

** निष्काम होने से तुम्हारे पहले वाले गलत कर्म भी खलास हो जाऐंगे। निराकार को तुम्हारी पुकार पहुंचे तो वो ही तेरे घर को पवित्र करेगा।

** तुम अपने कर्म मेरे को दे दो। मैं तुम्हारे जन्म मरण का चिट्ठा फाड़ दूंगा। कौनसा भी कर्म करो ऐसा समझो कि मैं नहीं करता हूं। मैं करता हूं ये बड़ा सॉप है गले में। जितना तू अपने को जानेगा, उतना कर्म से छूटेगा। सब कर्म दुनिया में दोष वाले हैं। मैं अपने Self में रहूं। मेरे से कोई कर्म क्यों कराए।

** तुम्हारे कर्म तभी कटेंगे, जभी तू अपने जीवपने का मौत करेगा।

** समान दृष्टि के अंतरगत कोई गल्त कर्म नहीं होता। जगत में है पर है जगत से न्यारा।

** ज्ञानी इसीलिए झुकता है कि आगे वाला उसको देखकर कोई कर्म न बनाएं।

** तुम जिधर भी बैठो Own में बैठो। चाहे ज्ञान किसी का भी सुनो, पर मैं Own में हूं। वचन में मन है, पर मनुष्य में मन नहीं है। अगर मनुष्य में मन होगा, तो कर्म देखेंगे, पर अगर वचन में मन रखेंगे तो देह-कर्म कैसे देखेंगे।

** अभी ये शरीर चुरपुर में आता है, तो तुम उसको कर्म समझते हैं, पर ये कर्म नहीं, क्रिया होती है। शरीर ना करे तो Zinc लग जायेगी। दूसरे की सेवा किया तो कर्म किया, पर जे किसको भी अपना आप समझा तो दूसरा हुआ नहीं, तो कर्म भी नहीं हुआ।

** जिसने अपना अहम् गंवाया है, फिर उसका एकर कर्म पूजा हो जाता है।

** शरीर का जो भी कर्म होवे वह उसका है, तुम अपने को कहो मैं आत्मा

हूं, मेरा की? मैं आत्मा के सिवाय जो भी दिखता है सब माया है। भगवान को ना देखकर तुम कर्म करते हैं, उसमें देह अध्यास बढ़ताहै।सब कर्म में दोष है। किसी के भी देह के कर्म Judge नहीं करना है,वरना हम देह अध्यासी हो जाएंगे।

** सारा दिन ये ध्यान दियो कि मेरा एक भी कर्म न बने। ये मन बुद्धि से हमने कर्म बनाया और फल भी भोगा। ये मन बुद्धि भगवान ने नहीं दिया है।

** Self को जानो फिर कर्म करना आवश्यक/ज़रूरी नहीं है।

** अंतरमुख होकर अपने विकार और कर्म को देखना है, फिर उसपे पछताना भी ज़रूरी है।

** तू ज्ञान से तरेगा, या कर्म से तरेगा? दुनिया सारी मूर्ख है, पर तू ज्ञान से हलका होके बैठ।

** ज्ञान जैसे ही अन्दर उपलब्ध होगा तो पहलेवाला कर्म जल जाएगा। मनुष्य को अपने को Busy करने के लिए कर्म चाहिए। कोई एकान्त में बैठ सके, बिना कर्म के ये हिम्मत की बात है। स्थिरता नहीं है तो कुछ न कुछ करने को सोचता रहता है।

** ज्ञान अग्नि इतनी जले जो मेरा कर्म बने ही नहीं। तुम बोलता है कर्मों का फल भोग रहा हूं, पर पाचँ तत्व में Change आयेगी तो वो आपस में बरत रहे हैं।

** हमको ना कर्म बनाना है, ना Emotion में आना है, मेरे से कोई द्वेष भी करे पर मेरे से भलाई ही भलाई होवे।

*ओम*

## 'त्याग'



त्याग जे ताकत ते आहे मन जे मौजुनि जो मदारू। गुरू शरण में आकर, उसकी भक्ति और आज्ञा का पालन करके किसी चीज़ की इच्छा ना करना ही त्याग है। जितनी त्याग भावना होगी उतना अन्दर सेFresh होगा। ग्रहण करने में कमज़ोरी है, Weak रहेगा, त्याग में Freshness है।

** आत्माकार के लिए संसार सपने की तरह भासता है, इसलिए न कुछ त्याग के लायक समझता है और न ग्रहण के।

** ग्रहस्थ में रहकर त्याग भावना में रहने का है। तुम कैसे रहते हैं, मेरे को हैरानी लगती है। I may die that you may live. मैं मरूं, तुम जीओ, ये है ग्रहस्थ। पर तुम मैं-मेरा, मेरे बच्चे, मेरा मकान करते हैं। तुम बेगाने आसमान से थोड़ी आए हैं, जो अपने लिए इतना सोचते हैं, अपनी इतनी कद्र करते हैं। तुमको अपने को भूल जाने का है, तो सारी दुनिया तुम्हारी Value करेगी। घर की सेवा, आत्म पूजा करने दो सबको, बोलो जो आप बोलेंगे मैं करूंगा, तो देखो घर स्वर्ग हो गया। तो एक की त्याग भावना से सब त्याग भावना में आ गए। ऐसे तुम्हारे में से कौन है जो बोले तू बैठ, तू खा, मैं सेवा करूंगा। पर तुम बोलेंगे, इससे अलग रहना अच्छा है।

** तुम सब चीज़ इस्तेमाल करेंगे, जो भी चीज़ें हैं दुनिया की पर ऐसे चखें, बस, पर अन्दर थोड़ी गई। ऐसे हम सारी माया को चख कर फैंक देंगे। ये नहीं बोलो मैं ज्ञानी हूं, मेरे को ये नहीं करने का है, ये नहीं मांगने का है, ये नहीं खाने का है। ज्ञानी क्या? ज्ञानी में तो I know है ना! दूसरे को भी बोलता है मैंने त्याग किया है, तू क्यों नहीं करता है। सामने वाले को बोझ लगता है कि ये बकता है, क्यों? अभी तुम किसको बोलते हैं मैंने ये त्याग किया है तो वो बोलेगा मेरे से ये नहीं होगा।

** राजा जनक समझो बैठा राजाई में है, जन्म उधर हुआ है, पर उधर सब मिथ्या देखता है। मिथ्या-२ करके उसको Disinterest हो गई है! बैठा उधर ही है, बाहर से त्याग करके दुनिया को ठगता नहीं है। कितने लोग दुनिया को त्याग करके दिखाते हैं, मैं ने ये नहीं किया, वो नहीं किया। ये क्या बात है? मेरा मायका ही नहीं है तो मैंने क्या त्याग किया?

मेरे को बहन ही नहीं है तो मैंने क्या त्याग किया? तुम बोलेंगे मेरी बहन थी पर मैं नहीं गई। तुमको है तभी तुम बोलती है। मैं नहीं जाती हूं, मेरा नाता ही नहीं है। है वो Doer ना, ये ज्ञान का लक्षण नहीं है, बकना।

प्रेमी : त्याग उस चीज़ का होता है जिसमें आसक्ति होती है, नहीं तो त्याग की ज़रूरत ही नहीं है।

भगवान : त्याग किस चीज़ का करें? अभी ये शरीर है, इसको खाना भी चाहिए, बिस्तर भी चाहिए, हवा भी चाहिए तो उसमें क्या होगा? Normal Natural तो है ना, पर जो दूसरी तरह Normal Natural होगा तो ज्ञानी कहलाने के लिए होगा। झूठ लगा तब झूठ छोड़ा।

** हमारे ज्ञान में त्याग नहीं है। जिस चीज़ में Interst नहीं है, वो त्याग किया? सारी दुनिया से Interest निकल गई है, तो त्याग क्या करेंगे।

** अभी तुम घर छोड़कर आये तो त्याग क्या किया? जिधर Interest है उधर तो बैठे हो तो त्याग क्या किया?

** त्याग से बीमारी न होवे, पीड़ा न होवे। त्याग पीड़ा न होवे। त्याग की शक्ति से मौन आयेगी सच्चा त्याग है ज्ञानी दिन प्रतिदिन चमकेगा।

** त्याग भावना है कि मेरे को अपने लिए कुछ नहीं चाहिए। लोगों को शक ही न होवे कि इसको कुछ चाहिए। चाहिए माना फकीर हुआ। सब कहेंगे कि ये तो त्याग भावना में है, सबकी भलाई मे है, सबको प्यार करता है, पर उसको वापसी में अपने लिए कुछ भी नहीं चाहिए। घर में भाई बहनों में नाम होना चाहिए कि यह त्याग भावना में है।

** त्याग का Show नहीं करो पर ऐसे रहो Interest ही नहीं है।

** घर में जो झगड़े होते हैं तो तूं-मां में होते हैं, पर जो Possession है उसमें भी झगड़ा होता है। तुम त्याग भावना में रहो। बोलो जो बचे वो मेरे को देना। जो तुम्हारा मन चाहता है, जिसमें तुम्हारा आसक्ति है,उसे त्याग दो, वह वास्तविक त्याग है।

** चित में मैं-मेरा की भ्रांति का त्याग ही वास्तविक त्याग है। उत्तम त्याग है दिल गुरू को अर्पण करना। प्रारब्ध से जो कुछ मिलता है उसमें भी त्याग भावना होनी चाहिए। कोई अच्छी चीज़ मिलती है तो खुशी न आये।

** अन्दर में त्याग भावना होवे तो तुम्हें कोई जीत नहीं सकेगा। त्याग का

भी त्याग करो। यानी तुम शादी में नहीं जा रही हो तो ये त्याग नहीं हुआ, त्याग वो जो किसी को कुछ पत्ता नहीं चले।

** कोई भी शिष्य या गुरू काम में नहीं आयेगा, अपना निश्चय, त्याग, वैराग काम में आयेगा।

**त्याग करने में भी Will Power आता है। अन्दर संकल्प विकल्प न आये। संकल्प विकल्प आया तो आसक्ति है। यहां सब सतगुरू के नज़दीक रहकर Knowledge लेते हैं। इनके यहाँ रहने से इनकी भी आसक्ति घटती है और इनके मोह वाले भी इनसे मोह निकालते हैं। बाकी न त्याग है न ग्रहण है। जे हमारे में त्याग भावना नहीं होगी तो रोशनी नहीं आयेगी।

** परम त्याग है मैं सब को आत्मा देखता हूं, फिर निरोग होकर जीता हूं।

*ओम*

ओम सतिगुरू प्रसाद 16-11-1999.

## 'DRAWING' [47]

प्रेमी : भगवान, संत का शरीर शांत हो गया है, दृश्य नहीं भूलता है?

भगवान : पति को ये संत बोलते हैं, तो वासना है। दृश्य मैं सारी दुनिया के देखते हैं तो मन थोड़ी आता है। काहे के लिए मन आयेगा? काहे का दृश्य? है सब Picture जैसे उसमें Photo निकालते हैं तो वो क्या सच है? ऐसे समझो कि जो सारा दिन Photo देखते हैं वो सच्चा नहीं है या जैसे कोई भी Drawing निकालता है तो वो Photo निकालता है ना, वो सच थोड़ी है वो झूठ है। ऐसे समझो कि तुम्हारा भी पति जो है वो एक Drawing है, जो भगवान ने निकाली है। जे पति सचमुच होवे तो मरे ही ना, टूटे ही ना। खिलौना है तो टूटेगा ना, पर तुम्हारा पति तो मिन्ट-२ में खड़े-२ चला जाता है तो फायदा क्या हुआ।

प्रेमी : भगवान, ये आपने right बोला कि भगवान की Drawing है, उसको हमने पति नाम दे दिया।

भगवान : संत ! मैं पाण हैरान होते हैं कि ये संत किसको बोलते हैं। बोलते हैं दृश्य नहीं भूलता है। हम बोलते हैं दृश्य तो होगा वो भगवान ने बैठ के Drawing निकाली है। तुम्हारी, तुम्हारे पति की, सब की, उस Drawing में हमारा क्या जाता है? तुम ऐसा समझते हैं कि भगवान ने Drawing निकाली है?

प्रेमी : भगवान, आज आपने नयी बात बताई कि Drawing है।

भगवान : सच्ची बात है। आज T.V.में Minute में Drawing निकालते हैं, उधर भगवान उससे भी अधिक तीखा है, जो सबकी Drawing निकालके सत् करके दे देता है, ये वरी सत समझते हैं।

प्रेमी : उस Drawing को लेकर हम कभी रेल में हैं, कभी जेल में हैं, एक रस नहीं रहते हैं?

भगवान : रेल में हैं, जेल में हैं। कभी खुशी में हैं, कभी रंज में हैं। तू है ना या Drawing है। तू तो Drawing है ना, तो तू क्यों रोती है या हॅसती है। जो रोते हॅसते हैं तो समझो Drawing में Part हो रहा है, पर मैं नहीं कर रहा हूं।

प्रेमी : भगवान, Drawing की बात आप फिर से बताइए, हम अच्छी तरह समझना चाहते हैं।

Contd...2

**भगवान** : मैं ने जो Drawing की बात बोली, तुमने नहीं समझी। भगवान बैठके Photo निकालता हैं, तो Photo को लेके तू बोलती है, मेरी Photo मेरे पति की Photo, मेरे संत की Photo। संत कौनसा? ये संत रखके सच्चा संत बिसरा दिया है।

तुमको शांति आ जाए अगर बैठके Drawing देखो कि भगवान कैसे बैठके लाखों Photo निकालता है, सब Drawing है। कोई बच्चा पैदा होता है तो वो जैसे Drawing है, सब Drawing है, पर कोई समझता नहीं है।

**प्रेमी** : भगवान, Drawing किस की सत्ता पर बनीं है?

**भगवान** : वो तो एक ही बात है Isness, दूसरी बात नहीं है। Isnessमाना है।

**प्रेमी** : भगवान, सब कुछ अगर Drawing ही है तो किस Time पर किस को क्या शब्द देना चाहिए, जो उसकी Life बने?

**भगवान** : तुम शब्द क्यों देते हैं? तुम वाणी चलाओ तो जिसको जो उठाना होगा तो उठायेगा। तुम वाणी चलाओ सच की। भेद भाव नहीं रखो, आगे वाला कुछ भी उठाए उस में तेरा की? जैसे मैं वाणी चलाते हैं तो मैं किसकी शकल भी नहीं देखते हैं कि इसने क्या किया, क्या उठाया, भली ना उठाए। तुम ऐसे देखेंगे तो हिसाब किताब हो जाएगा फिर Drawing नहीं होगी। मैं पाण बोलते हैं ना कि मैं Drawing समझते हैं तो किसको भला बुरा बोलते नहीं हैं, पर जो वाणी चलती है वो बीच में चलती है सबके लिए। किसको कम जास्ती क्यों समझे? समझा। A-B-C-D नहीं देखो, देखेंगे तो तुम्हारा मन चलेगा, देखेंगे ही नहीं तो मन काहे को चलेगा?

**प्रेमी** : भगवान, मान अपमान की लकीर अभी तक आती है।

**भगवान** : Drawing को कौन सा मान अपमान लगता है!

**प्रेमी** : भाव है कि ज्ञान स्वरूप पर वाणी चले।

**भगवान** : ज्ञान स्वरूप की ही तो वाणी चला है कि सब Drawing है। मैं भूलते हैं क्या? कोई सवाल पूछता है तो हम उसको बताते हैं, तुम ये बात बता सकेंगे? तुम नाम रूप बोलेंगे, जगत की बात करेंगे, ये बात करेंगे, वो बात करेंगे। मेरी बात समझो तुम, तुम बोलते हैं मान अपमान लगता है,

हमने बोला जाके Drawing को बताओ, मान अपमान लगता किसको है? Drawing को?

प्रेमी : भगवान, अहम् को।

भगवान : अहम् भी क्यों बोला। तुम फिर नीचे आ जाते हैं। मैं उपर की बात करते हैं ये फिर नीचे की बात करते हैं। अहम् किसको आता है। ये तुमने नाम रूप रखा ना। अहम् लिखा थोड़ी पड़ा है, किधर लिखा है? मैं तो बोलते हैं है ही Drawing । ये बोलते हैं न मान अपमान लगता है, मैं बोलते हैं Drawing को दे दियो।

प्रेमी :भगवान Auto Suggestion देना पड़ता है कि सब Drawing है।

भगवान : कुछ भी करो पर आखिर तुमको उधर पहुंचना है। उसी बात पर पहुंचना है, नहीं तो तुम दुखी सुखी होते हैं, मान अपमान लगता है। सब होता है। इसलिए Drawing को Drawing दे दियो। मैं बोलते हैं तुमको Drawing शब्द अच्छा लगता है।

प्रेमी : भगवान, बहुत Fit हो गया है।

भगवान : सब हैरान हो गए हैं कि सब घरवालों को Drawing कैसे देखेंगे।

प्रेमी : भगवान, Drawing सुनकर एकदम शांत Still हो जाते हैं। Drawing में तो केवल चुप है, कोई शब्द ही नहीं है।

भगवान : नहीं पर तुम दृश्य जभी देखते हैं तो भूल जाते हैं। इसलिए दृश्य देखो ही नहीं, Drawing देखो!

प्रेमी : भगवान, मैं ब्रहम् हूं, मैं आत्मा हूं, ये Feeling में नहीं आता है सिर्फ शब्दों में पक्का है।

भगवान : क्यों कि Drawing नहीं समझा है।

प्रेमी : भगवान, जभी मन आए तो Drawing ही समझ लें ना।

भगवान : जो भी समझो।

प्रेमी : भगवान, ये अंदर पक्का कैसे होवे कि सब Drawing ही है।

भगवान : अच्छा तुम Drawing नहीं समझेगा तो क्या समझेगा। अभी एक माई के Hall में आदमी की Drawing का Photo रखा था तो वो(सास) बोलती : बहू को ऐसा Photo क्यों निकाला जो मैं ज़र्रे-२

देखकर दुखी होती हूं, जलती हूं। तो दुखी क्यों होती है, जभी है ही Drawing? ये सब Drawing है? भगवान, ने Photo निकाला है, पर हम आशिक नहीं होंगे।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

*'मैं ( छोटी (i) )* *[48]*

**" मारि ध्यनि सां तां मूं विसिरे !"**

भजन चला - आउं न थियां आज़ाद कदहिं शल ......

**भगवान :** ये सिन्धी में भजन है पर तुम को समझना है, मैं बोलें कि मैं जाते हैं तो वो मैं क्यों बोली? मैं आतें हैं तो मैं क्यों बोली? कौन सी मैं बोली? क्यों मैं बोलें वो बताओ?

**प्रेमी** : भगवान आपने बताय कि "मैं" नहीं करो पर हम को तो बोलने में आ जाता है कि I am that.

**भगवान :** तुम ये ज़ुबान बंद करि दिय, जो अपनी "मैं" बताओ जैसे मैंने अभी बोला ना "मैं" आउंगी, "मैं" जाउंगी, "मैं" ने ये बताया, "मैं" ने ये बोला, तो यह देह कैसे विसारी? ये अच्छी बात नहीं है। " **मारि ध्यनि सां तां मूं विसिरे !**" वो बोलता है गुरू हाथों से मारे तो "मैं" भूले पर हम ज्ञान से बोलते हैं "मैं" है किधर? कौनसी "मैं"? कौन बोले "मैं"?

**प्रेमी** : गुरू ने "मैं" खलास किया, फिर ये "मैं" उत्पन्न कैसे हो जाती है?

**भगवान :** मर जाये ना, "मैं"बोलना पाप लगे, "मैं" आयी, "मैं" गयी, "मैं" ने खाया, "मैं"-६, तो फिर "मैं" कैसे विसारो हमने? ये मेरी बात समझो कि कैसे तुमने "मैं" विसारी? "मैं" तो खड़ी ही है। ये बोता है ना, ये तो घरवालों ने बनाया और नाम रखा,अभी तक नाम हमने भुलाया नहीं है और ये भूत को भूत भी नहीं भूलता है(शरीर)। ये भूत को भूत करके रख दियो, "मैं" बोलते हैं क्या सारा दिन "मैं"-६। शुद्ध "मैं" तो चुप है बाकी "मैं" जो है ना वो निकलती है। हैरानी की बात है जो हाथों से मारे तो "मैं" विसरे तो "मैं"-2 बोलूं कैसे? मैं बोलते हैं तो जीभ जैसे कटती है। मैं, एवं मेरा, मैं ने ये किया, मैंने वो किया। ये मेरा ये तेरा। इधर सब जो हैं तुम किसको पकड़ते हैं कि यह मेरी मां है, यह मेरी बहन है!

**प्रेमी** : भगवान गुरू के पास जो नाम मिला है 'ओहम्' I am that, वो क्या शुद्ध है?

**भगवान :** नहीं। शुद्ध मैं है, पर बकने के लिए नहीं है। शांत करने के लिए है। शुद्ध मैं एक आधार है कि वो "मैं" (छोटी(i)) छोड़के तो मैं पकड़े पर मनुष्य देह से उसको लगा देता है। भजन मे है कैद करीं त भियां....।

पंछी को हाथ में बंद करो तो फथकेगा या नहीं, हम भी किसी को बोलें कि ये तू काम कर, इधर रहो, ये खाओ, ये करो, तो वो समझेगा कि मैं इधर आकर फॅस गया हूं। फॅसा हूं तो अभी मैं क्या करूं? फॅसा है तो फथकेगा। ऐसे फथकता है मनुष्य। गुरू के पास भी खुश नहीं रहता है। पॅछी को तुम ऐसे पकड़ो तो पॅछी सॉस उठाएगा, बोलेगा ना कि छोड़ो। ऐसे ही गुरू अगर तुमको पकड़े तो तुम बोलते हैं कि हमको छोड़ो। हमारे घरवाले फलाणे, टीड़े-मटीड़े के पास हम जाऐंगे। शांति नहीं आएगी ये है फथकना। पर वो बोलता है भजन में कि मैं आज़ाद न होउं। सच्चा भगत पाण बोलता है कि मैं आज़ाद न रहूं। मैं Free पर रहूं, पर झूठा भगत बोलता है कि छोड़ो तो मैं घूमूं फिरूं। गुरू पकड़े तो वो बोलता है मेरे को ये याद आया, वो याद आया, क्या याद नहीं है?

प्रेमी : भगवान I am that बोलना भी जीव भाव से बोलना है क्या?

भगवान : हॉ।

प्रेमी : अगर दृष्टा है तो दृश्य भी है, तो दृष्टा होना माना हमारा Connection कहीं न कहीं दृष्य से है?

भगवान : तू बोलता है न हमारा Connection, हमारा क्यों बोला। ये ही तो मैं पकड़ते हैं कि तुम मैं नहीं करो। तुम सुनो चुप करके सुनो पर तुम हमारा तुम्हारा नहीं करो।

पेमी : भगवान भजन में पंजतूल की Meaning क्या है?

भगवान : पंजतूल माना जैसे ये पॉच अंगुली है जो तू उसमें पकड़े जाते हैं। (माना पंजा)।

प्रेमी : आज ये समझा कि छोटी (i) में बक-२ है, Capital(i) चुप है।

भगवान : चलो किसी ने तो वचन लिया।

*ओम*

## ओम सतगुरू प्रसाद

## *'WIRELESS'*



आज Wireless की बात सुनो जो तू करता होगा, कर्म करेगा, प्यार करेगा, करेगा तो तुम्हारी Wireless नहीं चलेगी, Engage। ये दूरदर्शी की बात है कि लगातार सब के लिए प्यार है, पर कट कट नहीं है। छोटा बड़ा नहीं है। इनसे है,इनसे नहीं होता मेरा प्यार। मेरा प्यार अपने से है न। अपने से प्यार होता है या नही? तो यह कौन है, सब अपने आप ही है। तुम दूसरा समझकर काला मुहँ करते हैं, Time Waste करते हैं। जो सचमुच निजी प्यार है वो तुम जानते नहीं है। वो अर्जुन को भगवान बोलता है, तुम्हारा उत्तम संस्कार है तभी मैं तुम्हारे को ज्ञान सुनाता हूं। उत्तम संस्कार तू जो बोलता है कि मैं तिनके को भी दुखी नहीं करेगा । इन्साफ -इन्साफ को ऐसा शब्द बोलता है कभी-२ जो एकदम दुखी करके आएगा, उसके Heart को धक्का लगाएगा पर कभी बुलाकर प्यार से समझाएगा नहीं कि (बात जो है ऐसी है-२ )। सब समझने के लिए तैयार है पर तुमको समझाना नहीं आता है, तो तुम घर में गुस्सा होता है। बहू से, बेटे से, नौकर से, सेठ से, सबसे गुस्सा क्यों निकालता है. क्यों कि उसको समझाना नहीं आता है। उसके Level पर बात नहीं करता है कि उसकी Level ऐसी है, ये यहाँ से समझेगा, कि उसकी Level कितनी है। ये कहाँ से सुनेंगे, कितना हज़म करेंगे, इतना प्यार दिखाओ। पहले प्यार करो, पीछे 10 गाली दियो उसको, तो ऐसा झट पकड़ेगा,पर प्यार तुम्हारे पास है ही नहीं। प्यार किसके मन में भी नहीं, किसके भी।

समझो यहाँ बैठकर भी हम प्यार भेजेगा तो वो हमको Post में प्यार भेजेगा। Wireless ये Wireless है। भगवान ने सबमें Wireless डाली है, जैसे यह बाहर Wireless है न, कितना Wirelessकाम करती है? कितना Telegram काम करता है? कितना Telephone काम करता है? अरे वो तो जड़ है, कभी-२ Fail हो सकता है, पर जो अन्दर की Wireless है वह तुमने किसी को भेजी नहीं,किसको भी नहीं।Thank you तुम करते हैं, हम करते भी नहीं है, पर Wireless मेरी चाल है।हम Doer होगा, कर्ता होगा, Aggressor होगा तो मेरी Wireless टूटी पड़ी होगी, Connection Cut, पर जभी मेरे अन्दर में खाली Wireless है

फक्त Wireless प्यार की, सब की भलाई की, सब मेरी जात है, मेरी आत्मा है, सब मेरा रूप है, कोई मेरे से जुदा नहीं है। पर तुम्हारा ऐसा स्वभाव है

जो उसे [भगवान को] पड़ोसी से भी दूर समझा है, तभी कहता है भगवान ऐसा करता है, ऐसा नहीं करता है। कितना भगवान को तुम लोग दूर समझ कर प्रेम करता है? माना वह दूर है ना? जब कि वो मेरे नेरे से नेरे है,मेरी ऑख से भी नज़दीक है, मेरी आत्मा से भी नज़दीक है। इसकी ऑख में रोशनी किसकी है? जो ऑख सच्ची होवे तो अन्धे को भी रोशनी होवे, पर ज्ञान अन्धे को रोशनी देता है, अन्धा भी पॉव में जूता पहनेगा तो बोलेगा यह मेरा नहीं है। अन्धा भी तेरा शब्द सुनेगा, बोलेगा ये फलाणा है।ये ऑख में रोशनी सच्ची नहीं, जे सच्ची होवे तो इससे भी Change क्यों आवे। जो चीज़ Changeable है वो सच्ची नहीं है, सत्य नहीं है। और जो चीज़ सत्य है, उसमें Change आयेगी नहीं, हमेशा रहेगी। -

प्रेमी : ये बराबर पकडा Wireless, पहले गलती करते थे,अब समझा।

भगवान : जो Wireless वाला प्यार करेगा, वह सबको सुनेगा, सब की ममता करेगा, सबकी। अभी तुम सत्संगी है, तो तेरे को सत्संगी ही बुलायेगा ना, वो ही सेवा देगा, वो ही कर्म करेगा, तो तुमको सोचने की ज़रूरत ही नहीं है। बाकी जो दुनिया है उसको कौन मिलेगा - सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी। इधर तो तीन गुण से मैंने न्यारा कर दिया। तुम साक्षी चेतन आत्मा है, तेरे में कोई भी गुंजाइश नहीं है! एकदम जो Light है देखो Light क्या काम करती है, गर्म भी करती है, ठंडा भी करती है, Fan भी चलाती है। तुमको शर्म नहीं आती कि एक जड़ चीज कितना सुख देती है, अजब यह बात है। A.C. भी चलाता है तो वो Heater भी चलाता है तो इसमें कौन सी बात है, instrument माना हथियार, औजार। तो अन्दर औजार को Change कर सकते हैं या नहीं? जैसे कोई Number 1,2.3 पहचानता है, कोई कैसे चलाता है। ऐसे करते हैं न तुम, अभी High चलाओ Low चलाओ। तुम लोग सीधे चलते हैं, ऐसे High और Low नहीं करते हैं। Instrument अन्दर change नहीं करते हैं कि अभी इस Instrument की ज़रूरत नहीं है। अभी बीच में खड़ा रहना है, अभी उपर आना है,किसी के Heart में तुम्हारी बात

जाती नहीं।ये तमको सुनता नहीं, ये तम्हारे से बात नहीं करता, डरता है तेरे से।मनुष्य मनुष्य से डरे ये क्या बात है। तुम्हारे से कोई डरे तो "हरि ओम"।तुम प्यार करो उसके आगे नीचे झुको और झुको।जैसे माँ बेटी बन जाए,बेटी माँ बन जाए। गुरू को शिष्य बनना पड़ेगा तभी ये काम चलेगा, नहीं तो शिष्य को ताकत कैसे आएगी? वो शिष्य ही रहेगा, गुरू गुरू ही रहेगा। फिर भी दुनिया की विद्या में Student Teacher हो सकता है, पर ये ज्ञान में नहीं होता है। क्यों कि वह देह वाला चालाक है, ठगी करते हैं, चालाकी करते हैं या उसमें वो रमज़ नहीं। Instrument की रमज़ ही नहीं है तो अभी कौन सा Instrument डाले जो Heat मिले या ठण्डक मिले या कौन सा time है या ये मनुष्य मेरा कितना सहन कर सकेगा? कितना मेरे को प्यार करके वश करने का है, ये सब ज्ञान के Wireless से सब आएगा। तुमको Change करना नहीं तो तुम सीधी Level पर चलता है। यह अन्दर से चला तो कहाँ से भी लोग तेरे को आकर झुकेगा, प्यार करेगा और तुम्हारा कुछ बनेगा, और आकर तुम्हारे से प्यार निकालेगा। तू देगा जो ज्ञान। जो किसी को देह देखता है,वह चमार है, कर्म देखता है, विकार देखता है। तुमको विकार देखने की कितनी तनख्वाह मिलती है? तुमको जो रास्ता पकड़ना है वह पकड़ो।अभी हम जो रास्ता पकड़ कर आए तो एक भी मोटर वाले ने नहीं रोका कि इधर जाओ,इधर न जाओ।तू तो रोकता है किसी को भी रास्ता रोकता है कि ये ऐसा करता है,करने दो।ऐसा बोलता है, बोलने दो। ऐसे भूत है भी नहीं, पर तुम को भूत दिखाई देता है। वो कितना भी नीच बुद्धि करे, पर ज्ञान के बाद नीच बुद्धि नहीं लगता, डर नहीं लगता। पर तू इनसे भी डरेगा, उनसे भी डरेगा, ये नाराज़ न होवे, तो तुमको उनसे क्या चाहिए। सब की जुदा दृष्टि है, जुदा-२ भावना है, पर सम दृष्टि नहीं है जो हम रोज़ मारा मारी करते हैं। सम दृष्टि करके देखो नज़र आवंदा।इन लोगों के पास सम दृष्टि नहीं है। सम प्यार नहीं है। ज्ञान अपनी Will से उठाते हैं, गुरू की Will से नहीं। गुरू की भावना से गुरू को जानेगा।अपने को ही मोड़ना है, न कि घर वालों को। घरवाले अज्ञानी है,उनको नहीं मोड़ना।जैसे हम मुड़े,रास्ते में हम अपना रास्ता लेकर आये।

** दुनिया में सब तारें टूट सकती है, पर आत्मा को आत्मा जान कर जो

तार जुड़ती है वो कभी भी नहीं टूट सकती है। पीछे प्रेम सच्चा शुरू होता है वो कभी भी टूट नहीं सकता है। दुनिया में जो Connection है वो सब झूठे हैं, क्यों कि सच्चा प्रेम हो ही नहीं सकता है जब तक सब कुछ इधर से तोड़ कर उधर से बने, ये एक भजन की Line है प्यार की तार इधर से सजे और उधर से बजे। निराकार ने ऐसी तार बनाई है जैसे Main Switch से सबको रोशनी आती है, ऐसे ही गुरू जो भगवान है, निराकार है, सत् है, अविनाशी है, उससे हम तार जोड़ सकते हैं अगर हमारा कहीं भी ध्यान नहीं है।

** एक दिल को तोड़ेंगे तो सब तीर्थों का पाप तुम्हारे उपर है। तुम को तोडंना जल्दी आता है, एक शब्द से तोड़ देगा। पर कितना जोड़ेगा। तुम बोलो मैं प्रेम से सबको मिला के एक कर देंगे। भले झप्पी न लगाओ पर वो तुमसे मिलकर एक हो जायेंगे, उसको मालूम भी न पड़े कि मैं कैसे मिलके एक हो गया। ये प्रेम की परिभाषा है तुम उसके सिवाय नहीं रह सकेगा। जो तुम्हारे सिवाय सब की आशिष उसमें होती है, जो हम सब के दिल को जोड़े नहीं तो आशिष नहीं निकलेगी। फिर मांगना नहीं पड़ेगा, गुरू से भी नहीं। गुरू भी देखेंगे कि ये तुम सब की दिल जोड़ेंगे, भगवान देखेंगे कि तुम स्वार्थी नहीं है। जो सबकी दिल को जोड़ता जाये और अपने को भूल जाए, परवाह ही न करे अपनी। सारी दुनिया परवाह करती है अपने देह की तो मज़ा नहीं लेते हैं। तम्हारा प्यार कहॉ तक पहुंच सकता है बगैर Telephone के। World में Lord हैं एक ही पर उससे Wire नहीं मिलाते है। जो Electric में Wire है जो Telephone Amrica से आता है इतना नज़दीक लगता है, इधर पाण हमारे शहर में Engage मिलता है,उधर सरल [जब कि बिना तार का है] तो कैसे Wire को जोड़ते हैं ? ! बाकी Heart को Wire(Viabration) नहीं पहुंचती है? ऐसे अन्दर से प्रेम करो, प्रेम माना Action नहीं, पर मेरे अन्दर द्वैत की लहर भी न उठे। जो गुज़रा सो गुजर गया, बाकी जो Time है आज भी सब कुछ कर सकते हैं,Wire को सबसे जोड़ दो। टूटे गढन हार गोपाल .....। गोपाल जो है परमात्मा वो टूटे दिल को मिलाता है। दुनिया पाण जुड़े हुए को तोड़ती है। दो आदमी प्यार करेगा तीसरा पाण चुगली लगाएगा,चुगली लगाकर दो को तोड़ देगा। भगवान ने सबको प्रेम दिया

है तो हम विशालता की Wire कितनी लम्बी रखते हैं तो पहुंच जाती है। मनुष्य संसार से ठोकर ही खाता है तो अतृप्त हो जाता है। किसने भी किसको प्रेम नहीं सिखाया है। सन्तों ने भी माया का सौदा किया, पर प्रेम का सौदा नहीं किया कि एक कौड़ी भी तुम्हारे काम की नहीं। हमको शुरू से ही अद्वैत ऐसा पसन्द आया जो मेरे से कोई मिले व्यवहार की बात पूछे तो हम उसको भी अद्वैत ही पकड़ा देते है, समझो दादा भी मेरे को भुलाने आये कि ये किसने बनाया तो हम बोलेंगे आपने तो बनाया। आपने तो कराया। किस Time किया? जभी आपने कराया होगा, तभी हुआ होगा। कोई बोलेगा आपके कितने बच्चे हैं? हम बोलते थे सारी दुनिया के बच्चे मेरे हैं। उसके भी अन्दर में लगता था ये कैसे है ! मेरे को अद्वैत इतना सरल लगा कि जान छूटी सतकर्म से बदकर्म से सबसे जान छूटी। व्यवहार भी छूटा, मर्यादा भी छूटी। हमको शुरू से सतकर्म अच्छा नहीं लगता था कि संतों को हज़ार लोग देते हैं, मैं कैसे दूं। तुम है कहॉ, नाम किस पर पड़ा। मेरे को दुख होता है कि कोई मेरा संग करे और पूरी समझ न लेवे तो देखो भिण्डी भी खरीद करेंगे, बनायेंगे। ये तो Already Wireless है, Swith डाला बन गया

*ओम*

'सत् का अभाव नहीं करो' 

एक शब्द गीता का याद करोः हे अर्जुन सत् का अभाव करके बैठे हैं। असत् का भाव करेंगे और सत् का अभाव करेंगे तो असत् में सारा जगत है। शरीर है, सब है, Total असत् चीज़ें, जो है सब तो मिथ्या है, उसको हम भाव देते हैं। मेरी बहन भी सत् है, मेरी माँ भी सत् है, मेरा पैसा भी सत् है, मेरी इज्ज़त भी सत् है, पर जो सत् परमात्मा है उसका अभाव है। आज सत् का अभाव समझना,सब असत् को पकड़के बैठे हैं और असत् आपे ही चलता है, Changeable है। सब आपे ही होता है तो असत् में हम क्या करें, हम खाली खेल देखेंगे असत् का और सत् को निश्चय में रखेंगे कि इधर हम द्वैत क्यों करें? क्या दृश्य देखा क्यों देखा, ये देह में आता है, तो दृश्य देखता है पर जे देह रहित होकर देखता है तो सत् ही सत् है सब में सत् है ना।

प्रेमी : सत् को पकड़ें कैसे ?

भगवान : पकड़ना नहीं है पर जानना है कि है ही सत्, हम देह में झूठ में धक्का खाते हैं, जगत में धक्का खाते हैं, जगत का दुख सुख भासता है तो क्यों भास्ता है, क्यों कि हम असत् में पड़े हैं और सत् की कीमत नहीं करते हैं।जेकर कोई सत् का ख्याल करे,तो देखे कि उनके हुकुम से सब होता है। उस सत् से सब हो रहा है, पर असत् वाले को विश्वास नहीं है। तुमने आसक्ति रखी है तो मिथ्या में रखी है, सत् में नहीं रखी है। इससे अच्छा है तू सत् में रख आसक्ति और असत् को मिथ्या समझ फिर तुमको खुशी आ जाएगी, बोलेंगे अरे इसको जाने दियो ये मेरी ज़रूरत है क्या? इसके सिवाय भी हम चल सकेंगे। ऐसे हमारी इच्छा चली जाएगी कि मैं क्यों असत् के पीछे पड़ूं।

प्रेमी : असत में हमारी आसक्ति है तो ये हमारी आदत है या निराकार में विश्वास नहीं है?

भगवान : नहीं, जो संस्कार पहले वाले हैं, ऐसे रहना, ऐसे खाना, ऐसे चलना वो ही हम करते हैं, माना अपने को हम Change नहीं करते हैं कि इधर तुमने नहीं देखा तो क्या हुआ, ऐसा मन नहीं किया–तो क्या हुआ ऐसे वापस अपने में लाओ, ऐसे वो पुरानी आदत हमारी छूट जाए, जो

Contd.2.

पुराना संस्कार है, आदत के वश सब है। कौन है जो आदत के वश नहीं है, स्वभाव मे वश नहीं है, Nature के वश है, पर I am free, हम किसी के वश में क्यों आयें? I am free, हम अपने को free करें सबसे और हमारे से सब हो सकता है। कभी नहीं बोलो कि ये बात मैं नहीं कर सकता हूं, तुम नहीं कर सकता है पर वो तुम्हारे से प्रेम करके करा देता है, तो प्रेम का तो तुमको गुलाम करेंगे ना।

प्रेमी : सत् के प्रति आसक्ति रखो, भगवान इसे खोलिए।

भगवान : सत् में आसक्ति है असत् में ख्याल ही नहीं है। असत् में ख्याल नहीं जाता है क्योंकि असत् समझा कि अभी ये जीता है आज है, कल नहीं होगा, फिर मेरे को क्या होगा? तो हम पहले से ही छुट्टी लेके बैठेंगे सारे संसार से।आज ये चीज़ है कल नहीं होगी। आज मैं शाहूकार हूं या गरीब हूं तो भी सब चलेगा पर ये नहीं कि मैं पहले जैसा दुखी होंगे, जैसे अज्ञान में रोते थे, दुखी होते थे कि देखो ये मेरे को अच्छा लगता है, ये ऐसा वो ऐसा। अभी किसी के जाने में जेकर दुखी होगा? कौन सी चीज़ चली जाए तो तुमको भगवान को बोलना पड़े कि ये क्या किया? कौन कहे साहब नूं... सोचो ये बात ये भी चला जाए-२ अभी है तो इस्तेमाल करो, नहीं तो चले जाने पर दुखी नहीं।

प्रेमी : अद्वैत (सत्) में कैसे रहें?

भगवान : कैसे न, पर सत् का भाव करो तो द्वैत है नहीं। असत् का भाव करते हैं तो द्वैत में है, सत् में कौन सा द्वैत है। मैं ही हूं सबके हृदय में।

प्रेमी : अगर असत् को Importance नहीं देंगे तो अपने आप वो चला जाएगा? सत् का भाव आएगा?

भगवान : सत् का भाव है ना। असत् को थोड़ी धिकारने का है। असत् अपनी जगह खड़ा है, पर हमको धिकारना नहीं है कि ये असत् है। कभी शक्ल में गुंझ नहीं करने का है कि ये ऐसे है-२। फिर सत् वाला कैसे हुआ। सत् वाला तो सत् ही देखता है पर उनको कुछ बोलना नहीं है। बाहर दृश्य जो चल रहा है वो ठीक है। बाहर दृश्य Change नहीं करना पर अंदर अपने को ही Change में रखो। जो सत् है उसका आदमी

Contd. 3.

अभाव करके अहंकार करता है कि ये मैंने किया-२। क्यों नहीं बोलता है कि ये मैं ने नहीं किया, पर हो गया। सत् हो जाता है। अभी समझो हम कोई सेवा नहीं करते हैं तो उस रूप में सेवा होगी। ये जो संसार का चक्कर है ना वो चलेगा। कोई इसमें Part ले या न ले किसी की सेवा करे या ना करे, पर सब होगा, सब Automatically हो जाएगा।

प्रेमी : भगवान ये बात अच्छी लगी कि सत् में ही आसक्ति रखें।

भगवान : सत् में आसक्ति रखो, सत् में मोह भी रखो, सब ही रखो, सत् ही तुम्हारा लक्ष्य है, बाकी तो लक्ष्य ही नहीं है। बेगाना है वो, देह में कर्म कांड भक्ति करता है, द्वैत में, तो उनको जन्म ज़रूर मिलेगा। पर जो अद्वैत में रहते हैं वो अहंकार में कुछ भी नहीं करते हैं, जे सेवा देते हैं तो Handle की तरह करते हैं। एक लेखक है हमने उसको बोला कि गीता में लिखा है कि सत् का अभाव किया है, एक ही अक्षर तुम सबने सत् का अभाव किया है, असत् का भाव किया है। उसने बोला कि ऐसा लिखा है कि मैंने सत् का अभाव किया है असत् को पकड़के बैठा हूं, वो फिर गीता देखता है कि गीता में ये लिखा है दो अध्याय में। सच में कोई गीता पढ़े तो एक-२ अक्षर पढ़े तो मज़ा आता है, पर पढ़ते कितना है। सत् का अभाव पढ़ते ही नहीं है, वो फिर उस बात को चलाये कि सत् माना क्या? उसको क्यों विसरें?असत् को पकड़के बैठे हैं, माना माया को पकड़के बैठा है। उसकी बात मेरे से करेगा तो क्या बात करेगा? मैं एक ही अक्षर बताते हैं कि सत् का भाव किया है कभी? तो Right बोलता है ना कि सत् का अभाव क्यों किया? असत् को क्यो पकड़के बैठे हैं? मैं सबको ये बात बोलते हैं कि जे सत् का अभाव नहीं करो तो बात ही खत्म हो जाएगी, लेन देन ही खत्म हो जाएगी।

प्रेमी : सत् आपने ही पकड़ाया है और सबने कर्म व्यंवहार पक्का कराया है, पर फिर भी कभी कभी Slip हो जाते हैं।

भगवान : वो बात दूसरी है। पर सच्ची बात कौन सी है? सत् का भाव करना। किसने सत् का भाव किया है? मैं बैठे हैं ना, कोई बोले कि मैंने सत् का भाव किया है। व्यंवहार - जगत, तू - मैं, सब कुछ है पर उसमे ज्ञान ठहरता नहीं है। तू फिर बोलते हैं सब, तो सब माना क्या, सबने वो

Contd. 4.

ही बात किया है, पर मैं बोलते हैं किसने सत् का भाव किया है और असत् का अभाव किया है? ये ज्ञान जो है ना वो Detail नहीं करनी है, उसमें ले बाई नहीं करनी है, उसमें है कि ये सत् है या नहीं है? ये शरीर सत् थोड़ी है, उसमें बात है, उसमें ही द्वैत है जे उसको ही विसार दियो तो फिर सत् ही सत. है। आप सत् किये सब सत्, परमात्मा सत् है, सब सत् ही किया है। फिर तुम क्या बोलेंगे? बहुत बातें करते हैं ज्ञान की वाद विवाद करते हैं पर मेरे को अच्छा नहीं लगता है वाद विवाद। पर मैं बोलते हैं Total बताओ कि सत् का भाव तुमने किया है-असत् को पकडके बैठे हैं,उसमें ज्ञान कैसे ठहरेंगा।

प्रेमी : सत् है बराबर चौतरफ पर मन बाहर निकलकर चला जाता है?

भगवान : बाहर निकलकर किधर जाता है। मैं बोलते हैं बाहर जाता है तो भली जाए पर किधर जाता है? अंदर बाहर एको जाने,दूजा भाव न होवे।

प्रेमी : सत् बाहर अंदर कैसे है?

भगवान : इंधर अंदर कौन है ये बाहर कौन है? तुम्हारे में कौन है? दूसरे कौन है? सत् ही तो है। हम असत् शरीर को पकड़के बैठे हैं। असत् दुनिया को पकड़के बैठे हैं तो किसको किसको पकड़के बैठे हैं, विचार करना है। बहुत Deep में सत् है पर सत् कोई जगत थोड़ी है। जगत तो Change- able है! उसको हम सता कैसे दें, मतलब ही नहीं है!

प्रेमी : भगवान आपने अभी बताया Detail में नहीं जाना है।

भगवान : समझो मैंने तो ज्ञान बताया और मैंने तो किया खलास कि सत् का अभाव नहीं करो। अभी ये detail कितनी करेंगे। बेटा ऐसा है, बेटी ऐसी है, जगत ऐसा है, माया ऐसी है, फलाणा ऐसा है।

प्रेमी :अभी बताया कि और deep विचार करो,तो वो deep विचार क्या है?

भगवान : ये ही विचार है ना कि सत् को पकड़ो तुम बातें पकड़के बैठे हैं।

प्रेमी : भगवान असत् की बातों में, देह की बातों में हम सत् को भूल गए हैं।

भगवान : पत्ता नहीं क्या करते हैं मेरे को तो समझ में नहीं आता है,तुम्हारी बोली मेरे को समझ में नहीं आती है सतको हम विसारते हैं और असत् को हम बिठाते हैं।

Contd. 5.

**प्रेमी** : ऐसा क्यों बोलते हैं कि ब्रह्मज्ञानी की एक दृष्टि अनंत युगों से भी ज्यादा कीमती है?

**भगवान** : जैसे मैंने बोलो सत् का अभाव नहीं करो तो कौन तुमको बोलेगा कि सत् का अभाव नहीं करो, वो टिकेला है, तो वो तुमको भी टिकाने की कोशिश करता है कि तुम सत् में टिको और जो वो टिकेला ना होवे तो वो तुमको बहुत बात बतायेगा, बेटा ऐसा, बेटी ऐसी, जगत ऐसा है। अभी detail करने की मेरे को क्या ज़रूरत है। ये सब वशिष्ट में लिखा पड़ा है detail उसमें लिखी पड़ी है, हम तो बताऐंगे Main फिर तुम जाके देखो।

**प्रेमी** : लगता है सत् का अभाव ना करें, स्वभाव संस्कार रूकावटें डालता है।

**भगवान** : वो भली रूकावट डाले, पर तू अपना झंडा पकड़के रख तू ना हिल।

**प्रेमी** : ऐसा कौन सा रास्ता पकड़ें जो सत याद रहे, बाकी सब बातें छोटी लगें?

**भगवान** : वो तो ज्ञान है, सत् का भाव करो। अपने आप सब तुम्हारे पास आएगा, पर तुम मांगेगे नहीं कि मेरे को मिले।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

*'ज्ञान में लीनता होवे'* [51]

जो भी सत्संग में जाते हैं तुम, चाहे छोटे में, तुमको कैसे उठने का मन होता है सत्संग से। सुनते हैं तो लीनता आना चाहिए या नहीं? जिधर हैं उधर ही एक रस हो जाएं। धरती से धरती हो जाएं, पर तुम बीच से उठते कैसे हैं? ये मेरे को बताओ। रात को खाली हमने भजन बोला तो जो दो-चार आपस में बैठे थे, उठने का मन ही नहीं था उनका। इतना Viabration था, इतनी शांति थी, इतनी लीनता तो हम उठें कैसे? उठने का मन ही नहीं था, पर खाने का Time, ये Time, वो Time इसीलिए Busy हो जाते हैं, पर रात को तो मैं हैरान हो गए। सब बिल्कुल एक रस थे। जो बैठे थे गुम हो गए। मैं बोलते हैं तुम जिधर भी सत्संग सुनते हैं उधर क्यों नहीं लीनता आती है। जिधर भी बैठो धरती से धरती हो जाओ। सत्संग माना क्या? सत् का संग। ऐसा सत्संग करो जो उठने का बिल्कुल मन ना करे। रात को ऐसे सब लीनता में आ गए। कोई भजन में एसा रस होता है जो आदमी जीता ही नहीं रहता है।सत्संग छोटा होवे या बड़ा होवे, हम तो अपने साथ बैठेंगे ना। वाणी उसकी सुनेंगे पर हम भी अपना उमंग पूरा करके उधर ही लीनता करेंगे कि आज ये भजन बोलो, ये वाणी बोलो जिधर भी सत्संग सुनेगा, ऐसी लीनता आ जाये, जो मन उठने को न बोले, कि उठो। भले छोटे सत्संग में जाओ, वाणी के दो वचन सुनें जो मेरे से लगे, इससे अधिक देखें ही नहीं कि इसने क्या बात किया,उसने क्या बात किया, पर जो वचन हमको दिल में लगा तो हम उठाके आ जाएं। अगर मेरे को भी उमंग है तो जोश से मैं भी भजन बोलूं। जिसमें सबको लीनता आये, लीनता करो ना। सत्संग में तुम ही करो, पर तुम्हारे मन में है उठना-२, भागना-२, ये कोई ज्ञान थोड़ी है, सारी उमर हमने सत्संग किया है पर सारा Time लीनता में बैठते हैं, रात को अगर मैं लीनता में नहीं बैठते तो जो सामने बैठे थे वो लीन कहाँ होते थे। एक सुई जितना उठने की दिल नहीं थी। मेरे को तो सब मूर्ख लगते हैं जो लीनता में नहीं आते हैं। भले दो वचन भी सुने पर उनमें गुम हो जाएं, फिर अन्दर ही हाजिमा हो जाए। ठीक हो जाए। पर जो लीनता नहीं है तो सतसंग भी नहीं है। जो उधर सत्संग में लीनता नहीं है तो मैं

Contd.2.

खुद लीनता जगायेगा। तो क्या होगा। लीतना के सिवाय ज्ञान होगा ही नहीं अन्दर। तुम ही बताओ।

प्रेमी : लीनता में लगेगा कि आपसे अन्दर ही मिले पड़े हैं।

भगवान : हम बोलते हैं जहॉ भी बैठो चाहे जंगल में बैठो तो भी लीनता आना चाहिए। तन मन एक रस स्मिरण कहिए सोये, स्मिरण कहिए सोये..। ऐसा स्मिरण करना चाहिए, ऐसा सत्संग करना चाहिए जो हमको उठने का बिल्कुल मन ना होवे, हमने Life ऐसे गुज़ारी है। लीनता के सिवाय हमको मज़ा नहीं आता है। चाहे हम सुनें, चाहे हम सुनायें, अभी देखो सब शांत बैठे हैं ना, एक आदमी का भी जे मन उठने का करे तो बाजू वाले को विक्षेप आयेगा कि इसके मन में तो खाली जाना-२ लगा पड़ा है। बहुत सत्संग में चाहिए शौंक-इश्क चाहिए। जे इश्क नहीं है अंदर में तो सत्संग में आना बेकार है, अंदर में इश्क पैदा करो, ऐसा भजन बोलो, ऐसी वाणी बोलो, ऐसी बात करो जो आगेवाले को शौंक हो जाएगा कि ये कितना अच्छा है, किसको गुम करना चाहिए। चैतन्य महाप्रभू था, उसको राग प्रभू से लगा तो वो जिसको हाथ लगाए वो भी नशे में आ जाये-२, जो मैं बोलता है कि तुम जिधर भी बैठो सबको गुम करो। हम एक दफा विजरेश्वरी में गए तो जो माली की Wife थी वो हमारे से ज्ञान सुनने लगी और प्यार करने लगी, फिर हमने भी उसको प्यार किया मतलब है कि ये शरीर जहॉ भी बैठता था तो लीनता के सिवाय नहीं बैठता था।

प्रेमी : ये बात अच्छी लगी कि इश्क और शौंक होना चाहिए, जिससे लीन हो जायें।

भगवान : हम बोलते हैं कि सत्संग में हमको मैला करना चाहिए, खुद भी जाके और ऐसा भजन बतायें जो वो लीन हो जायें,नहीं तो नहीं जाना चाहिए। रूखा सत्संग हमको नहीं चाहिए। प्रेम के सिवाय कुछ भी नहीं है दुनिया में।

प्रेमी :हमारे में अभी तक अज्ञान है, इसीलिए लीनता नहीं आती है।

भगवान :अज्ञान भली धूड़ पाए, पर तू अपनी होशियारी करके उसको मार, अज्ञान को मारने के लिए ज्ञान है, प्रेम है, शौंक है, इश्क है। इश्क के सिवाय अंकल भी आयेगी नहीं।तुम्हारे में इश्क है ही नहीं। हमने तो

शुरू से ही इश्क पैदा किया है कि इस ज्ञान में इश्क नहीं है तो कुछ भी नहीं है।ये भजन है हमारे पास **"जिनखे इश्कु नाहे तिनखे कतल करायां, पहिंजीअ.."** इनको कितना सिखाऐंगे,मूर्खों को, बिल्कुल मूर्ख है। नहीं तो हमको कोई बताए कि हमको सब सत्संग में लीनता आती है।

*ओम*

## ओम सतगुरू प्रसाद

## *'निश्चय करो और कराओ'* [52]

**प्रेमी** : भगवान एक दृष्टांत है दो आदमी आपस में रात को मिले, वार्तालाप किया, सुबह को उठके एक बोलता है कि रात सुखदायी हुई, क्यों कि सत्संग वार्ता हुई, दूसरा बोलता है कि दुखदायी हुई क्यों कि हमने भगवान का स्मिरण किया नहीं।भगवान प्रश्न है कि भगवान स्मिरण करना या सत्संग वार्ता करना, दोनों आदमियों को अलग-२ वीचार क्यों हुआ?

**भगवान** : देखो ना, वो दोनों एक नहीं हुए तो उसको लगा ही नहीं कि मैं ने कोई सत्संग किया पर जे दोनों एक होते थे तो सत्संग हो जाता था। इसीलिए मेरे को आता है कि ये सब निश्चय कराये, किससे भी मिलें, किसको भी ज्ञान सुनायें तो निश्चय ही कराये उसको, निश्चय में उसको ताकत आयेगी। निश्चय नहीं होगा तो बाकी ऐसे ही फिज़ूल दो आदमी बात करेंगे, कोई आदमी बोलता है कि हम घर में ज्ञान की बात करते हैं, सत्संग की बात करते हैं तो मैं बोलते हैं कि कौनसा सत्संग करते हैं, तुम ही बोलो जभी ये लोग घर में आपस में बोलते हैं तो क्या सत्संग करते हैं, वो भी जो दो आदमी थे दृष्टांत में वो आपस में Fit नहीं हुए, ऐसे ही सत्संग किया जिसने सुनाया उसको मज़ा नहीं आया।

हमेशा जभी बरसात होती थी शरणागति में तो इतना पानी होता था,हम बोलते थे कि आज तो वो आयेगा जिसकी मेरे पास अमानत है तो सचमुच एक योगी आ ही जाता था।हमने ये मज़ा देखा है ना,जो एक से एक-२ ज्ञान होता,तो उसको मज़ा आ जाता है पर जे एक से एक सत्संग नहीं ,हुआ तो अठसंग होगा तो सत्संग कहॉ हुआ।तू अपने से ही पूछ तुम किससे सत्संग करो पर तुमने ऐसी बात किया जो तुमको भी तृप्ति आये, उनको भी तृप्ति आये।तुम्हारी बात से उसको मज़ा नहीं आया। हमेशा जभी बात करो तो तुम्हारी बात से उसको मज़ा आये,उसकी बात से तुमको लगे कि कितना अच्छा सवाल इसने पूछा।अभी समझा सत्संग किसको बोलते हैं।

**प्रेमी** :निश्चय पक्का हुआ है पर सत्संग में बैठके वृति कभी-२ भागती है?

Contd.2.

**भगवान : वृति का जो ज्ञान है ना तो वो रोज वृति तू बनायेगा,रोज Down होगी, पर जे निश्चय करेगा तो निश्चय से ही चलेगा।**

**प्रेमी** : भगवान,अपने बताया कि एक निश्चय करने का ही काम गुरू ने दिया है, वो भी हम नहीं पक्का करते हैं?

**भगवान** : ये ही बात मेरे को आती है कि ये सब जो आते हैं तो ज्ञान-२ क्या, पर निश्चय बुद्धि होना चाहिए कि आत्मा के सिवाय, गुरू के सिवाय, ज्ञान के सिवाय कुछ भी नहीं है,-ये है निश्चय।

**प्रेमी** :जैसे ही निश्चय हो जाता है तो अंदर ही अंदर शांति आ जाती है।

**भगवान** : जिन्होंने मेहनत किया है उनको निश्चय है। जिन्होंने मेहनत नहीं किया है उनको निश्चय नहीं है। आज तक भी लीला-२ करते हैं।

**प्रेमी** :एक ही बार निश्चय होता है या पुरूषार्थ से पक्का होता जाता है।

**भगवान** : एक वारी अभी निश्चय है तो कोई भी मेरे को हिलाके दिखाये, बस निश्चय ही है, पर हम थोड़ी बोलते है कि मैं आत्मा हूं,या भगवान हूं! ये कोई शव्द हम अपने को नहीं देते हैं।

**प्रेमी** : सत्संग में बात चली कि अवतार का कोः निश्चय नहीं होता है?

**भगवान** : हमने ये बोला कि उनको याद ही है अपना आप। ये सब अपना आप है। चाहे मैं पेड़ हूं, चाहे मैं पौधा हूं, चाहे मैं चंद्रमा हूं या मैं तारा हूं पर पक्का है कि ये सब मैं हूं, मेरे को चिंतन नहीं करना पड़ता है, याद नहीं करना पड़ता है। निश्चय रोज़ नहीं करना पड़ता है, एक वारी आके पक्का करके देखें कि मैं देह से,मन से,बुद्धि से उपर हूं तो फिर निश्चय हो गया।

**प्रेमी** : निश्चय करना पड़ता है या आपे ही हो जाता है।

**भगवान** : ऐसी संगत में बैठे हैं ना, तो संगत से हो जाता है। अभी समझो कोई नया आता है, आज पुराना है तो अभी क्या किया, पहले क्या किया, हरेक का है ना संस्कार तो उनको इधर का ज्ञान अच्छा लगता है! लगता है इधर हमको शांती मिलेगी। हम तो कुछ करते नहीं हैं उनको,

Contd. 3.

हम तो कुछ बोलते भी नहीं हैं, पर उनकी भावना जो है वो अपना काम करती है और मेरी भावना मेरा काम करती है।

प्रेमी : भगवान आप रोज़ बताते हैं कि निश्चय कराओ?

भगवान : मतलब है कि लम्बी चौड़ी कथा ना करो, वो लम्बी चौड़ी Detail नहीं बतानी चाहिए। माया जगत सम्बंधी धूड़ छाई, पर सीधा बताना चाहिएं जैसे कृष्ण पहले ही बोलता है कि हे अर्जुन तू अर्जुन ही नहीं है, फिर मैं कौन हूं, जभी अर्जुन नहीं है तो वो पीछे भगवान से सवाल करेगा कि मैं कौन हूं, मैं क्या हूं, बस ये बात है ना, शास्त्र में कौनसी बात है। मैं कौन हूं, मैं कहॉ से आया हूं, मैं कहॉ जाउंगा। तम्हारे में आना जाना है नहीं तो कहॉ जाएगा। ये ज़रूरी है कि हम अपने को जाने कि मैं कौन हूं। ऐसे पक्का नहीं है कि इसने जाना। भली वो बोले भी पर जब तक वो दूसरे को ना जगाये तब तक नहीं जाना। जो देख दिखाये, देखे पर दिखाए, खाली मैं आत्मा हूं तो मैं खुश हो गया, मैं नहीं खुश हुआ। वो कौन सी पक्क है जो मेरे को पक्का है जभी एक-२ जाके किधर बात करेगा तो वो बोलेगा कि तुमने किधर सुना है।

प्रेमी : कल वाणी में दृष्टांत चला उस में भक्त ने बोला कि हमने भगवान का स्मिरण नहीं किया हमने एक दूसरे को प्रसन्न नहीं किया? कैसे मालूम पड़े कि हमने प्रसन्न किया?

भगवान : कोई भी बात करते हैं भक्त तो बोलते हैं कि भगवान का ही स्मिरण किया। कोई भी बात करे क्यों कि भगत है ना, चोर नहीं है तुम क्यों एतराज़ करते हैं। कल हमने ये बोला ना कि एक दूसरे को प्रसन्न करें। उसने भी बात किया, उसने भी बात किया। दोनों ने ज्ञान लिया दिया। बात खत्म।

*ओम*

**ओम सतगुरू प्रसाद**

***'आत्म निश्चय वाला ज्ञानी है'*** *[53]*

**प्रेमी** : भगवान ज्ञान में ध्यान समाधि, नियम क्या होना चाहिए,हमको अपने में?

**भगवान** : तू बताओ, ज्ञान के बाद कौन सा संकल्प बचता है तो मैं समाधि करूं? समाधि लगाने से क्या होता है? ख्यालों से खाली हो गया पर तू ज्ञानी हुआ? भली खाली ख्याल से हो जाओ पर ज्ञानी नहीं हुआ।

**प्रेमी** : भगवान, कौन ज्ञानी हुआ?

**भगवान** : ज्ञानी वो है जो उपर चढ़ा कि मैं सब से आगे आत्मा हूं, I am before God was. भगवान से भी पहले हूं, ये निश्चय हो जाता है। मैं बोलते हैं कि ध्यान नहीं करो, समाधि नहीं करो, समाधि तो करें पर उसमें क्या बैठके सोचेंगे, अपना सुख मिलेगा कि मैं तो बहुत शांत हूं, मेरे को संकल्प नहीं है। अपना सुख मिलेगा समाधि में, चाहे ध्यान में, पर ज्ञान में है अंदर की Improvement अपना जीवन सफल करना है, नहीं तो जीवन कैसे सफल होगा। तुम को कोई खराब करे कि तुम ध्यान समाधि नहीं करते हैं, तो वो बताओ तुम अपनी बात करो कि तुम हिलेंगे।

**प्रेमी** : आपने अभी कहा कि ख्यालों से कोई खाली हुआ तो वो ज्ञानी नहीं है, जब तक वो आत्मा उन्नति ना करे?

**भगवान** : आत्म उन्नति करे ना, उसमें ज्ञानी का सवाल नहीं है। ज्ञानी वो है जो कामनाओं का,ख्यालों का नाश करता है,नही तो ज्ञान काहे का है।

**प्रेमी** :भगवान,पहले ख्यालों से खाली होगा,फिर I am before God was.

**भगवान** : क्या भी करे भली ख्यालो से खाली होवे पर ज्ञान अंदर का निश्चय है, तो अंदर के निश्चय को हमको डोलायमान नहीं करना है। भली बाहर क्या भी होवे।

**प्रेमी** :वाणी में आया संकल्प विकल्प शांत हो जाना ज्ञान नहीं है, पर आत्मा का निश्चय करना ही ज्ञान है। पर संकल्प विकल्प रहित होना ही तो ज्ञान है।

**भगवान** : संकल्प अच्छा भी आता है या नहीं, संकल्प मैं तेरे लिए करूं,

Contd.2.

कोई भी क्यों कि प्यार है तेरे से पर विकल्प मैं किस के लिए करूं तो मेरी बात नहीं है। संकल्प है पर विकल्प नहीं है। आत्मा तो है ही है। आत्मा को मैं याद नहीं करते हैं, वो तो प्राप्त है। प्राप्त को तू अप्राप्त माने। सब आत्मा को भूल गए हैं। अप्राप्त समझके बैठे हैं, क्यों न हम प्राप्त समझें।

प्रेमी : भगवान प्राप्त करने के लिए संकल्प विकल्प से रहित होना ही काफी है?

भगवान : नहीं, इतना क्यों है, अशोक रहना है, मोह से रहति रहना है, बहुत बातें है। अशोक रहना कितनी बड़ी बात है। भली हमारा बेटा मरे या बाप मरे, अशोक। शोक किसी बात का नहीं।

प्रेमी : भगवान, विकल्प का अभाव होगा तो ही आत्मा की शक्ति प्रकट होगी?

भगवान : मैं ने बोला ना विकल्प क्यों करें? संकल्प करें तुम्हारी भलाई के लिए, बाकी विकल्प क्यों करें?

प्रेमी : भगवान वाणी में आया कि Thoughtless के आगे आत्मा में स्थित होना है, वो कैसे ?

भगवान : संसार की प्रलय करो। संसार को लेकर बक ना करो, माना मन में संसार की प्रलय करो और आत्मा की पक्क करो। प्रलय नहीं करेगा तो संसार की चीज़ें, संसार के आदमी याद आएंगे। उनकी प्रलय करके बैठो, बोलो बना ही नहीं है।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

## 'क्रोध पे वाणी' [54]

प्रेमी : बात बात पर क्रोध आता है?

भगवान : सामने वाले को दिल नहीं है? जिस के उपर क्रोध करता है, खाली तुमको दिल है, क्रोध करने का। तुम वह बात करो जो वो सह सके। घर में सब बोलेंगे चुप करो अभी जानवर आ गया है। गुस्सा करेगा तो तुम जानवार जैसा काटेगा क्या? उन लोगों ने तुम्हारा क्या बिगारा है, जो तुम गुस्सा करेगा? वह देखना चाहिए ना कि मेरा किसी ने कुछ बिगारा ही नहीं है और मैं क्रोध करूं, यह क्या बात है? क्यों कि धरवालों को Weak करके उन के उचर तुम राज्य करना चाहते हैं और क्या? सब आदमी ऐसे ही है। घर में आया जैसे शेर आया, क्रोध में तुम किसको भी जीत नहीं पाएगा। क्रोध निकले ही नहीं ऐसे गदी पर बैठे हैं जिधर मैं निकलती ही नहीं है। क्रोध आएगा तो मुफ्त में थोड़ी आएगा, ज़रूर तुम्हारी इच्छा पूरी होती नहीं होगी जो तू अपनी Energy खराब करेगा। क्रोध में आदमी अपनी Energy खराब करता है, कर्म बनाता है। बहुत नुक़सान है। क्रोध जो है न हमारे में ज़हर देता है। बाहर भी ज़हर अन्दर भी ज़हर। Emotion किस पर क्यों करें?सब को Free छोड़ दो। क्रोध आता है,तो तुम्हारी मर्जी पर कौन चले? क्यों न हम धीरज से बात करें, उस को समझायें, उस को बताए सब।

प्रेमी : अपने स्वरूप में कैसे ट्किें?

भगवान : किसी के दिल को इतना भी ठेस नहीं लगाना है! दिल का शीशा तोड़ते हैं जब क्रोध आता है और हम दूसरे पर क्रोध करते हैं वो जुड़ेगा नहीं पहले जैसा फिर।

प्रेमी : घर में क्रोध पर काबू नहीं पा सकते?

भगवान : चाहे तुम्हारे से कोई छोटा होवे तो भी तुम उसके उपर नम्रता करो तभी तुम उस को जीतेगा। पर मैं उस को गुस्सा करेगा तो अहंकार से बात किया तो वो तुम्हारा दुश्मन हो जाएगा।

प्रेमी : भगवान क्रोध से तो किसी को बोलते हैं, वो नहीं बोलना चाहिए?

भगवान : कौन सा मेरे को हक है, जो मैं क्रौध करूं? प्रेम करें तो ठीक है

Contd.2.

किसी को। Weak करना किसी को मेरा धर्म नहीं। क्रोध दूसरे का मास खाना है, दूसरे का खून सुखाना है। तू किसके उपर क्रोध करेगा? तू अपने को क्या समझेगा? उसी Time अहंकार आ जाएगा। चाहे बड़ी सास होवे तो भी बहू को बच्चे जैसा देखे, पर यह नहीं कि मेरी बहू है। तुम उस पे गरम होते हैं कि ऐसा होता है(2)?

प्रेमी : भगवान क्रोध पर काबू पाने का अभ्यास करता हूं।

भगवान : जिस घर में तू रहता है, खाता है, सोता है, उस पर क्रोध करने का क्या मतलब है?

*ओम*

तुम किसको मज़ाक में कोई भी शब्द बोलते हैं कि"तू ऐसा है " तो उसको अच्छा लगेगा? तुम किससे इज्ज़त से बात करेंगे तो तुमको भी इज्ज़त मिलेगी। एक शब्द भी बोलो तो विचार से। हमारी गाली में भी मतलब है। हमारे पास इधर जो भी योगी बैठे हैं वो तपस्या में पक्के हैं - यह ज्ञान फकीरी का है,तुम पाण अमीरी करते हैं हमारे ज्ञान से, यह पक्का समझना। जितना सुख पहले नहीं लेते हैं(थे)- वैराग किसको भी नहीं है। पाण अब जाश्ति सुख लेते हैं - घूमना, फिरना, खाना, पीना, ये, खाली खुशी करते हैं,बोलते हैं भगवान मेरा प्रसाद करना। प्रसाद माना क्या? Plate बनाऐंगे, पैसा खर्चेंगे,ज्यास्ती पैसा है,वो खर्च करेंगे,ये है प्रसाद। तुमको खाली ज्ञान देने का है कि "मेरे गुरू का ज्ञान क्या है" पर Society नहीं बनाने की है। जितना कोई बात करे उतना उसको जवाब दो, ज्यास्ती उससे क्यों बोलें? क्या हम नहीं जाते,आते,घूमते हैं? जितना वो शब्द बोलते हैं, उतना बताते हैं। जब हमको नहीं बोलना होता है, तो दूसरी तरफ मुंह करते हैं, वो भाग जाते हैं, वो समझ जाते हैं कि भगवान की Mood नहीं है बात करने की। मैं जास्ती क्यों बोलें? यह कोई ज्ञान नहीं है जो हम इधर उधर जायें, आयें, खाएँ, पीएँ, ये क्या बात हैं?

सत्संग वो करे जो पक्का होवे,देह अध्यास जिसका चला जाये। हमारे पास सालों के साल भी कोई रहता है, वह इच्छा रखता है कि कुर्सी पर बैठे, हम बोलते हैं जब तक तुमको देह अध्यास है, तो हम नहीं कुर्सी पर बिठायेंगे। देह अध्यास में तुम किसको क्या बनायेंगे? तुम भी खुद उपर नीचे होते हैं, तो उनको क्या सुनाएँगे? पहले हमको देह अध्यास पूरा मिटाने का है। देह अध्यास घरवाले कितना मिटाते हैं? हमारी लड़कियाँ अभी निर्बन्धन है, जो घरवाले मरे जीये, वो कुछ बोलते ही नहीं है। इतना Freedom तुमको है? जो वो बोले कि हमारे घर में मौत है तुम नहीं आना, हम आपे ही उठायेंगे।

सत्संगियों में भी ज्यास्ती मज़ा लेते हैं- खाना,पीना,भजन,कीर्तन, मनोरंजन सब है, क्या नहीं है? पर जो वैराग है, वो दूसरी बात है, वैराग कठिन तुमको लगेगा।

Contd.2.

प्रेमी : सबसे प्यार कैसे होवे

भगवान : सब कौन है, जिससे प्यार होवे? पहले तो तू अपने को जान कि तू कौन है, प्यार करनेवाला? तू ने अपने को मिटाया किधर है जो तू प्यार करेगा? अपने को मिटाते है तभी प्यार होता है, अगर हम अपने को ना मिटाये तो प्यार होता ही नहीं है। जल्दी नहीं है कि मैं किसको खिलायें, पिलायें, सुलाएँ, वह बस प्यार हो गया। प्यार है अपने को गँवाना, तो आकर्षण होगा जो वो दो वचन के लिए खाली मेरे पास आए। अपने आप को कोई मिटाता नहीं है, जहाँ प्यार है। तुम्हारे को किसमे मोह होगा तो तुम प्यार कैसे करेगा? Free नहीं है मोह वाला। पर कोई थोड़ा रास्ते पर आता है तो हम बोलते हैं-"ठीक है"! कोई साकार भक्त है, कोई निराकार भक्त है। साकार भक्त है जुगनू की तरह, कभी भक्ति करेगा, कभी नहीं करेगा।कभी प्यार करेगा, कभी नहीं करेगा। और निराकार भक्त है लगातार सबको अपना समझेगा। तुम यह नहीं बोलो कि "मेरा सबसे प्यार होवे"- प्यार होवे यह नहीं, पर तू किससे रागद्वेष नहीं करो। बस यह ही तुम्हारा Play है कि तुम राग-द्वेष नहीं करो। तुम शांति में रहो, राग-द्वेष करेंगे तो तुम्हारे अंदर शांति नहीं आयेगी। ना किसी से दोस्ती, ना किसी से वैर। रागद्वेष है नहीं, समता में हम रहेंगे, तो प्यार करने, ना करने का सवाल ही नहीं होता। जो सामने आयेगा, जैसा तुम्हारा Nature होगा, वैसा तू करेगा Nature से। अभी अंदर कुछ गया है, तो वो निकलता है ना। तुम्हारे अंदर भी जो जाएगा वो निकलेगा। तुम इसी Time Artificial प्यार करेंगे तो उनको पाण शंका आयेगी कि यह माई Artificial प्यार करती है।

प्रेमी : भगवान आप आशिष करो।

भगवान : मैंने सबके उपर आशिष किया है, खाली तुम अपने उपर कृपा करो कि रागद्वेष किसी से ना करो, और एक भी गलत शब्द किसी से बात नहीं करो। ये बात है जो सब रहनी में होवे। न अज़ायज मज़ाक होवे, ना अज़ायज़ बात होवे, ना अज़ायज़ Time Waste करे। अभी मज़ाक करेंगे तो Waste of time - समय गँवाया ना? क्यों मज़ाक किया? मज़ाक करो पर ज्ञान में करो ना, जो उसको ज्ञान मिले। मज़ाक करके खुद ही

Contd.3.

हम भावी बनाते हैं। और वह फिर कभी सुधरेगा नहीं, जो वह ब्रह्मज्ञान में बैठे, वैराग में बैठे? मज़ाकी आदमी क़भी भी वैराग नहीं लेगा, खुशी२ में रहेगा। ये ज्ञान कोई एक हफ्ता सुने तो सुना सकता है, इतना ज्ञान सरल हम देते हैं जो वह सुनके तोता बन सकता है। एकदम कॉय कॉय जाके करेगा, हॅंस थोड़ी बनेगा, जो पानी छोड के दूध पीए।वो कौव्वे जैसे कॉय कॉय

करेगा और तुम बोलेंगे "इसने तो बहुत अच्छी वाणी चलाई,बहुत अच्छा भजन बोला" पर तुम रहणी नहीं देखेंगे कि उनकी रहणी कौन सी है?

प्रेमी : भगवान मन कभी२ इधर उधर चला जाता है।

भगवान : सारी दुनिया में जो प्रिय में प्रिय चीज़ है वह मेरे को है, फिर मैं कहॉ भी दुनिया में बैठेगा तो अॅंगारा लगेगा। कहॉ भी बात करेगा अंगारा लगेगा कि मेरे को प्रिय में प्रिय चीज़ कौनसी है? अंगारा लगेगा तो कहॉ भी बैठ नहीं पाएंगे, बकबक नहीं करेंगे, परचिंतन नहीं करेंगे, कहॉ भी Time नहीं गॅंवाएॅंगे। कोई कितना हमको प्यार करें हम दूसरे दरवाजे से निकल आयेंगे, Life में हमने ऐसा नहीं किया है। - Time Waste करना, पराया खाना खाया, हम तो पानी भी किसी के घर में नहीं पीते थे। अकेला भी पका कर खायेंगे, पर दूसरे का नहीं खाएॅंगे। क्या ज़रूरत है? Waste of Time है - नहीं अच्छा लगता है। जो जिज्ञासु है उसमें वैराग होना चाहिये कि "क्या बात है?"हॅंसी मज़ाक क्या करना चाहिये?

प्रेमी : भगवान लगता है इतनी Life गॅंवाई है।

भगवान : सबने ऐसा किया है। ज्ञान से पहले Life क्या थी? बरा जनावरों जैसा खाना, पीना सोना।

प्रेमी : भगवान, कभी२ खुशी में आ जाते हैं-Balance में नहीं रहते हैं।

भगवान : वो ही हम सिखाते हैं-Balance, अपने उपर Balance होवे कहॉ हम को हॅंसना है, कहॉ हमको गुस्सा करना है। सब विकार हमारे Under होवे - हम Use करें ना करें, जैसे कोई हथियार होता है, वो सारा Time थोड़ी Use करने का है। कोई हथियार कैसे, कोई कैसे Use

Contd.4.

करते हैं। ऐसे ही हमारे पास सब ज्ञान है पर हम किस Time किसके आगे क्या बात करें?मौन करके विचार करो कि बात करके क्या हुआ?Time Waste हुआ - Time is money, More than money माया से जास्ती Time है। Time नहीं मिलेगा फिर। जो Time गँवाएँगे, वो वापिस नहीं मिलेगा। Time की महिमा समझो कि Time कैसे Use करना चाहिए? समझो मेरे को अपना सुख है- तो मैं दूसरे को सुख नहीं दे सकेंगे, बस यह बात है।

जभी हम दूसरे को अपना सुख देवें तो अपना सुख प्यारा ही नहीं लगता है। यह ज्ञान इतना निष्काम है जो देना सीखा लेना नहीं।

प्रेमी : भगवान, गुरू के सिवा कोई सुजाग नहीं करेगा।

भगवान : सारी दुनिया आजमाओ। माँ आजमाओ, भाई बहन बेटा, सब आजमाओ। एक भजन सिंधी में है-"दिठो मूं घणो जाचे सॅसार गुरू साण " । मतलब के साथी सभी, मतलब जो प्यार।

प्रेमी : भगवान, यह समझ में आता है कि सब मतलब के साथी हैं।

भगवान : सूक्ष्म में तुमको वासना है। तुमको हमने यह बात समझाई है पर किसने नहीं समझा है। समझो तुमने बेटे की मेरे से शिकायत किया, तो मतलब है इसीलिए तो किया ना। तो उनको दो ना, जो उनको चाहिए। मतलब वाले का मतलब पूरा करे, पर तुम तो निर्वासनिक होके रहो ना।

प्रेमी : भगवान, आशिष करो।

भगवान : इसमें आशिष की कौनसी बात है। ये अपने उपर ही कृपा करके तुम जाँचो। हम शाँति करके बैठें- न पराया है, न अपना है। सब एक ही परमात्मा का रूप है, तभी प्यार है। पर अगर भाई से अलग, भाई से अलग- एक सत्संगी से ज्यादा, एक से कमती, तो क्यों? कोई बात तुमसे करेगा, चुगली करेगा, तो वो तुम्हारा दोस्त हो गया, जिससे तुम बकबक करेंगे, तो वो तुमको लटकायेगा। तुम भी उनसे लटकेंगे, यह है एक दूसरे को लटकाना। झूठी बात आपस में करेंगे, परचिंतन के सिवाय दोस्त हो नहीं सकता, नहीं तो किस लिए दोस्त है? दोस्त से क्या किया है Life में तुमने? तुम मेरी बात चुप करके बैठ के अंदर देखो। दोस्त कैसे

Contd.5.

बना, कहाँ से आया- इतना Time हमको सत्संग में आये हुए हुआ है, न हमारी कोई सहेली हैं, न सत्संगियानी है। हमने बात ही नहीं किया है, तो सहेली कहाँ से आई? सत्संगियानी है तो भी अपने घर में सुखी है। ना मेरे को इच्छा है मिलने की, ना उनको, बाकी प्यार है। कोई मेरे को खेंचे तो मैं उसकी आँख निकालेंगे। अभी हम बाहिर जाते हैं तो कभी नहीं कोई Telephone आएगा कि "मैं मरता हूं, आप मेरे लिये आओ"। हम तो तुम्हारे साथ है, हमने तो तुमको अमर बनाया है, तो तुम मरते कभी हैं? कोई हमको बुला सकता है कि तुम इधर आओ, इधर आओ, क्यों कि हमने उनसे बात ही नहीं किया है ऐसी, जो वो समझे कि इस उस Time उसके पास नहीं है, जो आयेंगे। किस Time नहीं है किसके साथ? किसको हमने इन्तज़ार में रखा ही नहीं है- प्रेम में रखा है, लगन में रखा है, अगन में रखा है। तुमने मेरे को याद किया माना तुमने मेरी Body को याद किया, तो वो गलत है। जितना तुमने मेरा ज्ञान सुना है, उसको Apply करो बस। कितना ना अच्छा होगा जो हम ज्ञान अपने से लगाऐंगे और देह, नामरूप इधर नहीं रखेंगे। कोई न मेरा नाम बोले, ना मैं बोलूं। एक सत्संगियानी बीमार हुई घरवाले बोले कि भगवान को बुलाओ, वो बोली "भगवान मेरे पास नहीं है क्या, जो वो आएगा?" फिर घरवालों ने बोला "किताब छपाऐंगे, उसमें नाम डालेंगे"। उसने बोला "नाम तो वो (भगवान) डालेंगे नहीं" कीर्ति कौन कराएगा, तो चींटी आ जाएगी। तुम ज्यास्ति किसको सुनायेंगे तो वो मेरे पास आ जाऐंगे, हमको चींटियाँ नहीं चाहिये, जिज्ञासु चाहिये।

प्रेमी : भगवान, कैसे मालूम पड़े कि हम ज्ञान सही उठा रहे हैं?

भगवान : रागद्वैष नहीं है, मोह ममता नहीं है, इच्छा वासना है ही नहीं; समता है। जो रागद्वैष करे, वो जिज्ञासू नहीं है।

ओम

## 'DIGESTION POWER' 

**प्रेमी** : भगवान, आप बोलते हैं Digestion Power होना चाहिए हमारे में, इसको खोलिए।

**भगवान** : हमको खाना हज़म न होवे तो डाक्टर को दिखायें कि नहीं? ऐसे ही हमको अगर Digestion नहीं होती है जब हमको कोई शब्द बोलता है, Insult करता है, कुछ भी करता है, उस Time हम भगवान(सत्गुरू) को याद करके बोलें कि उनको गाली मिली होगी या ऐसे ही भगवान बन गये। उन्होंने Digestion किया होगा न? इतनी दुनिया की गाली सब खाया है न, तो हमको कुछ लगता नहीं है। ये कौन सा Digestion है? जो ये हम न खाएँ तो हम Strong भी न होवे। ऐसे ही चलेंगे लड़की होके, औरत होके। पर जे हमको कुछ बनने का है तो हमको Strong होने का है, जो सब हाज़मा हो जाए। अरे ऐसी कौनसी नई बात है? हमारे दादा भगवान कभी२ गाली देते थे तो वो बोलते थे, देखो कि हम इतनी गाली क्यों देते हैं, क्यों कि तुम्हारे घर में तुम्हारा मर्द बोलेगा ना कि तूं ऐसी कैसे है, तो तू बोलेगी कि दादा भगवान ने पहले ही पत्थर कर दिया, पहले ही आदत डाल दिया है तो अभी लगता ही नहीं है।

**प्रेमी** : भगवान, कल आपने वाणी में बताया कि अगर Digestion Power रखेंगे तो Balance में रहेंगे, नहीं तो हमारा Ordinary होकर रहना आप को अच्छा नहीं लगता है।

**भगवान** : किसको भी अच्छा नहीं लगता है। जो हमारे मुख से नया जन्म लेता है तो वो नीचे नहीं आता है, ना नीचे की बात करता है। गिरता है तो मेरे को अच्छा नहीं लगता है। हम बोलते हैं कि जो इधर से निश्चय करे वो कभी भूलता नहीं, भूलने वाला ही नहीं है।

**प्रेमी** :भगवान,ये बात अच्छी लगी किDigestion Power बढ़ाने के लिए सिर्फ आपको आगे रखें कि आपने कितना Digest किया होगा।

**भगवान** :उसके सिवाय कुछ होता थोड़ी है। सहनशक्ति किससे बढ़ेगी? समता भाव किससे बढ़ेगा? सहनशक्ति और समता भाव हमारा धर्म है। समझो मैं इसको दो गाली दियूं तो ये जाके बोलेगा कि देखो भगवान ने

Contd. 2.

क्या बोला? ऐसे बोले कि ये मेरी उन्नति के लिए है, ये मेरे लिए सबक है। या तुम इस उससे निन्दा करें। कोई सहन नहीं करता है। हम अभी इसको बोलते हैं Get Out तो ये बोलेंगा कि भगवान ने मेरे को निकाल दिया।ये नहीं बोलेगा कि देह अध्यास से निकाल दिया, नहीं तो ये देह में पढ़ा है।

प्रेमी : भगवान शक्ति दीजिए Digest करने की।

भगवान : शक्ति तेरे अन्दर है, हरेक के अन्दर है, Use करेगा तो है पर अगर बोलेगा कि मैं ऐसा हूं, मैं गरीब हूं, मै निर्बल हूं,ऐसे नहीं, लेकिन निश्चय में रहें।

प्रेमी : भगवान अन्दर Computer में जो याद है वो भूले कैसे बाहर से तो Digest भी कर लेते हैं।

भगवान : ये अभ्यास की बात है कि पहले वाली जिन्दगी क्या थी? ये अभी समझो ये लोग कल्पना का भगवान करते थे,तोLife थी? अभी ज्ञान से Life हो गयी है न।ऐसे तू भी मन को बोल कि पहले वाली Life क्या थी? समझो आज भी ज्ञान न होता तो क्या होता-संसा।जैसे बन्दर बन्दरी चलती है,ऐसे तुम चलते थी।अभी तुमको ज्ञान है,विवेक विचार है।है न, तभी चलते हैं।

प्रेमी : भगवान आप का आर्दश है तभी Digest कर सकते हैं।

भगवान : जेकर किसका आदर्श न देखें तो आगे बढ़ ही न सकें। किताबों से नहीं बढ़ेंगे। किसको भी देखेंगे कि इसमें सहन शक्ति है, धीरज है, समता है, प्रेम है, तो फिर बढ सकेंगे। जैसे तुमने देखा इनको शान्ती है तो तुम्हारे में भी शान्ती आएगी। इनमें धीरज है तो तुम्हारे में भी धीरज आ जाएगा, देखा आर्दश तो वैर। तुम भी हो जाएगा।

प्रेमी : भगवान अपने को Dissolve करना है।

भगवान : Digestion करना है, Dissolve तो करना है पर Digestion भी करना है। अभी तू खाना खाएगा, Digest करेगा, तभी दूसरे Time खाएगा न। जो बातें संसार की है वो हमको अपने में Dissolve करनी है, हज़म करनी है, हाज़में के साथ हम देखेंगे कि सब ठीक है। कोई Wrong नहीं देखेंगे।

Contd.3.

**प्रेमी : भगवान सत्संग में बात चली कि तुमको ज्ञान के लिए शौंक है, प्यार भी करते है पर पाचन शक्ति जो है वो Weak है, भगवान इसको खोलिए।**

**भगवान** : देखो कई लोग समझ कर बैठे हैं कि खाली हमको भगवान चाहिए पर वासना जभी न होवे ना पीछे कुछ भी न होवे, तू रीस करके बोलेगा कि मैंने ये छोड़ा(3) पीछे मन तुमको बोलेगा कि ये तुमको छोड़ने की क्या ज़रूरत है, फिर तुम्हारा Digestion खराब होगा।

**प्रेमी** : भगवान वासना है इसीलिए Digestion नहीं है, आपने कांटा Right पकड़ा है।

**भगवान** : नहीं तू लम्बी बात नहीं कर कि यह सब छोड़, इधर रहके भी निंवासना होके रहो, कम जास्ती बात न करो। बच्चों में रखेगा तूं मन, रिवाज़ी बातों में, तो तुम्हारा मन खराब हो जाएगा। हमेशा Control में रखो। बच्चों की दिल इतनी है तो हम छोटी२ बातें उनसे ना करें।

*ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

## *'BORN GREAT'*



प्रेमी : भगवान Born Great अपने को कैसे Feel करें?

भगवान : तीन शरीर है - स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर, Unconscious, इसको जाननेवाला आत्मा है। जो जन्म लेकर जीव आत्मा आया, वो Wrong कर्म कराता है। जो सच में आत्मा है, Pure है, उससे कर्म होता ही नहीं है, जब Unconscious तुम्हारा खत्म होगा, जो भी तुम्हारा संस्कार है, मन,बुद्धि चित,अहंकार है। जो भी Consious में घुटन आती है, कभी प्यार आता है, कभी दुख आता है, कभी हालत आती है,वो जभी इतना ज्ञान आएगा तो सारा Unconscious खत्म हो जाएगा। फिर आदमी अपने को New समझेगा कि मैं Born Great हूं। मैं आत्मा,भगवान, निराकार, Invisible हूं। मैंने संकल्प किया तो मैं एक से अनेक हो जाउं। One became many। अभी ये तम्हें नहीं लगेगा, तू माँ का बेटा है,औरत का आदमी है। अभी तू देह में है, देह से संसार देखेगा। जब देह का Ego जायेगा, तब तू अन्दर आत्मा को जानेगा, जागेगा। अन्दर जागे, तभी ज्ञान से अन्दर जायेगा।

ज्ञान से पहले मनुष्य जन्म की कदर कौन जानता था, अभी कदर जानी है। ज्ञान से इधर सब का कैसा जन्म हो गया है जो अपने को Born Great समझने लगे हैं। कोई समझते हैं माँ बाप से आया हूं, कोई समझते हैं कर्म से आया हूं, कोई कहता है निराकार से ही साकार होकर आया हूं, मैं Born Great हूं। द्विय जन्म, द्विय कर्म। Some are born great, some achieve greatness and some have greatness trust upon them. किसका ऐसा संस्कार है जो मेहनत भी न करे और पार हो जाये। आगे जन्म में थे इकरारी, आज भगवान ने आकर इकरार पूरा किया।

एक सामान्य सता है, एक विशेष। सामान्य तो सब में है, जैसे लकड़ी में आग, पर विशेष तब जब उसमें आग प्रकट होये। ऐसे ही सामान्य आत्मा सब में है पर विशेष तभी है जब ज्ञान की तीली लगे तो सबको रोशनी आयेगी। अज्ञान का पर्दा हट जाये। ज्ञान अन्जन गुरू दिया ..।जैसे मैं आकाश से आया हूं, धरती से नहीं। I am Born Great।

Contd.2.

यह गल्ती है, हम अपने को Sex Born समझें। मैं स्वंयभव हूं। स्वंय से आया हूं। जैसा तुमने चाहा, भगवान ने किया तो वैसा जन्म मिलता है। प्रेम करो भले, पर व्यंवहार जगत नहीं देखो। कर्ता Doer ना बनो। आत्मा अकर्ता है। मैं निराकार से साकार हो गये हैं, मैं पैदा होने वाला नहीं। तुम Born Great किसको बोलेंगे? गुरमुख नाम जपे इक वार । एक बार गुरू के मुख से नाम लिया तो सब पक्का करें।

**प्रेमी** : भगवान ये समझ में आया कि Born Great होकर रहना है, Sex Born नहीं।

**भगवान** : Born Great तो पहले ही दिन समझना है, उसके बाद ही Life है। अपने को Sex Born क्यों समझें? मॉ एक तिनका भी नहीं बना सकती है। पता नहीं मॉ बाप किसको बोलते हैं? वो तो भगवान ने ऐसे ही रखा है जैसे खम्भे से नरसिंह अवतार निकल आया। पहले मन पैसे का, फलाणे का आधार रखता था, Not भग़वान का। जैसे भगवान ने गर्भ में रक्षा किया तो वो आज भी करेगा, कल भी करेगा। किसी भी रूप में भगवान आएगा, मैं पहचानू। भगवान पहेली देता है Life में, यह हुआ क्यों?ऐसा हुआ तो क्यों? हमारी सारी Life राज से भरी पड़ी है। मैंने जैसा समझा, मैं नहीं हूं, पर सब राज़ है। सब का अनुभव है। अनुभव का ज्ञान उज्जवलता की वाणी.. । तुमने ज़ंज़ीरों से खुद को बॉधा है जो मरने तक एक दूसरे से छुटकारा नहीं है। तुम सब Sex में विश्वास करके बोलते हैं,"मैं Sex Born हूं"। क्यों कहते हैं। Christ को बोला Marry ने शादी नहीं किया है तो Virgin (कुंवारी) ही रही। तुमको दिखाते हैं Born Great कैसे आते हैं? पहेली तुम बूझो न बूझो, तुम तो एक दूसरे के बंधन में रहते हैं। Christ किसके बंधन में है, Marry किसके बंधन में है, कृष्णा भगवान किसके बंधन में है। तुमको पैगम्बर के वचनों को पूरा ध्यान देना चाहिये कि क्या वाक्य बोलते हैं? क्या सिखाते हैं? तुम समझा सामने२ देखते हैं तब कि भगवान को सब घरवाले भगवान ही करके देखते हैं। तो कब कैसे हुआ? जभी भगवान ने जगत को इतना पीछे किया तभी तो भगवान देखते हैं। चमदृष्टि से समदृष्टि कैसे होती है -हाज़िर मिसाल है। उनकी रहनी सहनी कैसी है जो Born Great हैं,उंची आत्मा है, निश्चय

Contd.3.

आत्मा है,तो सबके हृदय में हूं। तुम अभी है।तुम बोल सकता है'मैं सब के हृदय में विराजमान हूं', चाहे ज्ञान से, चाहे अज्ञान में। भगवान२ सब बताते रहते हैं,मतलब तू मेरा नाम नहीं भूल सकता है। मैं सबके हृदय में घुस सकते हैं,तुम क्यों नहीं? क्यों कि तुम सूक्षम नहीं हो, मच्छर से भी सूक्षम। प्रेम समता आपे ही काम करती हैं। जो चिन्तन मनन करता है तो परमात्मा उसके हृदय में है।

**प्रेमी :** भगवान Born Greatहोने के लिये गुरू मुख से जन्म लेना ज़रूरी है?

**भगवान :** गुरू रोज़ जन्म देता है, गुरू तो बोलता है तू Born Great है। तू क्यों अपने को Sex Born समझता है? Sex Born में ज़हर ही होगा। अमृत तब होगा जब गुरू का ज्ञान पियो। गुरू ज्ञान हम पीते जायें, पर जभी हम व्यवहार में लटके हैं तो कुछ नहीं होगा। किनारा करना है कि इससे भी क्या२। इन सब में तृप्ति आई? Peace of Mind है ? अगर मेरा किसी से व्यंवहार नहीं, शब्द नहीं, मैं अपने स्वयंगतम में ही हूं, सजातीय- विजातीय एक ही है। स्वागत माना अपने को जानो, अपने मन को, इंद्रियों को जानो, मैं कौन हूं? क्या हूं? तो तुम्हारा देह अध्यास चला जायेगा। अभी ये दृश्य को धारण करनेवाला कौन है? ये रंग रूप किसने धारण किया? पुरूष ने प्रकृति का रूप धारण करके दे दिया है।

प्रेमी : भगवान वाणी में था हर समय कर्म एक पूजा है, जैसे अपने लिये ही कर रहा हूं, ये कैसे समझे?

भगवान : आज मेरे को आया एक है Born Great,जिसमें जन्म से ही संस्कार ऐसे हैं जो जल्दी पैगम्बर बन जाते हैं, दूसरा पुरूषार्थ से बनते हैं, तीसरे जो है उनको गुरू बनाते हैं। इसीलिए जो भी इधर आते हैं उन पर दया आती है, ये नरक से बचे, ८४ के चक्कर से बचे। जो सच की बात अंदर पड़े, कम से कम ज्ञान का अनुभव सनेंगे तो हैरान हो जायेंगे, गरीब को गरीबी, साहूकार को साहूकारी नहीं लगती, सब प्रारब्ध में खुश हैं। यहॉ मैं सबको पूरा२ सुनते हैं, मेरे को यह शौक है, मैं एक२ के दिल को सुनूं, जानूं, पहचानूं कि ये कैसी हालत में है। चांहने पर भी दुनिया में कोई किसी की मदद नहीं करता। हम तो रोज़ जायेंगे, ये मेरे पास आये

Contd.4.

आत्मा है,तो सबके हृदय में हूं। तुम अभी है।तुम बोल सकता है'मैं सब के हृदय में विराजमान हूं', चाहे ज्ञान से, चाहे अज्ञान में। भगवान२ सब बताते रहते हैं,मतलब तू मेंरा नाम नहीं भूल सकता है। दूसरे को उठाते हैं। यह एक निष्काम का बीज ब्रह्मज्ञान का ऐसा डाला है जो पूरा Garden बन गया है।

**प्रेमी** : भगवान आप Born Great हैं, और निश्चय कराते हैं जो तू है सो मैं हूं।

**भगवान** : हमारे में क्या हैं? जो भगवान तुम्हारे में है सो मेरे में है। तुम सब ज्ञान ध्यान न देखो। सत् में जाओ, जो तू है सो मैं हूं। पाण, जो तुम्हारे पास है वो तुम Utilise नहीं करते हैं।

**प्रेमी** : भगवान लगता है आप Born Great है।

**भगवान** : Born Great सब है, पर विचलित बुद्धि नहीं करनी चाहिए। तुम्हारी विचलित बुद्धि है। पर तुम संसार की बात बंद करो। गूंगा ज्ञान सुनाये बहरे को, पिंगला पर्वत पर चढ़ा, अंधा देखकर बहुत खुश हुआ, मतलब गूंगा कौन है, जो सिवाय अपने बात नहीं करता है, ना सुनता है, ना बोलता है। जो दुनिया का कोई शब्द नहीं सुनता मत मतांतर नहीं सुनता, वह बहरा है। और जो पिंगला है उसका इंद्रियों का रस छूट गया है, सो वह चढ़ जाता है जल्दी। जो संसार को इन आँखों से नहीं देखता है वो भगवान को देखकर खुश होता है। गूंगा ज्ञान क्या, तुम बहरा भी नहीं है। सब करता है - पढ़ना, लिखना, शास्त्र क्या नहीं चलेगा। जो हमारे पास योगी आए हैं, इस तरह से आए हैं सो गुरु बोलता है [illegible] [illegible] करके चलते हैं। और शास्त्र पर ध्यान नहीं देते हैं।शास्त्र तो है शस्त्र, शस्त्र चलाना कौन सीखाएगा? जब कोई भी बात मन में लाता है तो आत्मा का घात करता है। घड़ी इक विसरूं...। तुम भूल जाते हैं। पर जो सीधा Line पकड़कर चलेगा तो मंज़िल पर चलेगा। ये ज्ञान सीधी Line वाले के लिए है। अगर कोई कर्म भक्ति, दया दान तप करेगा तो रास्ता भूल जायेगा।

**प्रेमी** : भगवान कर्म का कर्ता मन है, शरीर क्यों भोगता है?

**भगवान**:तू है Sex Born जभी Born Great गुरू से बनो।Sex Born

Contd.5.

कभी शुद्ध नहीं होगा।ये फिर विकारी है।तुम बोलो मैं Sex Born नहीं हूं, Born Great हूं,मन तुम्हारा नौकर बनकर चलेगा।देह में विकार होते हैं क्यों कि ये खिजली का मर्ज़ है,देह को होता है क्यों कि ये पैदा हुआ है, Sex Born है।और कोई Born Great होता है, तो तू विकारी होगा।जभी उनसे तू हटेगा तो काहेका मेरा बाप,काहे की मेरी मॉ,मैं तो आदि से स्वयंभव हूं, अपने आप से प्रकट हुआ हूं। अपने स्वयं से इधर आया हूं। किसने मुझे पैदा करा है। जे मॉ बाप ने पैदा किया है तो हम बोलेंगे एक और ऐसा पैदा करके दिखाए। तू जो आया है निमित मात्र एक खम्भा से जैसे नरसिंह भगवान खम्भे से आया। मॉ के शरीर में किसने रक्षा किया? किसने तुम्हें उधर दूध पिलाया? किसने संभाला, मॉ बाप ने? मॉ बाप ने क्या किया है जो तुम मर्यादा करते हैं। उन्होंने हमें लाया नर्क,गर्भ में, वहॉ हम १० महिने नर्क में रहा। जिसने Born Great समझा, उसने सब भुला दिया; पर इनको मॉ बाप की आदत है कि मैं मर्यादा करूं,ये करूं, दुखी होउं।

कभी नहीं देह से विकार छोड़ना, यह भूत, भूत ही रहे, यह तो Sex Born है, इसे बाजू में रखो। तुम अंदर में सुजागी रखो कि मैं Born Great हूं, Sex Born नहीं। गुरू इसीलिए यह कहते हैं जो मैं इसके मुख से यह सुनूं Born Great से यह सुनूं कि मैं Born Great हूं। मॉ बाप, भाई नहीं बोलेगा कि तू Born Great है, वो तुझे Sex Born मानेगा। जो देह अध्यासी है, उससे छुट्टी है, मेरी उनसे पटती नहीं है, तुम्हारी पटती है। कभी न कभी उनसे बात कर लेते हैं, मिल लेते हैं। हमारे को हमारे जैसा चाहिए, जो हमें सत् करके देखे और मैं कभी भी ज्योति से ज्योति देखूं। इस Bodyमें सहेली संबंध न रखूं। हमें कोई बोलता है, "मैं ज्ञान नहीं उठा सकता, पर आपसे मज़ा आता है, आप मेरी ममी है"। हम उसी time get out कर देते हैं। कोई क्यों मुझे ममी बहन बनाये। हम जीव सृष्टि में आनेवाले नहीं है। जभी तुम Born Great को पहचानेंगे, मेरे को भगवान बोलते हैं पर Meaning नहीं है, तो सब Fail है।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

## 'निर्वाण पद'

प्रेमी : भगवान निर्वाण पद कैसे प्राप्त हो।

भगवान : हम जो भी ज्ञान सुने तो अपने अन्दर के लिए सुने तो ना मैं रहूं न मेरा रहे। Total अपने को खाली रखो कि मेरी Possession कुछ भी नहीं है। जो कुछ भी है सर्व के लिए है। ये Garden है, कोई थोड़े ही बोलता है मेरा है। तुम बोलेंगे Municipality का है, पर Municipality वाला थोड़े ही इधर आकर मज़ा लेता है। कोई खा रहा है, कोई खेल रहा है, कोई सत्संग कर रहा है, तो ये Garden भी देखो सब का है। ऐसे ही तम्हारा घर भी है, उसको मुसाफिर खाना बना के रखो, उनको कहो कैसे भी घूमो, खाओ, नाचो, You are free.

प्रेमी :भगवान निर्वाण पद क्या है?वो शरीर शान्त होने के बाद मिलता है?

भगवान : निर्वाण पद है जहॉ वाणी न पहुंचे, जैसे जागृत, स्वपन, सषोपति, तुरिया। जहॉ वाणी न पहुंचेगी, वाणी Stop हो जाएगी कि क्या सुनने का है? क्या करने का है? उसके दिमाग से वाणी भी नहीं चलती है, उसकी इच्छा भी नहीं है सुनने की। सुनना था वह सुन लिया। सुनके क्या सुनेंगे? क्या लिखेंगे? तुरिया पद है जहॉ स्थूल, सूक्ष्म, कारण खलास हो जाते हैं। निर्णय नहीं करते हैं, तभी वाणी सुनता है कि अभी क्या बचा। जब सभी सवाल का जवाब मिल गया, प्रश्न नहीं रहा, ओम भी नहीं रहा, तो पाया पद निर्वाण, पाये पद निर्वाण शान्ति सुख तू माण, मेरे मन शान्ति सुख तू माण। वाणी से ऊपर है आत्मा स्वतः सिद्ध आत्मा है, जैसे स्वतः सिद्ध अज्ञानी है। अज्ञानी बनने के लिए तुम ने क्या साधना किया तो ज्ञानी बनने के लिए दिखावा करते हो, न पाया न खोया ..... । संशय निवृति करे तो परम आनन्द की प्राप्ति है। समझो कोई प्रश्न करे तो तुम मेरे से पूछने आयेगा क्या कि क्या जवाब है, यह तो मूर्खता है। तुमको विश्वास होगा तुम्हारे मुख से गुरू बोलेगा, जब गुरू में तेरा ध्यान होगा । तुम बताओ तुमने ज्ञान के लिए क्या साधना किया? ऐसे ही मैं Already जो हूं सो हूं, कोई माने न माने जैसे कपड़ा का टुकड़ा है पर तू उनको बोलता है Handky है तो जो है। तुम को अपने में विश्वास नहीं

Contd.2.

है, क्यूं कि अपना गधापन याद है, तो तुमने अपना गधापन क्यूं रखा है? मूर्ख क्यूं बना है? नीचपना क्यों रखा है? आत्मा प्राप्त है प्राप्त को अप्राप्त माने आत्मा....। मैं अपनी आत्मा तो निकालकर नहीं देगा,तिरी पर नहीं दिखाएगा। अनुभव तू करेगा, जैसे तेरी जुबान को आम के Taste का मालूम है. ऐसे यह ज्ञान अनुभव का है। तू खूद अनुभव कर, वह तेरा Master है। गुरू के अनुभव से तेरा मतलब नहीं। पर उसके अनुभव को अपनाना है। जो गुरू कर सकता है, वो मैं भी कर सकता हूं। तुम बताओ तुम क्या अभ्यास करते हैं? किस पर जाते है? लड़ाई में जाते हैं तो बहादुर की शक्ल सामने रखते हैं। गीता का श्लोक भी पढ़ाते हैं कि No death, जैसे वह Healthy होकर खड़ा रहे। लड़ाई में भी बहादुर का आदर्श रखते हैं, तो तू कौन सा आदर्श रखते हैं? तेरा मन भगवान मे है यह काफी नहीं है। तमको आदर्श देखना चाहिए कि ज्ञानी उठे कैसे?चले कैसे? तुम को शौंक होना चाहिए कि यह कर सकता है, तो मैं भी कर सकता हूं। वो निरइच्छा है तो मैं भी निरइच्छा हो सकता हूं। उसने सबको भुलाया है तो मैं भी भुला सकता हूं। मेरे को समझ में नहीं आता है तुम क्या करते हैं सारा दिन ज्ञान की बकर करते हैं, Waste of time, Waste of money. तुम मेरी बात समझते हैं या नहीं? मेरी बात तो सब प्रगट है, पर तुम कौन सा अभ्यास करते हैं। हमारा दादा अच्छे में अच्छी चीज़ सब को खिला देता था, बाकी जो बचा,

खुद खा लेता था। तुम को खाने की इच्छा होगी तो तुम बोलेंगे मैं तो यह नहीं कर सकता हूं। पर अभी बोलो मैं सब कर सकता हूं। पहले लगता था प्रिय में प्रिय चीज़ कौन सी लगती है, वह इनको खिलाओ न। तुम्हारी वासना उस चीज़ से जाएगी नहीं, जब तक लुटाओगे नहीं। तुम बताओ प्रिय चीज़ किसको खिलाई है? काला मुहं करके चले जायेंगे। मेरे को तो तुम्हारी अजीब बात लगती है। राम रतन पड़ा बज़ार मे....। भगवान सबका है उसको कोई भी ले सकता है। ऐसे यह प्रेम भी हम लुटा सकते हैं। तुम सूने हैं क्या, क्या करते हैं?

प्रेमी : यह पद जीते जी प्राप्त होता है या मरने पर।

भगवान : तुम मेरे को क्या देखते हैं, जीते जी या बाद में। हमारे पास

Contd.3

कोई Book नहीं है पर बताऐंगे ऐसे- ४ वेद- ६ शास्त्र पढ़े हैं। रब दा कि पाना, इथूं....,..। एक पौधा है वृक्ष के नीचे उसको धूप नहीं मिलती है, तो माली निकाल के दूसरी जगह लगाता है जहॉ उसे धूप पानी हवा सब मिले। ऐसे तू जो धर में फॅस गया है तो उधर से निकल कर इधर दाव लगा। जैसे कबीर चोरी करके भी संतों को खिलाता था, उसे सन्त इतने प्यारे थे जो चोरी कर के भी खिलाया।

**प्रेमी** : भगवान इधर से उधर गुरू ही करेगा न।

**भगवान** : सब गुरू करेगा तो बाकी तू क्या करेगा? तू वासना में गया तो तू दुखी सुखी होता है न। पौधा तो जड़ है तू तो चेतन है। तू घर छोड़ इधर कैसे आया? तू चलता कैसे है? खाता कैसे है? पीता कैसे है?मरता कैसे है? ज़ीता कैसे है? ज्ञानी स्वतः सिद्ध होता है। उधर से दुनिया को आजमाया, Friend को आजमाया, तो उधर से पटकर अब इधर लगाया। मेरी वासना किधर भी नहीं जाती है। मेरे को कुछ भासता नहीं है तुमको भासता है न। जो मेरी भावना है तो मेरा निश्चय है, उसपर चलते हैं।

**प्रेमी** : कोशिश करते हैं चलने की।

**भगवान** : कितना दादा करता था भक्तो का सब चोरी से खिला देता था। प्रिय से प्रिय चीज़ भक्तों को खिलाएगा, विधवा के आंसूं पोचेगा तो आज वो सब हंसती है। गुरू ने हम से क्या महनत किया जो खाना, पीना, हॅसना सब सिखाया। तुम जीते कैसे हैं? प्यार न करे तो जीये क्यूं? मरने के समय हम क्यूं छोड़ें, Live Rich Die Poor। स्वतः सिंद्ध आत्मा है तो तू ज्ञानी पहले ही था न। ज्ञानी साधना नहीं करते हैं पर उसने आजमाया कि बेटा क्या? स्त्री क्या? धन क्या? What is What ?

*ओम*

'ओम सतगुरू प्रसाद'

1) जो ज्ञान में Fit है, वो ही Hit है।

2) किसी बात में Tention नहीं करो, पर Function करो।

3) अन्दर की Purity, मुक्ति की Surity है।

4) गुरू के वचन Catch करो, फिर Match करो।

5) कारण मैं हूं, तो निवारण भी मैं ही करूं।

6) कोई मुझे चिढ़ाता है, मैं चिढ़ता हूं या ज्ञान में चढ़ता हूं। चिढ़े नहीं आत्मा में चढ़े।

7) भगत को तकलीफ आयी तो उसने कहाः-

सत्गुरू तुम पर बड़ा नाज़ है, पर समझ न पाउं क्या राज़ है।
पहनाया आत्मा का ताज़ है, बजने लगा अन्दर का साज़ है।
अभी हाथ में तुम्हारे मेरी लाज है।

8) वचन ते हलूं, पर हिलूं न।

9) गुरू को मानते हैं पर गुरू की नहीं मानते हैं।

10) गुरू की Help, अपनी Self.

11) अहंकार है, तो अंधकार है।

12) अभिमान है, तो अपमान भी है।

13) विशालता में खुशहालता आहे।

14) शरारत अपनी होती है, शिकायत दूसरे की करते हैं।

15) मजबूर न बनो, मज़बूत बनो।

16) Order न करो, आदर्श रखो।

17) विक्षेप तभी आती है, जब भगवान का रूप नहीं देखते।

18) मायूस मां तदहिं आहियां जदिहं मां Useful न आहियां।

19) दास भाव में रहें, खास भाव में न रहें।

20) हाय-हाय नहीं करो पर 'आहे-आहे'(परमात्मा) करो।

*ओम*

## 'स्थित प्रज्ञ के लक्षण - Balance में रहना'

**प्रेमी** : भगवान आप दृश्य देखते भी हैं, सबकी बातें जानते भी हैं, फिर भी आप समानता का प्यार करते हैं।

**भगवान** : जब तक मैंने स्थित प्रज्ञ का लक्षण धारण नहीं किया, तब तक मेरे को ज्ञान है नहीं। अज्ञानी की तरह आना जाना करेंगे। तुम ज्ञान सुनके अपना Balance नहीं रखते हैं कि मैं किधर जाता हूं, क्या सुनता हूं, क्या सीखता हूं, क्या जानता हूं। मेरे को क्या करना चाहिए वो किसको भी Balance नहीं है। मैं नहीं मानते हैं कि किसने स्थित प्रज्ञ के लक्षण धारण किये हैं? मैं क्या हूं, कौन हूं, मैं कैसे उठते हैं,कैसे बैठते हैं,कैसे खाते हैं।

**प्रेमी** : भगवान ये ही पुरषाथ रहता है कि जहॉं भी रहें, समता में रहें, Out नहीं होवें।

भगवान :जभी होवे ना? वो तो शब्द है - समता भाव। मेरा शब्द मेरे को नहीं सुनाओ। तू अपनी वाणी बता कि इस पर मैंने Study किया है। ऐसे ज्ञान नहीं होता है, जैसे तुमने ज्ञान लिया है। ना तू अपने को ज्ञानी समझेगा, न अज्ञानी समझेगा, तो तू क्या है? राजा जनक जभी अष्टावक्र के पास गया तो गुरू ने समझा ये अज्ञानी नहीं है क्यों कि ये मेरी शरण में आया है। ज्ञानी भी नहीं है क्यों कि संशय युक्त है। मूर्ख भी नहीं है, क्यों कि गुरू को झुकता है। बाकी वो जिज्ञासु है तो बैठकर प्रश्न उत्तर मेरे से करे। ये हमको Balance में रहना है कि कितना ज्ञान समझा है, भगवान को कितना जाना है और कैसे जाना है। अगर तुम्हारे में स्थित प्रज्ञ का लक्षण ही नहीं है तो तुमने मेरे को जाना ही नहीं है, ज़रा भी नहीं जाना। माना रोलू होकर आना जाना करेंगे। २० साल गुज़र जाऐंगे तो भी ज्ञानी तू न होगा। हम सब को बोलते हैं - स्थित प्रज्ञ का लक्षण धारण करो। कौन सी बात तुमको हलचल करती है, तू कौन है? तुम्हारे को सब जानें, मेरे को सब जान गए है या नहीं जाना है? खाली तुम नहीं परं जो व्यंवहारी है, परमार्थी है, चाहे सत्संगी है सबने जाना है। अभी व्यंवहारी आदमी मेरे उपर टीका रख सकता है? जगत का आदमी मेरे को बुला सकता है? क्यों कि वो सब जान गए हैं कि मैं एक तरफ हूं। तुम

Contd.2.

एक तरफ ये रखेगा(संसार), दूसरी तरफ परमार्थ रखेगा, हम एक भी नहीं रखेंगे। हमको कोई बुलायेगा, हम नहीं जाऐंगे,तुम जाऐंगे।तुम्हारे उपर कोई भी हक रखेगा कि तुम आकर सम्भाल करो, हमारे उपर कोई नहीं हक रखेगा। तो हमको क्यों नहीं बोलेंगे? जैसे चक्र होता है उस चक्र से निकल कर हम दृष्टा हो गए हैं। अभी तुम सब चक्कर में है। जिसने भी Balance नहीं रखा है - कि मैं स्थित प्रज्ञ का लक्षण धारण करूंगा, ज्ञानी क्या होता है? वो तुमको सारी दुनिया जाने। ये हमारे गुरू की बात है। आज की बात नहीं है। तुम को ये Balance नहीं है। मैं आज Balance की बात करते हैं कि तुमको कोई पहचानें कि तू निरइच्छा है। खाली निरइच्छा, और बात तो दूर है। कोई इच्छा नहीं है, कौन सी इच्छा करें? हमारा कुछ है ही नहीं, तो हम Sign कौन सी करें?जब तक तुमको स्थित प्रज्ञ का लक्षण नहीं है,तब तक तुम्हारा ज्ञान डालडा है। Balance ज़रूर रखने का है,Balance के सिवाय ज्ञान नहीं आएगा। कोई भी बोले मैं ने ये व्रत धारण किया है,ये नहीं किया है।

प्रेमी : भगवान हमको लगता है कि हम अपनी View जल्दी बता देते हैं, पर आपके सामने कोई आता है तो आप स्थिर रहते हैं, शब्द नहीं देते हैं।

भगवान : ये तो तुम स्थित प्रज्ञ का लक्षण नहीं बताते हैं, पर अपना अनुभव बताते हैं। मैं बोलते हैं तुमने कौन सा व्रत धारण किया है, जिस पर तुमने अभ्यास किया है। हमारे मन में मैं और मेरा नहीं है, तभी हमको कोई नहीं बोल सकता है। वो ही बोलता है, जो भगवान है, मेरा थोड़ी है। मेरी बात मेरे को नहीं बताओ, पर अपना अनुभव बताओ कि मैंने ज्ञान से अभी ये व्रत धारण किया है। वो व्रत फिर तोड़ना नहीं है, जो वचन गुरू निकाले वो पालन करें कि आज से मैं ये-२ नहीं करूंगा, तो वो वचन उसका हुआ पर जो वचन न पाले तो उसका वचन कैसे हुआ?

प्रेमी : ये निश्चय हो जाये ये कोशिश है।

भगवान : मैं थोड़ी बोलते हैं नहीं हो। सब कोशिश में हैं अब तक। ऐसे इन सबके गुण खराब थोड़ी है। स्थित प्रज्ञ में कौन है? बात किया तो क्यूं किया तो किससे और क्यों? कौन कर्म उनसे कराएगा? कोई करा ही नहीं

Contd. 3.

सकता है। वो नहीं करता है, तो उससे कोई करा नहीं सकता है। वो नहीं है झमेले में तो झमेले की बात ही नहीं करेगा।

**प्रेमी** : भगवान अकेले से न्यारा कर दो।

**भगवान** : मैं जो बोलते है तुमने कौन सा व्रत धारण किया है, मैं एक ही बात पूछते हैं, तुम ज्ञान सुन कर तोते बन गए हैं, Lecture तुमको करना आ गया है पर स्थित प्रज्ञ का लक्षण कौन सा होता है,वो मेरे को बताओ। मैं बोलते हैं कोई व्रत धारण करता है तो उसको कोई Offer भी नहीं करता है। हमको कोई Offer नहीं करता है।

**प्रेमी** : भगवान लगता है बाहर की मौन आ गई है पर अन्दर की मौन पूरी नहीं आई है।

**भगवान** : मेरे को तो अन्दर की मौन चाहिए न। बाहर जो मौन करते हैं वो मूर्ख करते हैं कि अगर मैं कुछ बोलूंगा तो सामने वाले को अच्छा नहीं लगेगा। अन्दर की मौन है भगवान, बाहर की मौन मूर्ख करता है, बोलता है मेरी बात में कोई रस नहीं है, तो मैं क्या बात करूं?

**प्रेमी** : भगवान सुबह अपने साथ बैठते हैं?

**भगवान** : ये तो मैं नहीं बोलते हैं, न मैं बैठते हैं न किससे बोलते हैं कि बैठो। ये तो २४ घण्टे का अभ्यास है। ये किसको खबर है कि सूक्ष्म में ख्याल चलता है, ऐसे थोड़ी है कि कोई बैठता है तो ख्यालो से खाली हो। तुमको व्यवहार पड़ा है अन्दर,जगत पड़ा है,बाकी बाहर से बैठना बेकार है।

**प्रेमी** : भगवान मौत की Picture करते हैं पर बार-२ टूट जाती हैं।

**भगवान** : वो मौत थोड़े हुई। तू हल्का हुआ ना, काहे को बक-२ करता है। हरिद्वार में ऐसे साधू है उनको मना है कि किसी से हल्के हो कर बात नहीं करना। अगर करेंगे और उनके गुरू को खबर पड़ गई तो उनको आश्रम से निकाल देंगे कि क्यों व्यवहारी लोगों से बात किया। माना उनको ये Balance है कि हल्की बात नहीं करने की है।

**प्रेमी** : भगवान बाहर की मौन मुख की मौन है।

**भगवान** : अगर मैं,मैं जगत से निर्वाण में है तो मेरी अन्दर की मौन होगी। अगर सबसे मैंने निर्वाण पद किया तो मेरी मौन ही है, तो निर्वाण पद

Contd.4.

किया तो मेरी वाणी भी नहीं, शब्द भी नहीं, द्वैत द्वेष भी नहीं, आना जाना भी नहीं है, Connection ही नहीं है और कोई Offer नहीं करेगा। एक तरफ समझो हम बेटे की शादी में गए और बहिन के बेटे की शादी में नहीं जाए तो वो बोलेंगे कि अपने बेटे की शादी में गए और मेरे बेटे की शादी में नहीं आए, ये क्या बात है? तो Guilty किया ना। गीता में लिखा पड़ा है स्थित प्रज्ञ का लक्षण। तुम बातें करके मेरे को बहलाते हैं पर ये डर नहीं है कि मैं

स्थित प्रज्ञ का लक्षण धारण करूं तुमको जगत वाले सब पहचानते हैं,हमको नहीं जानते हैं, इधर कोई जगत वाला आता ही नहीं है। तुमको सब जानते हैं क्यों कि वासना तोड़ी नहीं है कि इनसे मेरा की(2)।

**प्रेमी** : भगवान लगता है अभी ज्ञान सुन के हम चुप हो गए हैं, शान्त हो गए हैं।

**भगवान** : ज्ञान सुन के हम शान्त है पर उसमें अन्दर संकल्प विकल्प चलेंगे पर अगर रस्सी टूटी पड़ी है तो कौन सा संकल्प विकल्प आयेगा। वो भली जाये, कुछ भी करे, मेरा की? इसका मतलब इतना हम पहले ही त्यारी करे जो वो मेरे को पहचाने भी नहीं [पुरानी तरह से]। समझो कोई पड़ोसी आता है हमारे पास, हम पहले ही इतना ज्ञान बतायेंगे जो आगे भी नहीं आएगा, माना वो Power की बात है,Power रखेंगे तो कोई कुछ नहीं कह सकेगा।

**प्रेमी** : भगवान ये Power नहीं आता है।

**भगवान** : समझो आज बच्चे है, उनका दुख सुख है, पैसे का दुख सुख है तो सब खरीद करते हैं ना खुद ही। भगवान थोड़ी दुख देता है। मैं नहीं जानू, पर अपनी इच्छा वासना सब कर्म हमारे से कराती है।

**प्रेमी** : भगवान सुबह को संकल्प विकल्प उठते हैं।

**भगवान** : क्योंकि मगज़ में जगत पड़ा ही है, माना जगत सत् है, जगत है धुएँ का पहाड़, मिथ्या, पर जगत इनको सत् लगता है, जो इधर (अन्दर) बैठा ही है। मैं नहीं मानते हैं। अगर ये Balance नहीं है तो Balance टूट जाता है। व्रित ऐसा रखे जो तोड़े ही नहीं, कोई बोल भी न सके। Be Careful होकर रहो।

Contd.5.

प्रेमी : भगवान अगर अन्दर Balance नहीं है, तो वह जाएगे।

भगवान : बस ये ही बात है। Balance नहीं है तो तुमको कोई भी गिरा देगा मिन्ट में।

प्रेमी : स्थित प्रज्ञ में टिक नहीं पाते हैं, टिकने का क्या साधन है।

भगवान : टिक नहीं पाते हैं, पर टिकना तो है ना। वो भी मैं इच्छा करके खाती हूं, इच्छा करके घूमती हूं, तो इश्वर इच्छा से चलें न। अपनी Will क्यों चलायें?'

** तुम बाहर का नाम रूप देखते हैं, बाहर से कुछ नहीं मिलेगा, तुम इधर साकार भक्त होंगे जो आधार लेके बैठते हैं पर नेष्ठा का आधार रखो कि मैं देखो कितना खाली हो गया हूं। न मेरा देश है न वतन है। तू मैं जुदा नहीं एक ही है। प्रेम है सबसे पर Bank balance अपना पक्का है। जिसको Bank balance नहीं है, वो अपने को गरीब समझता है। आते है, खाते है, ऐसे ही तुम्हारा बाहर है कि भगवान है पर निश्चय की Bank balance नहीं है,कि मैं आत्म धन से शाहूकार का भी शाहूकार हूं। तुम्हारे में Balance नहीं है,तू अपना Balance नहीं रखते हैं,मैं कौन हूं,मैं क्या हूं जो ज्ञान रखता है उसको माया की ज़रूरत नहीं है,तेरी रोजी तुझको ढूंडे।

** भगवान ने अच्छा दिमाग दिया है, पर हम संसार की लहरों में बह गए हैं। पानी में खड़े हैं तो लहर आएगी, संसार में खड़े है तो लहर आएगी,कर्म में खडे है तो लहर आएगी, चुप तुमने नहीं किया है हमारे जैसी! लहर जब आती भी है तो तुम Face करते हैं। प्रकृति भी देखे कि ये पुरूष है ये सामना कर सकते हैं तो प्रकृति को भी चुप आ जाएगी। प्रकृति देखे मैं है पुरूष, Balance वाला पुरूष कोई भी कर्म Balance के सिवाय नहीं पूरा होगा।

** दुनिया अपना Balance हिलाती है, कभी Balance में रहती है, कभी फिर हिलते डुलते है, वो Balance नहीं है। दुनिया मेरी शकल कभी न देखे कि इनको कुछ हुआ भी है,मेरे चहरे से किसको मालूम भी न पड़े। देह का जो भी कर्म है वो देह का है, तुम प्रकृति में बह जाते हैं तो प्रकृति तुमको फिर हिलाएगी'। यह प्रकति का धर्म है अभी हवा है, पक्का

Contd..6.

है, तुमको पौधों को नहीं हिलाएगी। सारे दिन में पता नहीं कितनी बार हिलाती होगी। ऐसे ही हवा की तरह प्रकृति हिलाती है। जभी हम Balance में होंगे तो देखेंगे प्रकृति मेरे को हाथ जोड़कर जाये, मैं क्यूं हाथ जोड़ूं, माया मेरे को हाथ जोडे। सारी दुनिया हिलाती है ये पक्का समझना।हमारे हिलने से कोई भी प्रकृति के लोग हमारे से उल्टा फायदा लेंगे। दुनिया में हम उम्मीद रखें कि ये मेरे को मदद करेगा तो हमने पुरूष परमात्मा की बेइज्जती किया।

** तुम्हें अपने निश्चय पर विश्वास है, तो वह विश्वास ही करामतों की करामत है। यह नहीं बोलो यह नहीं समझेगा, नहीं सुनेंगा। गुरू का वचन Law (कायदा) है। तुम्हारा वचन भी कायदा है। सामने वाला खुद देखेगा कि इसमें अभी Balance आ गया है। डीले डाले होके नहीं रहना, अपने सत् Power में पक्के रहो। तुम Power में पक्के होंगे तो कोई नहीं जीत सकेगा। हम उन्हें जीत सकते हैं वो हमें नहीं जीत सकेंगे।

** हम बोलते हैं मैं पूरन, तू अपूरन नहीं बनेगा। तुम्हारी हीन भावना मेरे को निकालनी है। तुम को अपना आत्मा विश्वास छुड़ाएगा, माया का साथ नहीं। तुम भले करोड़पति हो जाओ पर अधूरा रहेगा। ये ज्ञान पूरा Fit करता है। Balance, Full sponge, Full supong पूरा होके छोड़ देता है। हमने Life में देखा तो पूरा ज्ञान हुआ तो आनन्द आया, फिर कुछ भासता ही नहीं है। हम बोलते थे कि ये क्या हो गया, न खुशी न रंज, न तू न मैं, न उंचा न नीचा, न हम न तुम।

प्रेमी : स्थित प्रज्ञ और ब्रह्मज्ञानी में अन्तर क्या है?

भगवान : वो मंज़िल पर पहुंच गया है वो चल रहा है।अपना लक्ष्य बना रहा है,चल रहा है।ब्रह्मज्ञानी में तो चलना फिरना है ही नहीं, वो तो Seer है।

ओम

## 'मुक्ति'

प्रेमी : भगवान, मुक्ति किसे बोलते हैं?

भगवान : आज तुमको कुछ भी भासता है, लहर आती है तो किसको आती है, तिनका भी अगर लगता है और खून बहता है तो किसको भासता है, लहर आती है तो किसे आती है? कोई मनुष्य धक्का लगाए तो दोष देते हैं और अगर खुद धक्का खाकर टॉग तोड़कर आएँ तो किसको दोष देंगे? जब तक मैं सर्वज्ञ नहीं हूं, तो मेरी Will खत्म होगी? ऐसे मैं ज्ञानी हूं, I Know.

प्रेमी : भगवान, मुक्ति Nil नहीं है, इसे खोलिए।

भगवान : अभी तू मुक्ति चाहता है, तो मुक्ति है सर्व दुखों की निवृति परम आनन्द की प्राप्ति, उस में Nil का सवाल ही नहीं है।

ऐसा विचार करते हैं कि मेरा गुरू किस में राज़ी होगा, गुरू बोले हट जा तो एक सेकण्ड भी नहीं लगाओ। गुरू बोले आओ तो एक सेकण्ड भी नहीं लगाओ। बोले खड़े रहो तो खड़े रहो, ये है मुक्ति।

प्रेमी : भगवान, संकल्प विकल्प से शान्त होना, इच्छाओं से खाली होना ही मुक्ति है क्या?

भगवान : मेरे लिए संसार है ही नहीं!संसार होवे तो आऐंगे संकल्प विकल्प पर है ही नहीं संसार,न अपना है न पराया।किसी दुख से डरते नहीं है,चाहे शरीर का हो या पराया या बाहर का, डर है ही नहीं, सब गुज़र जाएगा।

छूटना अपने संकल्प से है, हम छूटते है बाहर के लोगों से। ऐसे बोलते हैं सुख नहीं देवे तो किसी को दुख क्यों दें? गुण न देखें तो विकार क्यों देखें? किसका भी Life में विकार देखेंगे तो द्वेष ही शुरू हो जाएगा। कोई भी इच्छा Life में नहीं करो तो खुशी ही खुशी है।

प्रेमी : आपने बताया हर एक पहले से ही मुक्त आत्मा है, पर हम तो मुक्ति चाहते हैं?

भगवान : यह भी तुमने शब्द पकड़ा है, देह में चाहते हैं मुक्ति। जीतेजी मरते नहीं है, खाली साधना करते हैं। करना था सो कर लिया, देह मानुष की धर लिया। जो करना था नहीं करते हैं, खाली मुक्ति चाहते हैं। जन्म

Contd.2.

से ही आत्मा मुक्त है, बन्धन क्यों माना? अहंकार है तो बन्धन है।ऐसी माया है, जो बाहर से बोलेंगे कि मोह नहीं है पर अन्दर में रस पड़ा है। अपनी जांच करो अपने बेटे से क्या मिलेगा जो इससे नहीं मिलेगा।हमारे से पहले कितने गुरू के पास आए वो जीते भी हैं और सब हमारी इज्ज़त करते हैं तो क्यों? कहते हैं ये दादा ही है, क्यों कि हम गुरू के पैरो पर चलते हैं, तभी गुरू की इज्ज़त निकलती है। "नानिक ताके लागे पाइ"। ये अजब नहीं जो वो सब हमारे से पहले आए अब वो कहॉ गए? किधर गए? क्यों कि अन्दर में जो मोह ममता है, इच्छा वासना है वो नहीं छोड़ते। एक को देखकर दुखी, एक को देखकर खुश होते हैं, ये क्या बात है?

प्रेमी : भगवान, ऐसा लगता है मुक्ति चाहिये और कुछ नहीं।

भगवान : जे तुमको मुक्ति की चाह है तो छोटी चीज़ में मन जाएगा ही नहीं।तुच्छ चीज़ मे रोना आएगा कि क्या लेते हैं।सारी होली गई,गुरू पूर्नीमा गई, हमारे पास एक फल भी नहीं आया,क्यों कि हम लेते ही नहीं है। क्या करूं गुरू देव की भेंट...। तम बोलेंगे भगवान तृप्त हैं, क्या देवें भगवान को।

हमने एक योगी को पकड़ा कि तुमको गुरू के पास संकल्प आया आने का और कब पहुंचा? तो देखो मनुष्य कैसे मुक्ति गंवाता है।तुमको प्राणों पर इतना विश्वास है जो तुम लेट लतीफ करते हैं, अपनी मुक्ति गंवाते हैं। हम एक एक स्वास की कीमत करें, तो पता नहीं कहॉ पहुंच जाए। कितना स्वासों की कीमत करनी है, मन और स्वास इकट्ठे हैं। मन को सत्ता प्राणों की है, हम अगर पुरूषार्थ करेंगे तो एक दम मन को जम्प करेंगे।

प्रेमी : भगवान कई लोग पूछते हैं मुक्ति भाग्य में लिखी है?

भगवान : भाग्य में है, नहीं अन्दर की सच्चाई चाहिए। भगवान भी सच्चाई देखेगा कि दुनिया का इनको हीरा पत्थर चाहिए या भगवान चाहिए? जो यह सच्चाई रखेगा तो उसको यह सच मिलेगा।

प्रेमी : भगवान, आज लगता है कि मुक्ति की टिकट आपने दी है?

भगवान :ख्याल किया,टिकट लीया तो पहुंच गये ना।मुक्ति की टिकट

Contd.3.

महंगी है क्या?तुम्हारा ज्ञान नहीं है,श्रद्धा नहीं है,विश्वास नहीं है,प्रेम नहीं है। ये भी लगन की बात है।गुरू का करंट है।ये है सच्चा भाव। Light का Current आता है। टक्के के कूलर से पकड़े जाते हैं, तो गुरू Current इतना भी नहीं है क्या? तुम बताओ तुमको फिर यह Current क्यों नहीं आता है?

**प्रेमी** : भगवान, आपके पास मुक्ति के लेए आये हैं?

**भगवान** : मुक्ति के लिए क्या साधना करेगा? माया कितनी प्यारी लगती है? भगवान कितना प्यारा लगता है?अभी प्रिय में प्रिय दुनिया में तुमको कौन है? जो मेरे को प्रिय समझेगा तो घरवाले रूठ जाएंगे। दुनिया तुमको Useless समझेगी। नेम,टेम और दिनचार्य हमारी सब Timeसे होवे। उसमें हमको कभी भी हम Change नहीं करते जो मेरी Regular है वो Fix है, पॉच मिनट भी हमारा Value वाला है। हमने जो दिनचर्या रखी है, वो कभी चेंज नहीं होती। सुबह का नाश्ता,घूमना आराम सत्संग, सब Regular ठीक है। तुम एक भी इस बात में नहीं है।"Time is Money,More than Money" जो मेरा Time पॉच मिनट भी देरी नहीं होती है।हर शहर,में जिधर भी हम हैं, सब Fix है।जो मेरा Time है सेवा का,प्यार का सब करते हैं, पर अपनी आज़ादी खराब नहीं करते हैं।सब अपने वश में है ना,सब कुछ वश में हैं।

**प्रेमी** : भगवान, ज्ञानी का शरीर अगर बाथरूम में गिरे तो भी मुक्त है?

**भगवान** : बाथरूम में अगर ज्ञानी मरे तो ऐसा नहीं बोलना इसकी गति नहीं हुई। वहॉ भगवान नहीं है? तुम देखो किचन पाण भारी करेगा और बाथरूम Fresh करेगा। तुम बाथरूम को Pure नहीं समझता है। "थान-थानन्तर रहियो समाई"। आकाशवत् भगवान है। किसी बात में शंका नहीं रखना, मटका टूटेगा, आकाश आकाश से मिल जाएगा। तुम्हारी करणी काम आएगी ना कि बाथरूम की बात है। आत्मा इथर समान है, खाली, Weightless, Egoless, Thoughtless, उसमें कोई Weight नहीं है। एक बड़े हाथी का,एक चींटी का शरीर लेकर आत्मा चलती है। सूक्ष्म में देखो सबके भीतर ज्ञान स्वरूप है। चींटी भी भागती है कि मेरे को नहीं मारे।अपने को बचाकर चलती है। आत्मा सत् है। ज्ञानी

Contd. 4.

उठता हूं, मैं सोता हूं।जब तक देह अध्यास है तो स्वभाव निकलेगा।तुम अपने को मिटाते चलो तो स्वभसव वश में हो जाएगा,ये ही एक इलाज है।ये देह ही हमारा बन्धन रूप है।देह ही हमें सब दुख देती है,देह से सब विकार होते हैं। खाली गुरू देह से मुक्त कराता है।

तुम तैयारी ही नहीं करते हैं मुक्ति की। अभी भी माया की तरफ दौड़ते हैं, उल्लू है। दृष्टांतः जितना दौड़ेगा उतनी ज़मीन तुम्हारी, ऐसे ही तुम भी माया को इस्तेमाल करते हैं। दो रोटी के लिए मथामारी करते हैं। बाकी मना नहीं है कर्म करने की, पर हेल्थ खराब होवे ये कौन सहेगा? तुम ये नहीं समझते हैं ५० में वानप्रस्थ लेना है, फिर सन्यास लेना है। सन्यासी होगा कैसे? गेरूए कपड़ेवाला सन्यासी नहीं, पर सन्यास है अपने मन का नाश, मोक्ष की भी इच्छा न रहे, मुक्ति की भी इच्छा न रहे, तू अपने घर में ज़रूर आजा...... । ख़ुदी गई तो खुदा हो गया।

प्रेमी : भगवान मुक्ति भरे जहाँ भरे पानी तो पानी क्या है?

भगवान : मुक्ति की परवाह नहीं है। जैसे कोई दासी पानी भरे न। मेरे घर में तो मुक्ति दासी हो जाती है उसकी।

प्रेमी : भगवान, मुक्ति की इच्छा बाकी है?

भगवान : जितनी मुक्ति चाहिए तो उतनी Fees भी देगा कि ऐसे ही हीरा मिलेगा। मुक्ति खाली तुम शब्द बोलते हैं, पर अन्दर को कितना जानते हैं। कितनी कुर्बानी करते हैं, कितना Be Still हैं, कितना मिटते हैं। कोई दस गाली भी दे तो भी मैं चुप करूं, तो वो Want करे कि उसने इतनी चुप कैसे की। इस ज्ञान में सास बहू बने, बाप बेटा बने, तब है ज्ञान। कौन तुम्हारा Ego निकालेगा? घरवाले ही तो सूआ लगाऐंगे, गुरू तो रास्ता बताएगा इधर बैठ कर देखो कितना सफल है मेरे वचन पर इतना मर के जब मिटेगा तो तुम्हारा कर्म भी मुझको बधाई दे, गुरू कैसे प्रघट होगा तुम्हारी Change देखकर। इस ज्ञान में सुख रोगी नहीं बनना। जे प्रेय खेलण दा चाहीं, तो सिर धर तली मोरी आउ...। तुम्हारी कुछ भी गल्ती होगी तो मेरे को लटकाऐंगे और बोलेंगे ये है इनके ज्ञानी फीस, ये है जो बराबर सब तुमको बोले कि ये गुरू का सेवक है। जो इतना चुप किया है। सब तुम्हारी बात Count करे, कुछ भी बनना मेरे को पसन्द नहीं है तुम्हारा।

*ओम*

## 'प्रारब्ध के चक्कर काटना'

भगवान तुम्हारी नेष्टा जिस तरफ देखेगा उस तरफ लगाएगा, माया में प्रारब्ध की बात चलती है। इस तरफ नेष्टा पक्की होवे तो यही रास्ता ठीक है। तो प्रारब्ध के कर्म भोगना नहीं पड़ेगा,सब कर्म Zero हो जाऐंगे।

आज यहाँ से कई लोग वापिस अपने शहरों में जा रहे हैं। किसने उसको पैगाम दिया है तो वापिस आओ! खुद ही जा रहे हैं। हमको ज्ञान होवे तो किस तरह से जा रहा हूं। किस तरह कर्म करते हैं। स्वइच्छा से, परइच्छा से या प्रारब्ध से। तो तू Doer है। तुम्हारी ज़रूरत किसको है सब हमारे को छुट्टी तब देंगे, जब पूरी पूरी लगन देखेंगे। मेरे को मालूम होना चाहिए मेरी प्रारब्ध है, स्वइच्छा है या परइच्छा है। उन्होंने देखा कि इसकी लगन पक्की है, माया में भी मन नहीं रखते हैं तो शांति में विघन क्यों बनें? कदम कदम पर मेरा ज्ञान होवे।

प्रेमी : भगवान, आज यह बात अच्छी लगी कि प्रारब्ध के चक्कर जल्दी खत्म करो।

भगवान : मेरे को आज एक बात याद आ गई प्रारब्ध की, हम हरिद्वार से दिल्ली गए चार मोटर थी। तीन तो आ गई, एक मोटर Late हो गई। रास्ते में उन्होंने चाय पिया, रास्ते में रोकके चल रहा था तो उसको लम्बे रास्ते से आना पड़ा। उनको गुरू याद नहीं आया, चाय याद आई, तो रास्ते में Late हो गई। हम जभी रास्ते में निकलते हैं पूना के लिए या कहाँ भी हम Wait नहीं करते हैं। सीधा घर पहुंचते हैं। देखो प्रारब्ध का चक्कर भी तुम्हारा ऐसे ही रुक जाता है। तुम जल्दी जल्दी नहीं करते हैं के शरीर पर भरोसा नहीं है, पैसे पर भरोसा नहीं है, सम्बन्धों पर भरोसा नहीं है। तो बताओ गाड़ी को किसने रोका, जाभ ने। जो खाने में भी कुत्ती, बोलने में भी कुत्ती, ये सब प्रालब्ध का चक्कर था।

प्रेमी : प्रारब्ध जल्दी खत्म करके फिर इधर आओ भगवान इसे बोलिए?

भगवान : हमारे पास जो लड़कियाँ है उसकी प्रालब्ध कब आती है कहाँ गई उनकी प्रारब्ध?

Contd.2.

तेरे को प्रिय में प्रिय चीज़ क्या है? अपने से निर्णय करो वो छलॉग मारेगा कैसे? कैसे नहीं पूछेगा? कल तेरी मौत हो जाए आज क्या Improvement है? तेरा ध्यान किधर है? तेरा मन किधर है? बाकी संसार तो चलेगा। तेरी अर्थी के पीछे भी संसार चलेगा। ऐसे ही श्वॉस बेकार चलेगा, मरने तक काम धंधा चलेगा। मूर्ख अन्धे ने जन्म गंवाया। तुमको मालूम नहीं है कौन सी सीढ़ी पर बैठे हैं। अपने को Misguide करते हैं। मेरे लिए कुछ भी करने को न बचे ये है पुरूषार्थ तो मैं किसी को भी इन्तज़ार में नहीं रखेंगे। सबके साथ लेना देना करके प्रारब्ध के कर्म पूरे करेंगें। सर्व कर्मानि परित्यातजे.... । ये कहने से नहीं होगा पर सब के साथ फर्ज़ पूरा करके छोड़ना है। भाग के नहीं छूटना है। ये कायरो का काम है।

**प्रेमी** : भगवान प्रारब्ध के कर्म समाप्त हुए तो जितना भी अज्ञान है वो कैसे समाप्त हो?

**भगवान** : प्रारब्ध के कर्म भी तभी बन्द हुए जभी तुमने करना बन्द किया, Doer पना बन्द किया, इधर भी जो अज्ञान है तो तुम चुप करेंगे, अज्ञान के कर्म ही नहीं करेंगे, अभी ज्ञान की रोशिनी में तुम चलेंगे तो अंधेरा है ही नहीं।

**प्रेमी** : भगवान, प्रारब्ध देह की होती है और पुरूषार्थ से उसको बदला जा सकता है तो प्रारब्ध तो फिर नहीं बनी न भगवान।

**भगवान** : प्रारब्ध है पर तुम्हारे आज के पुरूषार्थ से जैसे आगे जन्म से अभी तुम आए, प्रारब्ध का कर्म लेकर आए, आज का पुरूषार्थ तुम्हारी प्रारब्ध को खलास कर देगा। तुम ही नहीं रहोगे तो प्रारब्ध किसकी होगी, जो कर्म करके आया है पहले। अभी समझो हमने पुरूषार्थ किया तो वह याद भी नहीं है कि प्रारब्ध होती है। अभी क्रियमान कर्म भी नहीं है। अभी Present में हम कर्म भी नहीं करते हैं तो वह भी Dull हो जाता है। संचित कर्म प्रारब्ध कर्म क्रियमान कर्म सब Dull हो जाता है। क्यों कि कर्म ही नहीं करते हैं। खलास। ज्ञान भया....। ज्ञान की ज्योति जले, पेट में जैसे अग्नि जले, जो कोई संकल्प ही न रहे। कोई बात भी न रहे। प्रारब्ध खलास।

Contd..3.

प्रेमी :प्रारब्ध के चक्कर को पुरूषार्थ से काटा जा सकता है इसे खोलिए।

भगवान : आज का है पुरूषार्थ, कल की है प्रारब्ध। प्रारब्ध है छोटा बच्चा, पुरूषार्थ है जवान। तो वो उससे लड़ सकता है। और जो पुरूषार्थ करता है वो जीत सकता है। धीरे धीरे अपनी प्रारब्ध को मेट सकता है। फिर वो नया कर्म नहीं बनाता है। प्रारब्ध तो टके पैसे की बात है, प्रारब्ध है हमारे शरीर की, कि उसका खाता हूं-२, पति का खाता हूं। ये है प्रारब्ध, ये कोई सच थोड़ी है। बेटा,पति कैसे खिलाता है? जो हम प्रारब्ध इनसे Mix करें? हमारी प्रारब्ध है ही नहीं? पुरूषार्थ भी नहीं है? सत् ही सत् है। आप सत् कीये सब सत्। परमात्मा है सत् उनसे सब सत् ही सत् होता है। प्रारब्ध और पुरूषार्थ ये है जैसे बचपन में बाल मंदिर में सिखाते हैं उनके लिए है वो लड्डू खिलाते हैं जैसे उनका मन टिके भगवान में। तो जो टिक गया तो प्रारब्ध पुरूषार्थ सब खेल खतम। न रहेगी प्रारब्ध न रहेगी तुम्हारी भावी। सत् ही सत् रहेगा, बाकी झूठ नहीं रहेगा।

प्रेमी : भगवान प्रारब्ध से जल्दी कैसे छूटे?

भगवान : हमारी चुप है, मौन है, मौन में अन्दर फल पकता है। बाकी इससे बात किया, उससे बात किया तो गया काम से। तुम्हारे उपर नाम पड़े कि जीते जी वो मर गया। हम बोलते हैं अन्दर का अज्ञान का बीज जल जाए। कभी हमारे उपर मौत का नाम आएगा कि ये मर गया है, जीते जी तर गया है। जिस मरने से जग डरे सो मौ को आनन्द। मरने से पहले मरना है, खुशी से ख्वाब करो, मेरा कुछ है ही नहीं। हमने एक योगी को कहा जभी तू धरती पर आए तो कौन सी Will करके आए। जीते जी हम कितना छोड़ सके, चाहे बेटा, चाहे जगत। कोई भी मेरे उपर फर्ज Duty नहीं है। सर्व धर्मान ......। मैं जो एक ही आत्मा हूं, उसकी शरण लेनी है, क्यूं न पक्का धर्म पाले, स्वधर्म। स्वधर्म में सब को तृप्त करूंगो।

प्रेमी : भगवान, प्रारब्ध में कर्म कैसे काटें?

भगवान : जो निरइच्छा है उसको प्रारब्ध है ही नहीं.इच्छा है तो प्रारब्ध है।ये जरूरी है निश्चय कि जगत मेरे में रहा ही नहीं है। तू में रही नहीं,

Contd.4

तभी सहज समाधि में आएगा, जो निरोध विरोध करे ही नहीं। अभी तुम कोई स्थिति में ही नहीं है, नहीं तो लगातार इसमें चलते चलो जो कहाॅ तक आके मेरी end हो गई जो कुछ रहा ही नहीं। चलते चलो प्रारब्ध के कर्म काटो। चलते चलो कि ये भी हो गया, ऐसी स्थिति आनी चाहिए, न इच्छा रही न अहंकार, न द्वैत द्वेष, तभी फिर मन को विचार देना नहीं पड़ेगा। सहज स्वभाव हो गया, फिर त्याग ग्रहण नहीं रहेगा। पर तू माया में है तो अभी तुम्हारा काम शुरू ही नहीं हुआ है। ये तो अपनी बात है, कहाॅ तक मैं लगातार चल रहे हैं। हमको अच्छा नहीं लगता है, देरी करें। तुम्हारे हाथ में ही नहीं है ये, काम ही नहीं अपने उपर लेते हैं। तुम देखो कौन ऐसा है जो लगातार इसमें ही रमण करता है। इस बात के लिए ही बैठा है, दूसरा देखता ही नहीं है, अपने में ही गुम है।

**प्रेमी** : दादा भगवान की Point चली कि ज्ञान से मन की बीमारी तन की प्रारब्ध भी खत्म हो जाती है। कैसे?

**भगवान** : जीव सृष्टि का चक्कर काट के ईश्सर सृष्टि में आ जाओ तो प्रारब्ध कहाॅ रही?

**प्रेमी** : हमारी प्रारब्ध कट जायें उसके लिए क्या पुरूषार्थ है?

**भगवान** : समझो आज तुम शादी में चले। तुम वहाॅ जाकर खायेंगे, बकेंगे, काम करेंगे, हम तो चक्कर लगा कर Stage पर Photo निकाल कर उसने समझा यह आया और आ जायेंगे, एक मिन्ट में। न खाया न पीया हमको घर में अच्छा खाना मिलता है तो जहर क्यों खायें? तुम तो शादी में जायेंगे खायेंगे, पीयेंगे, मनोरंजन करेंगे, तो यह चक्कर किसने बनाया।

*ओम*

**"आकाश अमृतवाणी"** *'एकरस'*

(1) हम तो आत्मा सुनके बेहोश पड़ गये, हाथ-पैर कट गये, जो द्वैत-द्वेष कर सकें। गुरू को तुम बोलते हैं 'मेरा विकार निकालो, पर गुरू तुम्हारा विकार थोड़ी निकालेगा, पर याद दिलाएगा, तू देह नहीं है, देह से कर्म ही ना कर। "गुरू ने आत्मा कहा,हम तो मर गये" मैं नहीं हूं, आत्मा है तो सारा दिन अन्दर में Easy होता था, तो मैं आत्मा हूं, तो डर क्यों? ये खुशी रंज क्यों? हमको गुरू बोले Danger Place पर पहुंचना, हम बोलते थे दूसरा है नहीं, चलो चले,गुरू पीछे पहुंचता था-हम पहुंच जाते थे। कभी २० साल के बाद कोई आये हम अपने से पूछते थे, खुशी क्यों? आज आ रहा है-खुशी है, फिर ये खबर सुनी तो मर गया है, तो खुशी खत्म हो जायेगी। आज बताओ, किस बात की खुशी करें? चाहे कोई ज्ञान लेता है, अपने को मुक्त करे, मेरा की? कोई मेरे से चला जाता है, तो भी ठीक है-बैठा है तो भी ठीक है।

(2) तुम्हारे को तो कोई हिलाता है तो तुम हिलते हैं, हमारे को तो कई लोग हिलाने आये, पर तुमको विश्वास है कि भगवान को कोई हिला नहीं सकता। कोई योगी, महायोगी, महाईश्वर भी नहीं हिला सकता- हम उस मठ्ठी, गद्दी पर बैठे हैं, जहॉ कोई उतार नहीं सकता है और दुनिया की कुर्सी में टॉचर्न लगी पड़ी है। पैसे से ये ब्रह्म-पद नहीं मिलता है, पर कोई Value करेगा - वो करे जो खोज में रहेगा सो पायेगा।

(3) ये मेरा परम पद ओम से भी उपर है - अति सूक्षम है-२, जहॉ ओम भी नहीं बोलना पड़ता है। ओम भी एक वाणी का रस है - सब वाणी है। शब्द भी उसको नहीं सुनाई देगा-जहॉ बिल्कुल शान्त है, Silence है। जिस को ब्रह्म का आनंद है वहॉ न भजन है, न कीतन है, न शिवोहम् है - उधर खाली सत्य है। वहॉ देहध्यास खत्म है, अति सूक्ष्म के लिये हमको अति सूक्ष्म होना पड़ेगा।

(4) आज मैं इतना अति परे हूं, जो कोई भाई-बहन नहीं लगता है। बहन-बहन नहीं लगती है, बेटा-२ नहीं लगता है। ये तुम मेरा आदर्श देखना सपने में भी कोई नहीं है। इससे भी अति परे जैसे कोई गरीब हो जाता है, ये फिर इतना गरीब हो जाता है, ये फिर इतना अतीत दृश्य

Contd.2.

मात्र से न्यारा-२ सबका प्यारा। तुम रोज किसी हद में खड़े है-इसका Letter नहीं आया, इससे बात नहीं हुई। किसका दृश्य किसका शब्द, किसका कर्म, किसकी बात तुम्हारे दिल में आती है। हम रोज़ अति-परे-२ होते जाते हैं।

(5) सब प्रकार का सुख ब्रह्म-ज्ञानी में लहर पैदा करने के सिवाय समा जाते हैं, वो कैसे? हमको किसी भी चीज़ का भान नहीं रहता है, तभी तो सभी तरह का सुख मिलता है। तिनके जितनी भी खुशी नहीं आती है, तभी तो ईश्वर इच्छा से आता है। तुम्हारे को ईश्वर इच्छा से क्या मिलता है? हमको तो आकाश से मिलता है। मेरा तो आकाश स सम्बन्ध है। तुम्हारा तो कोइ सम्बन्धी है, तुम्हारे को आकाश से क्या मिलता है? आकाश से कितना सम्बन्ध है? तुम्हारा मैं-मेरे का खेल चलता है। मेरा घर, मेरा बेटा, मेरे को इसने ये चीज़ दिया। उसको आकाश से चीज़ें आती है, तभी तो विचलित नहीं करती है। हमारी चीज़ आकाश से आती है, Use भी ऐसा करते हैं - आकाश की तरह। हम कार में भी बैठते हैं - फकीर भी आता है, हम देखते हैं भगवान ने कैसे रूप धारण किया (जैसे मन्दिर की मूर्ति देखा)।

(6) हमारे पास सुबह से लोग है - कोई दुखी है, कोई सुखी है। कई लोग आयेंगे, लाख आयेंगे पर हम खफे नहीं होते हैं। किसी बात में खफे नहीं होते हैं। ये मेरा कसम है, हम हमेशा एक रस हैं, हमेशा Mood ठीक है, खफे क्यों होवे?

(7) अद्वैत कैसे पक्का होवे? शुरू से आद्वैत को पकड़ा है, इतना अन्दर में मेरे को ज्ञान है। जिससे हमको कोई द्वैत होवे, हम तो उसकी जूती भी साफ करेगा, पॉव भी साफ करेगा, भगवान मेरे से राज़ी होवे। इतना अद्वैत का ज्ञान है। तू बोलता है - वो है, मैं भी हूं, सब ऐसा करते हैं-तू है, मैं भी हूं।

(8) झुकना - हमको सास बोलते थे, आप सारा दिन भगवान-२ करते हैं, हमने बोला तेरी आशिष होगी तो पूरा रास्ता मिलेगा। हमने छोटे से छोटे, से भी माफी लिया है। चाहे वो बाहर होवे, हम चिठ्ठी ऐसा लिखेगा झुकके, जैसे मेरा अहंकार नाश होवे। और लिखो और झुको-२।

Cont.. 3.

(9) होशियार माई - हमको दुनिय में सब बोलते थे ये न तुम्हारे घर में आके रहेगी, तुम कैसे गुज़र करेंगे? वो बहुत होशियार माई है। हम हमेशा बोलते थे, मरे हुए को कौन मारेगा?

(10) मेरे लिये सब बोलते थे ये पक्के हुए हैं, मेरे से नहीं बोलेगा तो ये Bedminton क्यों खेलते हैं? या माया क्यों रखते हैं? इस उसका काम क्यों करते हैं? हम किसकी जगह खरीदते थे, किसको विक्री करते थे - जो लोग पर शंका नहीं थी, बाहर रहते थे फिर उन्होंने ही हमारे कागज़-पेपर वापिस लिया। १० महिने की माई का जैसे सब छूट जाता है, पर छोड़ने की इच्छा हमने नहीं किया था।

(11) Ownself:- मैं छुटपन से ही Ownself हूं। मैंने टके का आटा भी किसी से Mix नहीं किया है। टके-२ की चीज़ में भी मैं Ownself हूं। यूं-यूं (गोल-२ हाथ फिरा के) करके गधे छोड़े, स्वामी सोया नींद में। करोड़पति हमारे पास आता था, Bus का किराया एक रूपया हम खर्चते थे- उसको फकीर करके दिखाया।

(12) लोग पूछते हैं अन्दर की खोज कैसे करें? अभी ये ज्ञान अन्दर का है या बाहर का है? हमने जैसे ही ब्रह्मज्ञान लिया, तो जगत मिथ्या किया। बेटे को बेटा, बेटी को बेटी करके देखते थे तो ये बात कैसे होती थी? शुरू से ही मुक्ति के लिये पुरूषार्थ किया है तो आज कोई बात बची नहीं है। मेरे घरवाले कहते थे - ज्ञान लेना चाहिये आप जैसे, बाकी ज्ञानियों को तो नमस्कार है जो सारा जगत देखते हैं। बाहर से सुन्दर रूप लेके रखके बैठे हैं, अन्दर संकल्प विकल्प चल रहे हैं।

(13) वृत - हमने Life में इतना वृत रखा - किसके घर का पानी, किसकी मोटर नहीं, कोई चीज़ नहीं, कोई कीर्ति नहीं - इसीलिए तो हमको कोई Sense नहीं बचा है। अभी ऐसी वृति है - क्या जप, क्या तप, क्या संकल्प, क्या विकल्प कुछ मालूम नहीं है। हमने ये वृत लिया - सेवा नहीं लेगा। मैं बोलते थे - इतने में माई को आत्मा याद हो गई समझो जो ये सेवा करके भूलायेगी। हमको नर्क नहीं देखना चाहिए ज्योति जी। अभी कितनी शान्ति है, जो किसीका नाम रूप याद नहीं आता है।

(14) कुछ याद नहीं है - कोई भी दुनिया में शरीर छोड़ेगा तो उसे कोई

Contd. 4.

न कोई याद आयेगा, जिसको मन में रखकर बैठे हैं। हमको सारे दिन में एक ख्याल भी नहीं है, एक संकल्प भी नहीं है, एक भी मनुष्य अन्दर में नहीं है। प्रलय ऐसी लगी पड़ी है जो मैं हूं, तो मैं हूं ही नहीं - दुनिया में ये सब चलता ही रहेगा। मैं ना - का पाठ पक्का करना है, दिन में भी प्रलय लगी पड़ी है - रात को भी। सब Passing Show है। शरीर Automatic चल रहा है,सब Automatic हो रहा है-मैं चलानेवाला नहीं हूं, सत्संग भी करने वाला नहीं हूं।हमारे दादा भगवान का शरीर शान्त हुआ तो ऐसे लगता था -

मैं सत्संग कैसे करूं?श्रद्धावालों ने बोला, जैसे मैं कर्ता होकर न बात करूं।

(15) ३० साल धीरज - तुम बोलते हैं - भगवान मेरा शरीर Useful होवे, वो भी ईश्वर इच्छा से Useful होने का है। दादा भगवान के सामने हमने अपने को ऐसा शान्त पद में रखा, जहाँ कुछ करना ही नहीं है। तुमको भी ऐसा शान्त पद को पहले ज़रूर प्राप्त करना है।

(16) बाहर का आधार नहीं - लिखने में, पढ़ने में सब पड़े है। सब केवल वाणियाँ लिखते है, मैं ने तो कभी दादा भगवान की Photo भी नहीं रखी। एक वाणी की Copy भी मेरे घर में नहीं मिलेगी। सब जो है, इधर Heart में रखा।

(17) कीमत -हमने एक-२ स्वास की कीमत किया है, माया से बचा के रखा है - तो, तुम भी मेरे Time की Value करते हैं।

(18) Own - निश्चय कर्मातीत हूं।योगी किसको बोलते है?जो कर्मातीत है। अपन से पूछो तो तुम कर्मातीत है? हमको तो सारी Life में याद नहीं है कोई द्वैत का कर्म किया होवे? प्रकृति ही ऐसी थी जिसमें कर्म बनाने की ज़रूरत ही नहीं थी। बचपन से सत्संग था, घर में भी वातावरण - सादगी सफाई। मन की Cleanliness, न पैसा, न व्यवहार, नहीं तूं मां का कर्म - जगत से नाता ही नहीं था, न इस उस की बात। आपे ही Natural इसको कोई द्वैत का कर्म ही नहीं करना पड़ा। जो योगी है, वो द्वैत रहित है, भोगी हैं जिसको पैसे में वासना, देह में वासना है - तो द्वैत का कर्म करता है।

Contd. 5.

(19) इसके पहले हमको मालूम ही नहीं था, देह भी है। अभी जितना घोड़े की खातिर करते हैं, पर उतना पहले ध्यान भी नहीं था कि इसको ये चाहिये, वो चाहिये, तो द्वैत रहित हो गये, ऐसा ज्ञान लग गया। समझ में आ गया, वो ज्ञान क्या है? कर्मातीत हुआ - द्वैत रहित हुआ।जल्दी Colour ऐसा लगा जैसे साफ White कपड़े पर चढ़ता है, कोई दाग होता है Colour जल्दी नहीं लगता है। ये बोलते हैं मैं ने तो अभी ज्ञान समझा।

(20) पर हमने शुरू से देखा - जगत है ही नहीं। जगत मन की कल्पना है। जगत की कल्पना में मैं क्यों जाउं? इसीलिए हमको कुछ छोड़ना नहीं पड़ा है। अन्दर की सच्चाई काम में आती है। ऐसा तो अज्ञान था तब तो देह मिला। पर हमारी अज्ञान पर नज़र गयी तो मेरे को ज्ञान कठिन नहीं लगा। सहज Improvement हो गयी। ये भूल गये - ये कौन, वो कौन - तो तैयारी हो गई। ये हमको गुरू से अच्छा नहीं लगता था कोई उजरा दे या वापसी करे। मालूम भी था मैं निंइच्छा हूं या निष्काम हूं, पर Life ऐसी थी। सबको देखना चाहिये वो कितना हम सब Clean है, बाकी कौन सी Cleanliness चाहिये?

(21) वैराग - हम दो साड़ी में चलते थे, तो आज से भी ज्यादा खुश थे। मालूम ही नहीं था - दो क्या, एक क्या है। एक Pin भी नहीं सम्भालते थे। कुछ भी अपने लिये खरीद नहीं करते थे, ये Body इतनी Useless है। Useless Body के लिये एक कोड़ी भी खर्च क्यों करें? मोटर में भी नहीं चढ़ना है, हमने ऐसा कसम उठाया था।

(22) शुरू में हमने ज्ञान सुना, एक दिन Garden में सुबह दादा भगवान जैसे वाणी सुना रहे थे - हमको ऐसा अनुभव हो रहा था - बराबर कृष्ण भगवान गलियों में आकर मुरली मेरे सामने बजा रहा है।

(23) तुम्हारे भगवान को हज़ार करोड़ ऑख है - तुम सौ तो बनाओ। जो Egoless होगा, उसको भगवान १०० ऑखें देगा। जो कहीं भी जाकर Helper बनता है, पर जिसको खाली अपना सुख याद है, वो अपने सुख में सुखी है - वो विष्टा का कीड़ा है। दादा भगवान किसका बोझा देखता था - Help करता था। दानी नहीं बनो, दानी बनेगा तो Help नहीं करेगा। पर जैसा सहज भगवान तुमको देता है ऐसा खर्चा करते हैं?

(24) आप मेरे को कितना भी सुख दो, मेरे को आनंद अयेगा? पर जिस बात में तपस्या होगी उसमें आनंद अयेगा। तुम इस ज्ञान में तपस्या से डरते हैं, हमको तपस्या में आनंद है। रोये, पीटे, गले, मरे, पर इसको किसीसे भी मिलने नहीं देगा, तो क्या करेगा? मैं देह से कर्म नहीं करायेगा तो क्या होगा? मैं उसको बिल्कुल चुप करके बैठायेगा, पहले ही सब जगह आत्मा है, आत्मा कहाॅ नहीं है? मनुष्य सात जन्म में भी तृप्त नहीं होगा, अगर इस भूत को तृप्त करने की करेगा। पर, मैं दूसरे को तृप्त करने की करेगा।

(25) दादा भगवान शुरू से ही सबको अकेला ज्ञान देते थे, जैसे कोई किसीकी बात नहीं सुने। इधर तुम दूसरे की बात सुनते हैं, तो क्यों?

*ओम*

## 'आत्म - दृष्टि'

ऐसा चश्मा आत्म दृष्टि का पहनो जो अलग-२ ही नहीं देखो, आत्म दृष्टि रखो तो सब जगत की प्रलय हो जायेगी।

प्रेमी : योग वशिष्ट में था वो न देह धारी है, न मनधारी है, समस्त प्राणियों को सत्ता और असत्ता रूप में वर्त रहा है। वह न देहधारी न मनधारी है, वह अनादि एवं अनंत है। सर्वत्र सत् और असत् रूप में वर्त रहा है। इसमें भगवान असत्ता समझ में नहीं आया।

भगवान : कैसा भी देखो तो वो ही है, सत्ता है तो उसकी,नहीं सत्ता दिखती है तो भी वही है। तू सत्ता दे या न दे, उसको करा नहीं लगती है। तुम कैसी भी दृष्टि से देखो - देह दृष्टि से देखो, आत्म दृष्टि से देखो, चोर दृष्टि से देखो, नीच दृष्टि से देखो। तभी गीता में कहते हैं सब चोर चण्डाल जुआ सब में मैं ही हूं। जुआ में क्यूं बोलता है मैं ही हूं क्योंकि समान दृष्टि हिले नहीं। समान दृष्टि में कोई भी विकार नहीं है। समान दृष्टि एक ही दृष्टि है। अलग-२ देखेंगे रजो गुण में। तमोगुण है एक ही व्यक्ति में भगवान मानना! हम जब छोटे थे तीर्थयात्रा में गये - बनारस में देखा शिव शिव करते थे, वृंदावन में देखा कृष्ण कृष्ण, पंजाब में गये वहाँ नानक बोला। सब अलग-२ देखते हैं, पर यकी दृष्टि किसी को भी नहीं है। सब नाम रूप में हैं, किसीने देखा समान दृष्टि से? एक ही तत्व को जाना तो सब जाना। पर एक तत्व को जो अपने में नहीं जाना तो कुछ नहीं जाना। हमारी दृष्टि बताओ कैसी हो? तुम इतना विचार करोगे तो सुख पाओगे। बेटों से बैठेंगे तो बाप जाकर बनेंगे, तो ब्रह्म भी भूल गया। तुम यह ब्रह्मज्ञान नहीं समझते हैं कि आत्म दृष्टि क्या होती है, आत्म विचार क्या होता है। तुम सब एक भी बोलो कि मैं आत्म दृष्टि में सारा व्यवहार चलाते हैं। तुम्हारा सब केस सुलझ जायेगा आत्म दृष्टि से। तुमको यह समझ ही नहीं है कि आत्म भावना से व्यवहार चल सकता है। तुम समझते हैं मैं देह से ज़रूर पति हूं, बाप हूं, तो कर्म बनेगा।

प्रेमी : भगवान देह से चलते हैं!

भगवानः आज समझो तो तुम आत्म दृष्टि डालो तो उसमें क्या कमी है,

Contd.2.

पर किसमें यह विश्वास नहीं आता है कि तुम आत्म दृष्टि में मिलाप करते हैं।

**प्रेमी** : व्यंवहार ही नहीं समझा है, तो आत्म दृष्टि क्या समझें?

**भगवान** : आत्म दृष्टि, आत्म विचार, आत्म चिंतन ज़रूरी है। तू जन्म से ही आत्म रूप है। नेष्ठा से भूल गये कि मैं फलाणामल हूं। माँ ने बोला और तुमने Yes किया। तुम अपने को ज्ञानी समझते हैं पर ज्ञानी तो आत्मा, देह तो जड़ है - पत्थर की शिला - वह तुमने नेष्ठा नहीं किया कि जन्म से तू, आत्म रूप है, उस मेले झमेले में तुम भूल गये हैं, गलत व्यंवहार में। तुम फिर बोलते हैं मेरा स्वभाव निकल आता है, मेरा व्यंवहार निकल आता है। ऐसे हो नहीं सकता है।

**प्रेमी** : आत्म दृष्टि के लिए Practice करनी चाहिए?

**भगवान** : Practice क्या है? पहले नेष्ठा हो। आज तू मर्द है, मैं स्त्री हूं,ये तुमको भूलेगा। यह स्त्री की पौशाक मैं नहीं, मर्द की पौशाक मैं नहीं।, You are Mistry।

**प्रेमी** : भगवान पूरा निश्चय है आपसे आत्म दृष्टि लेकर जायेंगे।

**भगवान** : आत्म दृष्ठि रखो पर अपनी देह भी भुलाओ, दूसरे को भी देह करके देखो ही नहीं। ये सब चमार हैं। आत्म घाती जगत कासाई। कासाई बकरा भी देखता है, तलवार भी देखता है, तभी काटता भी है, पर सदना कासाई है वो कहता है तलवार भी आत्मा है, बकरा भी आत्मा है, काटने वाला भी आत्मा है - तो मैंने किसको काटा? ऐक आदमी आया बोला रास्ते में सूअर काट रहे हैं - हमने बोला सूअर किसको बोला? मैंने विश्वास नहीं किया कि सूअर क्या होता है। गधा क्या होता है? चोर, चण्डाल क्या होता है? आत्म दृष्टि से सब एक ही है। अलग-२ तुम व्यंवहार रखते हैं तो अलग-२ दिखाई देता है। आत्म दृष्टि से कोई मेरे से जुदा नहीं है जिसको मैं याद करूं। तुम बोलेंगे भगवान मेरे को याद कर रहें हैं।तेरे को नाना किसको? नाम रूप को? तम जाकर याद करो, मेरे से कोई जुदा है ही नहीं। आत्म दृष्टि है तो जो आता है सब मैं ही है।

*ओम*

आम सतगुरू प्रसाद

*'दादा भगवान का पत्र'*

दुख में धीरज सबसे अच्छा है। बेकार चिंता नहीं करनी चाहिए। आत्माकार को डर और निराशाई कभी नहीं आती। मुंसीबत में मुसकराना सीखो। मन को गिराना नहीं, चाहे दो ही घण्टों में फॉसी पे चढ़ना हो तो भी अपना यह समय खुशी से गुज़ारना चाहिए,शायद फॉसी का हुकुम बदल भी सकता है। हम अपने ख्यालों से बैठकर मुसीबत बनाते हैं। यकीन भी नहीं है कि मुसीबत आएगी, नहीं भी आनी हो,हम ख्याल को गिराकर बैठते हैं तो अपने आप मुसीबतो में आते हैं। उंधें(उल्टे) ख़्याल आते होवे पर उंचे ख्याल करना हमारे वश में है, क्यों न सदा ही सरोह (अच्छे) संकल्प करे। ये आदत बना दो। बुरा चाहे अच्छा ख्याल करना हमारे हाथ में है। पर आत्मा का निश्चय जभी नहीं है मन में बुरे ख्याल आ जाते हैं "Don't think with your mind, surrender unto God"

प्रारब्ध से तो कोई नहीं भाग सकता, जो हाना है वह तो अवश्य होगा। हम ख्याल करके कहते हैं "शल ऐसा न होवे, ऐसा होवे"। सदा ही अपनी मर्ज़ी मुताबिक कुछ होता नही है, ना ही फिर अनहोनी होती है। हिम्मत रखो तो परमात्मा सदा ही तुम्हारे साथ है। "The only thing we have to fear is fear itself" डर लगना ही डर का कारण है। चिंता और डर निकालके अशोक रहो। मुसीबत का मुकाबला हिम्मत से करो पर इन्तज़ार, चिंता या डर कभी नहीं करो। सच पर साहिब राज़ी है। भगवान मददगार है, सभी को मुसीबत के समय आकर मदद करता है। यह पक्का करो, विश्वास करो, नहीं तो अपनी चलाना नहीं, भगवान के किए पर ना ही नाराज़ होना। "जो तुद भावे साई भली कार"। इच्छा काहे की, चिंता काहे की, कल की चिंता आज मत करो। आज का दिन खुशी से गुजार, हिम्मत से गुज़ार।निराश होना नाउम्मीद होना, नास्तिक होना है। दिल रख दरगाहे हुजूर, मन खपा रखोगे तो बीमार हो जाओगे। जीना हो तो हिम्मत से, आनंद से। इतना खुद को व्यस्त रखो लिखने पढ़ने में भगवान के ज्ञान में जो चिंता करने का समय ही नहीं मिले। खाली बैठने वाले को मन सताता है, बुरे ख्याल आते है, निरासायें आती है। पहले ही खबरदार हो जाओ।क्या नाहीं दर तेरे। भगवान ने

Contd.2.

सदा ही सहायता की है। यह हमने सुना है,सुनते ही आते हैं "अंधकार में रोशनी देखो"गमी और फिक्र के समय खुशी मनाये। भगवान के गुण गाये, बेईमान नहीं बने, मन जो कुछ कहे उसे नाकार करे ऐसे वैसे नहीं होगा, ऐसा जवाब मन को दिया करो, हज़ार बार मन ने डराया होगा पर हुआ तो कुछ नहीं, फिर आज क्यों डरें? ये राग पक्का करो मन डराता है, पर होता तो कुछ भी नहीं, फिर आज उसकी क्यों मानुं, क्यों डरूं? तुफान भी जितने समय के लिए आया, फिर शांत हो गया, फिर आखिर तो सब गुज़र जाता है। मुश्किल वक्त आता है तो अक्ल भी उस वक्त आ जाती है। भगवान सदा ही हमारे साथ है, सिर्फ निश्चय की कमी है। विश्वास रखो इसके पहले भी कितनी मुश्किलातें आई और चली भी गई। बादल काले छाये और फिर कैसे बिखर गये। प्रारब्ध अनुसार मेरे दुःख सुख मेरे को ही भोगने है। दिलगीर न हो, अपने को पूछो तो क्या होगा ज्यादा से ज्यादा, मौत, वह तो शरीर को होगा ना - मैं तो अजर अमर आत्मा हूं।

खौफ और चिंता में वो रहे जिसका धणी साईं (खासम,गुसाईं) न हो, पर तू तो भाग्यवान है, जो सर्व शक्तिमान प्रभू तुम्हारा हो चुका है।

*ओम*

के घर सदा आनन्द, सब मन का भ्रम है।

**प्रेमी** : भगवान, मुक्ति के मार्ग में संग दोष रूकावट डालता है?

**भगवान** : नहीं नहीं, ये तुमने संग कीया है तो दोष आता है, मैंने किसी से संग नहीं कीया है तो दोष नहीं आता है। तुम संग करते हैं फिर मुक्ति चाहते हैं। जो मुक्ति चाहिता है,किसका Connection नहीं रखता है, अपने साथ ऐसे भगवान करके देखता है, भगवान की अमानत है, सब ठीक है।

**प्रेमी** : भगवान, जब चित्त न चाहिता है, ना सोचता है, ना त्याग करता है, तो ना दुखी ना प्रसन्न होता है, क्या ये मोक्ष की अवस्थ है?

**भगवान** : जो मुक्ति में, आत्मा में टिक गया, उसको न चाहना है न सोचना है, इसीलिए पूरी न होवे इच्छा तो दुखी सुखी भी नहीं होता है, ऐसे निश्चय में पक्का है।

मनुष्य जन्म मुक्ति के लिए है, Time गंवाने के लिए नहीं है। "सदा न संग सहेलियां सदा न काला केस....."। राजा भी सदा दे लिए नहीं है, सदा के लिए सिर्फ ज्ञान यज्ञ है। आदमी शरीर छोड़ता है तो क्या लेके जायेगा, ज्ञान ही लेकर जायेगा। जिसको ज्ञान है वो मुक्त है। मैंने कीया ये नहीं। सत् कर्म का फल भी शान्ती नहीं देगा। राजा परीक्षत बोलता है "सांप आए पर काटे नहीं, माना मैं मरूं नहीं, पर मैं मुक्त हो जाउं ज्ञान सुनकर, निश्चय करके।"

**प्रेमी** : भगवान, मुक्ति का यत्न क्यों करें जो पहले से ही मैं आत्मा हूं?

**भगवान** : वो तुमको पहले से मालूम है कि तेरा निश्चय क्या है। वो एक भगवान ही है। एक निश्चय की जय है। सृष्टि की प्रलय हो जायेगी, पर मेरी प्रलय नहीं होगी। मेरा जन्म दिव्य है, Sex Born नहीं। जो मेरे को Sex Born समझता है, वो पापी है, पुण्य आत्मा नहीं है। कभी किसने ये कहा है कि जड़ भी मैं हूं? मैं ही ये कपड़ा धारण करके आया हूं।व्यापक हूं, सब में हूं, ऐसे अपने को विराट करके दिखाओ। कभी सपने में भी कर्ता नहीं होगा अगर आत्मा याद है। असली स्वरूप याद है तो वो कभी कर्ता नहीं होगा। उसके पास मैं मेरा नहीं है, हमेशा Capital I में बोलेगा। कभी भी द्वैत की बात उससे नहीं निकलेगी, सब कुछ जब मिथ्या

Contd.5.

है तो किस के लिए क्या कहें क्या करें?

गीता अ०४ में भगवान अर्जुन की परीक्षा लेते हैं कि सृष्टि के आदि में मैंने ये ज्ञान सूर्यवंशी राजा मनु को दिया, इक्ष्वाकू को दिया, तो अर्जुन का माथा ही घूम गया कि ये तो कल जेल में जन्म लेके आए और आज सृष्टि की आदि कहते हैं। पर उसको याद है कि पहले भी मैं था, आज भी मैं हूं, कल भी रहूंगा। कई जन्म हमने लिया, कई जन्म सामने वाले ने भी लीया, पर ये जन्म तुम्हारे लेखे है। कई जन्म गंवाए, पर ये मानुष हीरा जन्म तुम्हारे लेखे। मुक्ति के लिये मानुष जन्म है। मच्छी जन्म से तैरती है, पंक्षी जन्म से उड़ता है, तो मच्छी को या पंक्षी को कोई सिखाता है क्या? ऐसे ही मैं भी मुक्त हूं, ये ही साधना है, Self को जानना।

प्रेमी : भगवान, इस देह से मुक्त करें।

भगवान :देह होवे तो मुक्त करूं ना।तू Already आत्मा मुक्त है।प्राप्त आत्मा को हम अप्राप्त मानके बैठे हैं, बन्धन मानके बैठे हैं कि मैं मुक्त नहीं हूं। मुक्त कब होउंगा? तू बोलेगा मेरे को बहुत विकार है। विकार तेरा शरीर में है, Not आत्मा में। शरीर का विकार हमको छोड़ने का है, मैं किधर बनूं न, इस Body से न बनूं। इस Body से एक शब्द न बोलूं। Body Conciousness must go. Body में नहीं जाने का है, नहीं तो हमारा स्वभाव निकलेगा। यह पक्की बात करो आज, जो मेरे में देह अध्यास है तो कितना भी वश करूं, गुस्सा नहीं करूंगा, इच्छा नहीं करूगा, मोह नहीं करूंगा, पर न चाहते हुए भी हो जाएगा, क्यों कि देह अध्यास पक्का है कि मैं फलाणा हूं, Mr., Mrs. हूं पर I am Mistry, माना गुजारत, जो किसी के भी अक्ल में नहीं आती है। ये अक्ल वालों का काम नहीं है। गुरूनानक ने कुछ भी नहीं पढ़ा था, अलफ बोला फिर नहीं बोला। "अलफ पढ़ अलख का दूसरे देह विसार"अलफ पढ़ो भगवान का फिर दूसरे सब शब्द भुला दो। ये अलफ का एक अलख पढ़ना पर पन्ना पोथी नहीं। पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ......। पोथी पढ़कर देह अध्यास पक्का होगा, तुम समझो जो पाठ करता है वह दूसरे के लिये बोलता है, यह पाठ नहीं करता। मैं चार बजे उठता हूं,ये छे बजे उठता है, तुमको सब याद है,'मैं एसा करता हूं,वह ऐसा नहीं करता है। तुम्हें याद है मैं